

डॉ. नायायणदत्त श्रीमाली

स्कॉर-शाकि

५०



COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By

Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server

प्रकाशक

कुसुम प्रकाशन

१७, शिवचरन नाल रोड

इलाहाबाद-३

२८
दो शब्द

© नारायणदत्त श्रीमाली

१९७५

Stotra Shakti

by

Narayan Datt Shrimali

१९७५ (प्रथम संस्करण)

स्तोत्र शवित

लेखक

नारायणदत्त श्रीमाली

मूल्य तीन हज़े

स्तोत्र-शक्ति विश्व को सर्वधोष दाता है, जिसके माध्यम से
—यदि अद्वा, विश्वास एवं पूर्ण-निष्ठा ही तो—प्रसन्नता को भी
संभव किया जा सकता है, आज का व्यक्ति नटिल उलझनों में उलझ
गया है, दिशा शन्य ही गया है, अपने सही रास्ते से भटक गया
है, अविश्वास के गहन घंघकार में दिर्घमित सा चक्कर काट
रहा है, प्रावश्यकता है, उसके विश्वास को पुनः स्थापित करने
को, सही रास्ता दिखाने को, और अपने लक्ष्य को ओर बढ़ाने को,
यह पुस्तक इस क्षेत्र में निःसन्देह वरदान स्वरूप चिढ़ होगी।

इस पुस्तक में अमूल्य स्तोत्र है, उसमें संवेदित घटनाएँ हैं,
सम्मरण है, प्रसाग है। व प्रसाग, जो पढ़ हुए हैं, सुने हुए हैं, प्रसन्नता
किये हुए हैं, अविश्वास और भ्रान्ति के रास्ते पर यह पुस्तक दिये
की तरह टिमटिमा कर भी कसी को सही रास्ता दिखाने में समर्थ
हो सके, तो मैं अपना प्रयास सफल समझूँगा।

सो। एक १४ हाई कोर्ट कोलोनी,
जोधपुर (राजस्थान)

नारायण दत्त श्रीमाली

मंद्रक :

मुकेश जायसवाल, साइंटिकल प्रिटर्स

६५, राय रामचरन दास रोड, इलाहाबाद-२

प्रवेश

विषय-सूची

स्तोत्र-शक्ति	१
गणेश स्तोत्र	१६
राम रक्षा स्तोत्र	२७
गजेन्द्र मोक्ष	४२
नारायण कवच	५७
सुदर्शन कवच	६९
बगला मुखी कवच	८०
सौभाग्याष्टोत्तर शतनाम स्तोत्र	८७
सुन्दर काण्ड	९४
अमोघ शिव कवच	१२०
धी सूक्त	१३१
नवग्रह स्तोत्र	१३५
गोपाल हृदय स्तोत्र	१४४
मृत संजीवन कवच	१४५
बजरंग वाण	१४७

मानव जीवन संघर्ष का जीवन है। जिस समय मानव जन्म लेता है उस क्षण से अन्तिम पड़ाव तक वह किसी न किसी के सहारे से ही जीवित रहता है। प्रारम्भ में उसे अपने माता-पिता का आश्रय लेना पड़ता है है, बड़ा होने पर उसे भाइयों, सर्वविद्यों एवं रिस्तेदारों का सहारा लेकर काम-चलाना पड़ता है और वृद्धावस्था में उसे धपने पुत्रों का आश्रय लेकर जीवन-निर्वाह करता पड़ता है। परन्तु ये सब आश्रय क्षणिक हैं, इन सहारों से व्यक्ति अपनी पूर्णता प्राप्त नहीं कर सकता। यद्यपि ये भाँतिक आश्रय कुछ क्षणों के लिये भले ही उसे साहस एवं धौरज दें दें परन्तु फिर भी वह अपने आपको असुरक्षित एवं अपूर्ण ही अनुभव करता रहता है। पूर्णता तो उसे तभी मिलती है, जब वह चारों ओर से निराश होकर ईश्वर की शरण में जाता है, और वह जब पूर्णांहृष्प से अपने आपको ईश्वर के प्रति सम्प्रित कर देता है तब उसे अनिर्वचनीय मुख्य एवं सन्तोष प्राप्त होता है।

मानव की यह कमजोरी है कि वह उच्च सत्ता का आश्रय न लेकर क्षणिक आश्रय में विश्वास करता है। वह अपने मित्रों की तरफ दौड़ता है, भाइयों से सहयोग को याचना करता है, पुत्रों से मदद के लिये उनकी तरफ लाकता है, पर जब उसे यह समझ आ जाती है कि ये सहारे व्यर्थ हैं, इनसे मेरे जीवन की पूर्णता सम्भव नहीं, तभी वह प्रभु की शरण में जाता है। होना तो यह चाहिए कि वह प्रारम्भ से ही अपने आपको इस तरह से तंयार करे कि उसे इन क्षणिक आश्रय में विश्वास ही न रहे प्रभु को सर्वशक्तिमान समझे और जरा भी विपत्ति आने पर उससे प्रार्थना करे।

विश्वास और प्रार्थना का आपस में घनिष्ठ संबंध है। प्रार्थना तभी सफल हो सकती है जब हमें उसके प्रति पूर्ण विश्वास हो। यदि हमें पुत्र के प्रति विश्वास ही नहीं है तो उससे किसी भी प्रकार स्तोत्रशक्ति

की प्राप्तिना केरना कोई अर्थ नहीं रखता।

जीवन में प्राप्तिना ही सबसे मुख्य आधार है परन्तु इसके लिये यह ज़रूरी है कि हम जो प्राप्तिना करें वह हमारे लिये विश्वास पर आधारित हो। जब तक किसी कार्य में हमारा पूर्ण विश्वास नहीं होगा। तब तक उस कार्य में जीवन्ता नहीं आ सकती। इस प्रकार से देखा जाय तो विश्वास और प्राप्तिना पर्यायिकाची शब्द है।

अमेरिका में फिल्मोर दम्पति प्राप्तिना के प्रतीक माने जाते हैं। उन्होंने अपने जीवन में अपने कार्यों से यह सिद्ध कर दिया है कि यदि महो विश्वास से प्राप्तिना को जाय तो असंभव कार्य को भी संभव किया जा सकता है। उन्होंने जीवन में जो कुछ भी किया, विश्वास और प्राप्तिना के द्वारा ही किया। विश्वास और प्राप्तिना के द्वारा उन्होंने रोगियों का रोग मुक्ति किया, दुखियों को आराम दिया, कठिनाइयों पर विजय पाई तथा वह सब कुछ प्राप्त किया जिसकी की जीवन में आवश्यकता होती है।

अमेरिक के चाल्स फिल्मोर ६४ वर्ष तक जीवित रहे और इन वर्षों में लगभग ६२ वर्ष प्राप्तिना में विताए। उनका एक ही उद्देश्य था कि प्राप्तिना और स्तुति के द्वारा अपनी आध्यात्मिक शक्ति को जागृत करना और इस शक्ति को विकसित कर सकार को मुख्य बनाना। दिन रात के कई घण्टे प्रभु के चरणों में ही व्यतीत होते थे। अपनी जो भी कठिनाई होती, अथवा जो भी आवश्यकता होती उसे लिखकर प्रभु के चरणों में रख देते और प्राप्तिना के द्वारा उनका वह कार्य स्वतः ही हो जाता।

विश्वास उनके जीवन का अवलम्बन था। एक उदाहरण ही पर्याप्त होगा। उन्होंने एक विद्यालय खोला था जिसमें अपने और नियन्त बालक विज्ञा प्राप्त करते थे। उनके विद्यालय में लगभग ३०० छात्र थे। छात्रों के रहने, भोजन तथा अन्य आवश्यकताओं को पूर्ति फिल्मोर दम्पति ही करते थे। प्राप्ति सभी बालक उठ कर देनिक नित्य प्रक्रिया से निवत होकर प्राप्तिना सभा में जाते और लगभग दो घण्टे तक प्राप्तिना होता। प्राप्तिना के पश्चात हस्त-कला का कार्य होता और दिन के ठीक ११ बजे उन्हें भोजन प्राप्त होता। फिल्मोर दम्पति समय के पावन थे, एक मिनट का भी विलम्ब उनकी प्रकृति के अनुकूल नहीं था।

स्तोत्र-शक्ति

एक दिन प्रातःकाल लगभग नीं बजे विद्यालय के मैनेजर ने देखा कि बच्चों के भोजन के लिये कुछ भी व्यवस्था नहीं है। न आटा है और न धन्य मामग्री। वह बड़ा चिन्तित हुआ। कौप में पैसा भी नहीं था। उनने डरने-इरते लगभग १० बजे फिल्मोर को सूचित किया। फिल्मोर उस समय प्राप्तिना में बैठे थे, बोले नहीं। लगभग सबा दश बजे मैनेजर ने पुनः प्राप्तिना की कि आज बच्चों के भोजन के लिये कोई व्यवस्था नहीं है, फिल्मोर ने उन्हें अपनी समस्या लिखकर लाने के लिये कहा। लगभग साढ़े दस बजे मैनेजर पुनः प्राप्तिना पत्र लेकर फिल्मोर के पास पहुँचा जिसमें लिखा है कि आज ग्यारह बजे का भोजन बालकों को दिया जाना संभव न होगा क्योंकि किसी भी प्रकार का राशन स्टाक में नहीं है।

फिल्मोर ने वह प्राप्तिना पत्र लेकर प्रभु के चरणों में रख दिया और कहा—तुम योर हम कौन होते हैं जो बालकों को भोजन करा सके, बालकों के भोजन को व्यवस्था ईश्वर करता है योर उसे चिन्ता है। समय पर वह कोई न कोई प्रबन्ध प्रबश्य कर देगा।

मैनेजर अविश्वास से हँका सा मुस्कराया और पूछा तो क्या ग्यारह बजे भोजन की घण्टो लगते हूँ।

फिल्मोर ने कहा—घबश्य! यदि बालक नित्य ग्यारह बजे ही भोजन करते हैं तो आज भी ग्यारह बजे ही भोजन करेगे इसमें पूछने की ज्या बात है।

ग्यारह बजने में दस मिनट बाकी रह गये, तो मैनेजर पुनः फिल्मोर के कामरे में आया और पूछा ग्यारह बजने में मात्र दस मिनट बाकी है और मसो तक भेरो नजर में कोई अवस्था नहीं हो पाई है क्या किया जाय?

फिल्मोर ने एक क्षण मैनेजर की तरफ देखा और फिर कहा: तुम्हे ग्यारह बजे भोजन को घण्टी लगा देनी है, क्या करना है और क्या नहीं करना, मह ईश्वर बाने?

मैनेजर अविश्वास से हँसा और लौटकर चला गया। उसने ठीक ग्यारह बजे भोजन की घण्टी लगा दी। बच्चे अपने कमरों से घालियों ले लेकर भोजन कक्ष में जाने लगे और पक्कित बढ़ बैठने

स्तोत्र-शक्ति

लगे। फिल्मोर अभी तक अपने प्रायंता कक्ष में ही थे। मैनेजर के बेहरे पर पसीना आने लगा कि फिल्मोर अभी तक निकले नहीं हैं और उन बच्चों को मैं क्या परोसूँगा? समझते फिल्मोर ना दिमाग खराब हो गया है।

उन्हीं उसने देखा कि दरवाजे पर एक गाड़ी आकर रुकी है, और उसमें से दो व्यक्ति कुछ टोकरे नीचे उतार रहे हैं। उन बच्चियों में से एक व्यक्ति मैनेजर के पास आकर बोला यह भोजन मिस्टर हेमवृंगे ने भेजा है उन्होंने आज एक विद्यालय पाठी दी थी और उस पाठी में काफी खाद्यान बच गया था। अतः यह बाकी खाद्यान उनकी आज्ञा से फिल्मोर विद्यालय के बालकों के लिये लाया है।

उन व्यक्तियों ने टोकरों में से भिठाई, पूड़ी, साग, इत्यादि खाद्य पदार्थ निकाले और व्यवस्थापक ने बच्चों में वितरित करता शुरू कर दिया। समय पर बच्चों ने भोजन कर लिया, उसके बाद भी काफी खाद्यान बचा रहा।

दोपहर के पांच बजे फिल्मोर ने मैनेजर को अपने कक्ष में बढ़ाया और पुछा क्या बालकों ने खारह बजे का भोजन कर लिया है? मैनेजर ने हाँ भी तो फिल्मोर ने मैनेजर को कहा— घब भेरे विद्यालय को आपकी आवश्यकता नहीं। आप अपना हिसाब आज ही ले लीजिये, जिस व्यक्ति को ईश्वर में विश्वास नहीं है, उनको आवश्यकता भेरे विद्यालय में नहीं है।

यह घटना उनके जीवन की सच्ची घटना है और इस प्रकार की कई घटनाएं उनके जीवन में घटित हुई हैं जबकि प्रायंता और विश्वास के बल पर उन्होंने सभी असभव कायं सभव कर दिलाये हैं। उनका कहना था ईश्वर से मिलने के लिये विधि विद्यान पालण्ड मा अन्य सामग्री की आवश्यकता नहीं है। जिस प्रकार एक पुत्र अपने पिता के पास सहज रूप से जाता है। उसी प्रकार हमें भी निःसकोन्च और सहज स्वप्न से ईश्वर के पास पहुँचना चाहिए। तुम अपने आपको ईश्वर पर जितना आश्रित करोगे उतना ही आदा तुम्हारा कल्पणा होगा। यदि तुमको वस्त्र की, मकान की, विद्या की अपवाह अन्य किसी प्रकार की कोई आवश्यकता है तुम अपनी समस्या लेकर तुरन्त ईश्वर के पास पहुँच जाओ मन में

स्तोत्र-शक्ति

किसी प्रकार की हिचक, संकोच और लिङ्गक रखने की आवश्यकता नहीं।

उनकी मान्यता थी कि ईश्वर संपूर्ण मदगुणों के भण्डार है। वे साहस, शक्ति और सौन्दर्य के आगार हैं। हम ईश्वर को सन्तान हैं, यह ईश्वर की प्रत्येक वस्तु पर हमारा अधिकार है, हमारे पास वही शक्ति, सौन्दर्य और स्वास्थ्य होना आवश्यक है जो ईश्वर के पास है। यदि ये बस्तुएं हमारे पास नहीं हैं तो ईश्वर का तात्पर्य है कि हमारा ईश्वर से सम्पर्क ढूँट गया है, हम उनसे अपने संपर्क को खो बैठे हैं, हम अभावप्रस्त बयों हैं? भूते और परेशान बयों हैं? रोग हमारे पास आये ही बयों? जब हम ईश्वर के हैं तो ईश्वर इनमें से किसी भी प्रकार का अभाव हमारे जीवन में नहीं रख सकता। यदि हमारे पास मुन्दरता की कमी है तो हमें चाहिए कि हम ईश्वर के सौन्दर्य पर पूर्ण विश्वास करें, यदि हमारे पास धन का अभाव है तो हम प्रमुके अवलोकन भण्डार पर विश्वास रखें, उनसे प्रायंता के द्वारा सम्पर्क स्थापित करें और जब सम्पर्क स्थापित हो जायगा तब जीवन में किसी प्रकार का अभाव रह ही नहीं सकता।

श्रीमती फिल्मोर का अत्यधिक प्रभाव चालने फिल्मोर पर पड़ा। श्रीमती फिल्मोर प्रारम्भ में अत्यधिक बीमार रहती थी। ५१ वर्ष की आय में ही वह जबरं और कुशकाय हो गई थी, उनका सन्द्रुक द्वाइयों से भरा रहता था, डाक्टरों को मन में नहीं आ रहा था कि श्रीमती मटिल फिल्मोर का इलाज किस प्रकार किया जाय? रोग का सूच ही उन्हें समझ में नहीं आ रहा था। कुछ लोगों ने हवा-पानी बदलने की राय दी, कुछ ने अन्य उपाय सुझाये, पर इनसे किसी प्रकार का कोई लाभ मटिल फिल्मोर को नहीं हुआ।

एक दिन एक मित्र ने सूचना दी कि आज पास के मेदान में एक सत का भाषण होने वाला है, आप दोनों को भी चलना चाहिए। श्रीमती फिल्मोर ने कहा मैं मरने के करीब हूँ, मेरा मन उदास है, मैं अस्वस्थ हूँ, मैं जीवन में कभी भी स्वस्थ नहीं हो सकूँगी। मेरा सारा जीवन, मेरा एक लंग भार स्वस्थ है, पादि आदि..... पर फिल्मोर के आग्रह पर वह भाषण सुनने के लिये तैयार हो गई। दोनों जब भाषण सुनकर लौट रहे थे तो उन्हें

स्तोत्र-शक्ति

५

जीवन के बारे में एक नवोन विचार प्राप्त हुआ। उनके तन और मन दोनों को नया आरोग्य मिला, संत के भाषण की उन पर अच्छी प्रतिक्रिया हुई, उन्हे एक विचार मिला, एक प्रकाश मिला, एक नया सम्बल मिला। यही नहीं अपितु भावी जीवन के लिये उन्हें एक साधार मिला। भाषण से लौटने के बाद श्रीमती फिल्मोर ने सोचा यह मेरा शरीर ईश्वर का है, इसे नष्ट करने का क्या अधिकार है? मैं अस्वस्थ हूँ इसका एक कारण यह है कि मेरा सम्पक ईश्वर से टूट गया है। ईश्वर जब इतना सुन्दर और स्वस्थ है तो हम उनकी सन्तान स्वस्थ कैसे रह सकती है? मैं ईश्वर की मन्त्रान हूँ। अतः मेरे में कोई रोग नहीं हो सकता..... उनका मन बारम्बार इसी विचार की आवृति करने लगा, यह आवृति एक प्रकार से नई चिनगारी थी जो उसके हृदय में बैठ गई। दूसरे दिन का प्रभात उसके लिये वरदान स्वरूप था। उसे अपने मन में एक नया उल्लास एक नया आनन्द अनभव होने लगा, वह एक कमरे में बैठ गई, और अपने आपको पूर्ण रूप से ईश्वर के चरणों में समर्पित कर दिया, निश्चल रूप से, निर्णय भाव से।

इस विश्वास से श्रीमती मट्टिल का सारा जीवन ही बदल गया। यह विश्वास उनके हृदय में शरीर के एक-एक कण में व्याप्त होने लगा। परमेश्वर की प्रार्थना में उसका विश्वास प्रबलतम हो गया। इस विश्वास और नित्य प्रार्थना का चमत्कारी फल यह हुआ कि ढङ्ग वर्ष के भीतर-भीतर वह पूर्णतः स्वस्थ हो गई। उसके शरीर में रोग नाम की कोई वस्तु नहीं रही। उसका सन्दूक जो दवाओं से भरा रहता था, खाली हो गया। जब रोग चला गया तो उनके हृदय का भय भी समाप्त हो गया शरीर में नया निखार आया, जेहरे पर स्वास्थ्य की छाप प्रत्यक्ष दिखाई देने लगी, डाक्टरों के अनुसार यह एक चमत्कार ही था मगर यह चमत्कार प्रार्थना से भी अनभव हो सकता है। इसे मानने के लिये वे तैयार नहीं थे। क्योंकि उनके पूरे चिकित्सा विज्ञान में ईश्वर नाम की कोई वस्तु नहीं थी, पर श्रीमती फिल्मोर इसका उदाहरण थी। उसने पिछले डंड वर्ष में दवा की एक छोटी सी टिकिया तक न ली थी, और इस सभय वह जितनी स्वस्थ और निर्मल थी वैसा उसे स्वप्न में भी अनुमान नहीं था। इसके बाद तो इन पति-पत्नी का जीवन

स्तोत्र-शक्ति

प्रार्थना और विश्वास में ही व्यतीत हुआ। हजारों व्यक्तियों की इन्होंने लेता की यांत्र संबंधी लोगों को कप्टों में छुटकारा दिलाया।

ओ फिल्मोर का एक पड़ोसी या विसका नाम केस्टे का, वह पर्ग था। इस समय उसकी अवस्था लगभग ४५ वर्ष की थी पर जब वह मात्र १८ वर्ष का था तभी लकड़े के बारण उसके दानों पांव अपने हो गए थे, जलना उसके लिये चरमभय था, एक गाड़ी पर बैठकर ही वह ईधर-उधर जा सकता था, ससार का वास्तविक सौन्दर्य, दास्ताविक मुख पाने से वह बचित था।

एक दिन जब श्रीमती फिल्मोर उसके घर गई तो उसने केस्टे से कहा—तुम प्रार्थना क्यों नहीं करते? निष्ठव्य ही प्रार्थना से तुम स्वस्थ हो सकोगे और अपने पैरों से चल सकोगे। श्रीमती फिल्मोर ने कहा हम ईश्वर की मन्त्रान हैं, ईश्वर स्वस्थ है तो हम अस्वस्थ रह ही नहीं सकते। ईश्वर ने हमें अस्वस्थ रहने के लिये नहीं भेजा है। धीरे-धीरे केस्टे के दिमाग में विश्वास जमने लगा और उसने तथा श्रीमती फिल्मोर ने सामूहिक रूप से प्रार्थना करनी प्रारम्भ की। उन दोनों ने लगभग ३० महीने के बाद ही देखा कि केस्टे के पांवों में हरकत होनी प्रारम्भ हो गई है और अपने चार महीनों में केस्टे अपने पांवों से साधारण व्यक्ति की तरह चलने लगा। यह प्रार्थना का एक प्रत्यक्ष चमत्कार था। लालों अमेरिकी वासियों ने इस घटना को देखा। डाक्टरों ने केस्टे के बारे में कह दिया था कि यह व्यक्ति इस जीवन में अपने पैरों से चल नहीं सकेगा, उन्हें लिये यह महान आश्चर्य था, और उन यति विद्वान्सियों ने भी महसूस किया कि वास्तव में विश्वास और प्रार्थना से अविश्वसनीय घटनाएँ घटित हो सकती हैं।

धीरे-धीरे श्रीमती मट्टिल फिल्मोर तथा चाल्स फिल्मोर की रूपाति फैलने लगी। उनकी प्रार्थना सभाओं में ऊचे सभाज के व्यक्ति भी आने लगे, और इस प्रकार उन भौतिक सम्भता से यस्ते लोगों के दिनों में ईश्वर के प्रति आस्था और विश्वास पैदा करने में चालस दम्पति नफल हुए।

चाल्स फिल्मोर स्वयं एक पेर से लगड़े थे और एक सफल व्यवसायी थे। उन्होंने श्रीमती फिल्मोर के कार्यकलापों को देखा स्लोत्र-वाक्ति

और उन्होंने इसका प्रयोग अपने ऊपर करने का निश्चय किया। वे प्रतिदिन ४ से ६ घण्टे तक प्राथंना सभा में बैठते और अपना पूरा ध्यान अपने किसी एक अंग की ओर लगाकर उस अंग के स्वास्थ लाभ के लिये ईश्वर से प्रार्थना करते। थीरे-थीरे शरीर के विभिन्न अंगों पर उनका अधिक से अधिक नियंत्रण होने लगा। साथ ही उनके विश्वास और प्रार्थना से शरीर भी स्वस्थ होने लगा। और लोगों ने एक दिन देखा कि १८ अंगों के बाद एक बार पुनः बाल्स फिल्मोर अपने पैरों से चलने में समर्थ हो सके हैं। उनका जो नकलों पैर लगाया गया था, वह भी हड़ा दिया गया और वे एक स्वस्थ अपनिकी की तरह चलने लगे।

इन दोनों ने जब प्रार्थना का इस प्रकार प्रभाव और महत्व देखा तो ये अपने घर में ही नित्य प्रार्थना-सभा आयोजित करने लगे। उनका विश्वास था कि हम ईश्वर के हैं, ईश्वर हमारा अवश्य ही ध्यान रखेगा, उनका विश्वास था कि क्या मानव और क्या इतर प्राणी सभी उस परम पिता परमात्मा की पवित्र सन्तान है। प्रतः जो भी सच्चे मन से ईश्वर को स्मरण करता है। उसकी प्रार्थना कभी भी निष्कल नहीं जाती।

ओमती मटिन फिल्मोर ने शान्त प्रार्थना करनी भी आरम्भ की। साथ ही चाहे किसी भी देश, जाति, वर्ण या रंग का हो अथवा किसी भी धर्म को मानने वाला हो थीमती फिल्मोर के हृदय में सभी के लिए एक सा ही भाव रहता। उनके इस शान्त प्रार्थना में सभी धर्मों के नाम सम्मिलित होते थे, समय-समय पर उन्होंने साधना कक्षाएँ भी चलाई और इस प्रकार अमेरिका में फिल्मोर इमारति ने जो आध्यात्मिक ज्योति जलाई वह आज भी अक्षण है।

प्रार्थना से सभी कांय महज ही सिद्ध हो सकते हैं, प्रार्थना के माध्यम से चिकित्सा करने वाले केनेडा निवासी अल्बर्ट डॉ बिलक का प्रभाव है कि चिकित्सा कार्य में प्रार्थना से अत्यधिक प्रभाव पहुंचता है, हम जो कांय औषधि से नहीं कर सकते उससे कई गुना अच्छा कांय प्रार्थना के माध्यम से कर सकत है।

अमेरिका में एक पुस्तक प्रकाशित है जिसका नाम है "टीच अमेरिका प्रे" इस पुस्तक में किस प्रकार से प्रार्थना की जानी चाहिए

इसका विस्तृत वर्णन है। इसमें लेखक ने लिखा है कि चिकित्सक और दीमार दोनों की इस बात से मद मान्यता और विश्वास होना चाहिए कि प्रार्थना से हम अपने पर्यावर को मुक्त बना सकते हैं। आगे यह लाभ के लिये किसी पुस्तक या पाठ्यक्रम को आवश्यकता नहीं है, यावद्यक्ता इस बात की है कि डमारा हृदय तिक्कारट और पवित्र हो, तथा हम निवृत्त हृदय से प्रभु की स्वरूप कर सके। प्रार्थना का प्रभाव उसी अपनिकी के लिये समझत है जो दीमारों को भी ईश्वर का बरदान समझता है।

प्रसिद्ध पाठ्यक्रम चिकित्सक हीलर अल्बर्ट ने हजारों लोगों पर परोक्षण करके यह सिद्ध किया कि हृषित एवं ध्यानव्यक्ति भाजन से इतना अधिक प्रभाव नहीं पहुंचा जितना हृषित मनोवृत्ति एवं कृत्स्ना विचारों से पहुंचता है। प्रार्थना के माध्यम से उन्होंने हजारों लोगों के रोगों का निदान किया था। अल्बर्ट बिलक ने अपनों प्रसिद्ध पुस्तक 'प्रे' में एक उदाहरण देते हुए बताया है कि एक महिला अपने इकलौते पुत्र की दीमारों से धर्मविक पोषित एवं चिन्तित थी, उसकी चिकित्सा पर उसने पानों की तरह पैसा बहाया और संकड़ों चिकित्सकों के पान गई पर बच्चे ने स्त्रियि दिनों दिन चिगड़ती ही चली गई, जिस समय वह अपने बच्चे को लेकर मेरे पास आई उस समय बच्चा धर्मविक स्थण तथा कन्यों हो गया था, वह बड़ी उड़िग्न थी और यह आवंका उसे विश्वास दिये जा रही थी कि येरा पुत्र अब ठोक नहीं हो सकेगा। मैंने उसे बिठाया, पहले इथर-उपर की बातें की, फिर उसके हृदय में ईश्वर के प्रति विश्वास पैदा किया और जब उसके हृदय में ईश्वर के प्रति विश्वास मुक्त हो गया तो मैंने उससे कहा आपो हम बच दोनों इस बच्चे के स्वास्थ्य लाभ के लिये ईश्वर से प्रार्थना करें, हम दोनों ने वहीं बैठकर शुद्ध एवं सान्त्विक रूप से प्रभु को स्मरण किया और बच्चे के स्वास्थ्य लाभ के लिये प्रार्थना की। हमें यह देखकर अत्यन्त आश्चर्य हुआ कि सुन्त और बेजान तो बालक स्वस्थ होने लगा। उसने धांखे लानी और कई दिनों के बाद पहली बार दूध मिला, उसके बाद हम नित्य केवल पन्द्रह मिनट के लिये उस बच्चे को स्वास्थ्य कामना के लिये प्रार्थना करते और मात्र पन्द्रह दिन में हो वह इतना स्वस्थ हो गया कि आखानी स्तोत्र-अपनि

से चलने किरने लगा। अन्य चिकित्सकों तथा डाक्टरों के दल को यह विश्वास नहीं हो रहा था कि मात्र प्रार्थना से इतना आश्चर्य-जनक परिवर्तन हो सकता है।

गठिया भयकर रोग होता है, चिकित्सकों के अनुसार यह रोग जन की शशान्ति और परेशानी के कारण होता है। जिस व्यक्ति के जित में अत्यधिक चिन्ता होगी उसे गठिया रोग शब्द ही हो जायेगा। चिकित्सक मिस्टर बीयर्ड ने बताया है कि मैंने अपने जीवन में दो हजार से अधिक लोगों के गठिया रोग का निदान एवं उपचार प्रार्थना के माध्यम से किया है और इसमें मैंने पूर्णतः सफलता प्राप्त की है। प्रसिद्ध न्यायाधीश लीवर वेन्डल ने अपने संस्मरणों में लिखा है कि मनूष्य जितना ज्यादा धन के पीछे उलझता है, हृदय रोग उसे उतने ही ज्यादा होते हैं। यदि व्यक्ति नित्य प्रातः केवल पन्द्रह से पच्चीस मिनट तक समस्त चिन्ताओं को छोड़ अपने स्वास्थ्य के लिये ईश्वर से प्रार्थना करे तो उसे जीवन में कभी भी हृदय रोग नहीं हो सकता, और न किसी प्रकार को व्याधि से ग्रस्त होकर परेशान हो रह सकता है, क्योंकि जहाँ तक मेरा अनुभव है हृदय रोग की अमूल्य आपूर्वि विश्वास और प्रभु की प्रार्थना है।

इसी प्रकार रक्त-चाप, मधुमेह, कंसर आदि भयकर वीभारियों मात्र मानसिक चिन्ताओं से होती है। हम ज्यों-ज्यों भौतिक सुखों में उलझते जाते हैं त्यों-त्यों उन वीभारियों को भी पालते जाते हैं, क्योंकि हमारी चौबीस घण्टों का चिन्तन मात्र भौतिक सुख रह गया है, और इसीलिये हमारा जन, मस्तिष्क एवं विचार ईश्वर से दूर हटते जा रहे हैं। इसके लिये आवश्यकता है कि हम इन चौबीस घण्टों में केवल आधा घण्टा इन सबसे मुक्त होकर प्रभु के चरणों में चित लगायें और उनसे अपनी परेशानियों कहें, तो काई कारण नहीं कि हम अपनों भौतिक समस्याओं से मरित पा सकें। पाश्चात्य साधकों और भारतीय साधकों का यह दृढ़ विश्वास रहा है कि प्रार्थना के माध्यम से हम असभव से असभव कार्य को सम्भव कर सकते हैं। उनके साधकों ने इस पर परीक्षण भी किये हैं और उनका यह विश्वास दृढ़ बता है कि रोग मरित, संतान प्राप्ति, शत्रु पराजय, परीक्षा में सफलता, दुष्ट आत्माओं से छुटकारा,

स्तोत्र-शक्ति

१०

मानसिक शान्ति तथा यश सम्मान की प्राप्ति प्रादि कार्य प्रार्थना के माध्यम से हम संभव कर सकते हैं और अपनी समस्याओं से छुटकारा पा सकते हैं।

यहाँ इस बात का यह विशेष व्यान रखना चाहिए कि प्रार्थना शुद्ध हृदय से हो और उस समय अपने प्रातः-वात का बातावरण अर्थात् पवित्र सौम्य और सुरुचिपूर्ण हो। प्रार्थना का तात्पर्य प्रार्थना है, और एक समय में हम केवल एक के लिये ही प्रार्थना कर सकते हैं। अतः प्रार्थना करते समय हम अन्य समस्याओं से मुक्त होकर निश्चल हृदय से ईश्वर के शरण में जायें फिर भले ही यह समय पन्द्रह मिनट का ही हो, हम अपने निश्चय में तथा कार्य में चबैश्य ही सफल हो सकेंगे।

महाभाग्मा मालवीय प्रार्थना में अत्यधिक विश्वास करते थे। एक बार एक महात्मा ने इनसे पूछा कि कोई ऐसा उपाय बताइए कि जिससे कि मेरे जीवन की परेशानियाँ और समस्या भिट जाय।

मालवीय जी ने उत्तर दिया कि ये परेशानियाँ और समस्याएं तुम्हारे जीवन में इसलिये हैं कि तुम अभी तक वाणी से भले ही प्रभु के निकट हो पर जन और आत्मा से उनके निकट नहीं हो, जिस दिन तुम विगलित कठ से प्रभु को स्मरण करोगे और अपने द्वालों से मुक्ति पाने के लिये उससे प्रार्थना करोग तब एक क्षण भी नहीं लगेगा और तुम प्रभु के सत्रिकट पहुँच जाओगे। यह ऐसी स्थिति था जायगी तब तुम में और प्रभु में किसी प्रकार का कोई भंद नहीं रहेगा और इस प्रकार तुम अपनों समस्याओं से मुक्ति पाकर अपने गत्वय स्थल तक पहुँच सकोगे।

महात्मा गांधी का सम्पूर्ण जीवन प्रार्थनामय रहा है। वापू कहते थे कि ईश्वर-प्रार्थना मानव जीवन का अनिवार्य अग है। मनूष्य खाये विना एक सप्ताह या इससे भी अधिक जीवित रह सकता है पर प्रार्थना के बिना वह एक क्षण भी कैसे जीवित रह जाता है इस बात का मुझे आश्चर्य है? जिस दिन उनकी प्रार्थना समय पर नहीं हो पाती उस दिन उन्हें अत्यधिक व्यथा होती।

एक बार रात्रि के समय सोते बता वे प्रार्थना करना भूल गये। वापू का यह नियम था कि वे नित्य सोने से पूर्व प्रभु से अपने अपराधों की कामा माँग लेते थे, उस दिन वे किसी कारणबग्य भूल गये और

स्तोत्र-शक्ति

११

उन्हें नींद था गई। पन्द्रह मिनट बाद जब उनकी धौल लूली तो हडवडाकर उठ चैठे उनका सारा शरीर पसीना-पसीना हो गया। जित में व्यकुलता यड़ गई और वे सोचने लगे कि मैं आज प्रभु को भूल कैसे गया? मुझसे ऐसा क्या अपराध बन गया कि ब्रह्म न मूल भूला दिया, और हाथ पैर धोकर उन्होंने प्रार्थना को और उसके बाद ही मुख की नींद पुनः सो सके।

बुढ़ा ने एशिया में बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय को जो ज्योति जलाई, इसा ने अपने सत्यचरण के द्वारा जो पथ प्रशस्त किया, बापु ने युग की नाड़ी पहचान कर जो दास्ता बताया उस सबके पीछे एक ही ध्येय है और वह है प्रार्थना। ज्योति जितने भी गहापुष्प द्वारा है उनका जीवन निरचय ही प्रभु से सम्पर्कित रहा है और जिस क्षण प्रभु का और उनका आपसों तारतम्य टूट जाता, उस समय वे विकल हो उठते और जब तक विप्रिम वह तार नहीं जड़ जाता तब तक उनके मन को चैन नहीं मिलता। वस्तुतः प्रार्थना मानव जीवन का अमोघ अस्त्र है और विना प्रार्थना के व्यक्ति की तत्त्व शक्य के बराबर है।

प्रार्थना का कोई विवेष अर्थ नहीं है। प्रार्थना का अर्थ प्रार्थना है। किर भले ही यह प्रार्थना किसी भी भाषा और किसी भी राग में गाई जाय, कुछ लोग प्रार्थना कहते हैं कुछ लोग इसे ही नाम-स्मरण अथवा स्तुति भी कहते हैं, इसलिये जाहे हम स्तुति करें या प्रार्थना करें इन सबके पीछे एक ही ध्येय है चौदोस घण्ट हम जो अपने आप में ही केन्द्रित रहते हैं, उससे परे हटकर कुछ लक्षणों के लिये अपना सम्बन्ध परम विराट सत्ता से जोड़े और इस प्रकार हम अपनी समस्याओं को उनके सामने रखें।

प्रसिद्ध संत मोरेश्वर ने अपने अनुभवों का निचोड़ स्पष्ट करते हुए एक बार बताया था कि जब भी कोई समस्या मेरे जीवन में आती थी तो मैं उस समस्या को लिखकर प्रभु के चरणों में रख देता था, उसके बाद मैं शुद्ध होकर प्रभु के सामने बैठ जाता और उसी समस्या को दो तीन बार व्यक्त कर देता, जब मैं प्रार्थना से उठता तब मेरा मानस अत्यन्त हल्का होता और मूले उस समस्या का समाधान प्राप्त हो जाता।

इस प्रकार से परीक्षण कई लोगों ने अपने जीवन में किये।

जब भी कोई ऐसी गत्यों हमारे जीवन में आए, जिसे हम आशानी से न गुलजार सके या कोई ऐसी समस्या या जाय जिससे पार पाना कठिन प्रतीत होता ही तो उस समस्या को या गत्यों को कानगत पर लिखकर ईश्वर के चरणों में रख देना चाहिए, इतना करने से आप अपने कर्तव्य से मुक्त हो जाते हैं, इसके बाये का काम प्रभु का है और वह बतः हैं आपके मानस में कोई ऐसी राह सुझा देता है। जिससे कि आप उस समस्या से मक्तिप्राप्त कर सके।

प्रभु का एक प्रसिद्ध नाम है—“भक्तमोटफलप्रद” इसका अर्थ है कि यदि हम शुद्ध हृदय से भगवान् की प्रार्थना करें तो निश्चय ही भगवान् हमारे अभीष्ट को पूर्ति करता है, इसका मूल कारण यह है कि प्रभु और पुनरप में तात्त्विक दृष्टि से कोई अन्तर नहीं है, दोनों एक ही विराट यत्ता के दो छार हैं, यदि तार के एक किनारे पर विद्युत प्रवाहित की जाय तो इसका करन्ट दूलहे सिरे पर अवश्य ही पहुँच जाता है। इसी प्रकार जब व्यक्ति के सामने कोई परेशानी आती है और परेशानी को भगवान् के सामने रख देता है तो निश्चय ही प्रभु उस समस्या का समाधान प्रस्तुत कर देते हैं, इस प्रकार हम माई हूई विष्पति को टालकर जीवन में आनन्द-भोग बार सकते हैं। जिस बाणी के द्वारा हम आतं कठ से प्रभु को पुकारते हैं वही बाणी प्रार्थना कहलाती है, किर भले ही यह बाणी नद्य में हो या पद्म में, सुलिलत कठ से गाई हूई हो या फटपटी भावनाओं से, इससे कोई फक नहीं पड़ता आवश्यकता इस बात की है कि हम अपनों बात का आतं कठ से प्रभु के सामने पहुँचा दें, जिसमें किसी प्रकार का मेल न हो देष न हो, छल या कपट न हो, और हमारी ऐति बुद्धिवादिता या चालाकी न हो।

मेरी छालों देखी घटना है जंघपुर के एक व्यापारी शक्कर के भाव गिर जाने से दिवालिया स्थिति में आ गए थे, ऐसा प्रतीत हो रहा था कि ये एक दो दिन में ही दिवाली निकालने वाले हैं, इससे पूर्व सेठ जी का ज्यापार अत्यन्त बड़ा-बड़ा था। उनको दूकान की साल दूर-दूर तक फैली हूई थी, उन्होंने बाकी प्रयत्न किया इधर-उधर भाग दौड़ की, परन्तु कोई ऐसा रास्ता न निकल सका कि जिससे दिवालिया होने से बच जाय।

एक दिन जब कलंदारों ने ज़करत से ज्यादा उन्हें परेशान स्तोत्र-शक्ति

किया तो उनकी भास्मा कुठित हो गई, वे पूजा गृह में जाकर प्रभु के सामने गिर गये और उनकी धौखों में धूमुओं की धाराएँ बहते लगी, मुंह से बोल नहीं कट रहे थे, गले में हिचकियों भर गई थीं और किर उन्होंने घोर-घोरे अपनी व्यथा को प्रभु के सामने रख दी तथा कहा कि या तो मुझे मत्यु दे देयथा मुझे सकट से उधार ले।

यह प्रार्थना सच्चे हृदय से की गई थी। इसमें किसी प्रकार का छल नहीं था और न किसी प्रकार का दुराव-छपाव भी था, आश्चर्य की बात यह है कि जब एक घण्टे बाद सेठजी पूजा गृह से बाहर आए तो वस्त्रई निवासी उनके मित्र रामदयालजी उपस्थिति थे, किसी समय सेठजी ने रामदयाल जी के यहाँ नोकरी की थी और उसके बाद एक समय ऐसा भी आया था जब सेठजी ने लगभग डाई लाख रुपया रामदयालजी को उधार दिया था।

मगर इसके बाद कुछ कारणों से आपस में गलत-फहमियों पैदा हो गई थीं। सेठजी ने उन पर डाई लाख के लिये मुकदमा कर दिया था पर वे हाई कोर्ट तक मुकदमा हार गये, और इन प्रकार सेठजी ने निश्चय कर लिया था कि अब यह रुपया भेरे जीवन में वापिस नहीं आ सकेगा।

इधर रामदयालजी बढ़ हो गये थे और एक दिन बैठे-बैठे उनके दिमाग में आया कि यद्यपि मुकदमा हम जीत गए हैं परन्तु यह बात तो स्पष्ट ही है कि उनसे डाई लाख रुपया लिया था और हमने लौटाया नहीं है। अब मेरी अनित्तम अवस्था है, मरने के बाद मैं ईश्वर को मुंह करा दिवाऊंगा? यह विचार आते ही उसी समय डाई लाख रुपये लेकर जोधपुर जाकर सेठजी को देने का निश्चय किया और थमा मीरने का विचार मन में उत्पन्न किया।

जोही सेठ जी पूजा गृह से बाहर निकले, रामदयाल जी ने लपक कर उनके चरण छू लिये। सेठजी ने उन्हें उठाकर अपने गले से लगा लिया और कहा भाई रामदयाल। यह क्या गजब कर रहे हों? तुम थायु में मुझसे बड़े हो? जल्टे चरण छूने का अधिकार तो मुझे मिलना चाहिए, दोनों अपने व्यक्तिगत कक्ष में गये और वही रामदयाल जी ने थैलो में से डाई लाख के नोट निकाल कर उनके सामने रख दिये, और कहा क्यद्यपि मुकदमा मैं जीत गया हूँ पर नीतिकाता को दृष्टि से तुम हमेशा जोते हुए हो। तुम्हारा डाई लाख

मज्जमें बकाया निकलता था, और जब तक डाई लाख तुम्हें नहीं देता। तब तक मेरे मन का किसी प्रकार से शान्ति नहीं मिल सकता। मब कृत्या इन डाई लाख रुपयों का स्वीकार कर मूल लमा कर दे।

प्रभ की महान कृपा का देखकार सेठजी गद्यगद हो गए और उन रुपयों से उन्होंने अपनी दूकान की प्रतिरक्षा बनाये रखी।

आज सेठजी लाखों करोड़ों से बल रह है, पर उस दिन के बाद से आज तक वे प्रभ को भूले नहीं सके हैं। चौबीस वर्षों में एक बार प्रार्थना के माध्यम से प्रभ से धर्मना सम्बन्ध अवश्य जोड़ लेते हैं, और एक दिन बातों ही बातों में सेठजी ने मुझसे कहा था पढ़ित जो! उस दिन के बाद से मैं प्रभ को एक दिन के लिये भी नहीं भूला हूँ, और इस बीच मेरे जीवन में सेकड़ों काठिनाइयों भी प्राई हैं प्रभ ने एक दिन भी मुझे नहीं भूलाया थार वे समस्याएँ अपने आप सुलझती चली गईं।

यह उदाहरण इस बात का साक्षी है कि प्रार्थना में अत्यन्त शक्ति भरी हुई है यदि हम विश्वास के आधार पर प्रार्थना करे तो कोई कारण नहीं कि हम अपने कार्य में सफलता प्राप्त न कर सकें।

प्रार्थना, कवच, स्तुति या स्तोत्र अपने द्वाय में अत्यन्त महत्वपूर्ण है उनमें बदलों का संगृहन हो इस प्रकार जे होता है कि वे अपने द्वाय में एक समर्पित प्रभाव को उत्पन्न करने में सक्षम होती है। सेकड़ों लाखों लोगों द्वारा यह प्रयाण जन्मत है, इसके लिये कोई अन्य विधि विचान या कर्म काण्ड की आवश्यकता नहीं है। किसी प्रकार के बाह्यचार को जल रख नहीं, आवश्यकता केवल इस बात की है कि स्तोत्र या प्रार्थना नियमित रूप से हो, शब्द एवं सात्त्विक रूप से हों, तथा विश्वास का आधार लेकर हा, यदि इस प्रकार से प्रार्थना को जाय तो हमारे जीवन में किसी प्रकार की कोई समस्या रह ही नहीं सकती।

इस पुस्तक में हजारों स्तोत्रों एवं स्तुतियों में से छाँटकर केवल उन स्तोत्रों का ही सकलन किया है जो कि अपने आपमें अद्वितीय हैं एवं कार्य साधन में सहायक हैं। इनका विधि पूरक पाठ करने से मनुष्य अपनी समस्त इच्छाओं को पूर्ति कर सकता है। इसमें कोई सन्देह नहीं।

गणेश

स्मातं पचदेवोपायक होते हैं। ये पाँच देव हैं :—१—
श्री विष्णु, २—श्री लिंग, ३—श्री शक्ति, ४—श्री सूर्य, ५—
श्री गणपति। इनमें से जो मात्र वैष्णव है वे विष्णु को ही मूल्य द्याएं
मानकर पूजा करते हैं, इस प्रकार शैव लिंग को, साक्षं शक्ति को,
सौरं सूर्य को और गणपत्य गणेशजी को मूल्य मानते हैं।

गणेश शब्द का मूल अर्थ है जो 'समस्त जीव जाति के स्वामी' हो। कुछ लोगों का यह कथन है कि ये अन्यायों के देवता थे। और बाद में आयों ने इन्हें पच देवताओं में स्थान दिया परन्तु यह भूमि विदेशियों द्वारा फैलाया हुआ है। हमारी सम्भूति के प्रारम्भ से जिन देवताओं की उपासना होती आई है उनमें गणेश सर्वप्रथम पूजनीय रहे हैं।

गणेश का वर्णन कई स्थानों पर आया है और अनुभवों से यह भिन्न हुआ है कि गणपति की पूजा जीवन में मगलकारी एवं अत्यन्त अनुकूल रहती है। जो व्यक्ति अन्य किसी देवी-देवताओं की पूजा नहीं कर सकता तो उसे गणेश पूजन अवश्य ही करना चाहिए। मेरा व्यक्तिगत अनुभव यह रहा है कि यदि हम निद्य प्राप्त उन्नें समय गणपति का स्मरण करते तो सारा दिन प्रसन्नता में बीतता है, और उस दिन विमेय शुभ फलदायक समाचार मिलते हैं।

बाबा हारिदास जी का मेरे जीवन में विशेष स्थान है, वे प्रबल गणेशोपासक थे। गणपति ही उनका इष्ट वा और गणपति ही की छोटी सौ मूर्ति को वे अपनी आँख की कोर में रखते थे जो कि राई के बराबर बड़ी थी, उन्होंने बताया कि कलियग में शोध्रातिशीघ्र फलदायक देव गणपति होता है। इसीलिये प्रत्येक काय के पूर्व गणपति की पूजा पवध्यात् किया जाता है, वह कायं सिद्ध हो ही नहीं सकत। जिसके प्रारम्भ में गणतपति पूजन न किया गया हो। जिस व्यक्ति

स्तोत्र-शक्ति

१६

की गणपति का इष्ट है आधिक दृष्टि से उसके जीवन में किसी प्रकार की कोई न्यता रह ही नहीं सकती।

प्रागे के पाँचों में मैंने गणपति से सम्बन्धित कुछ स्तोत्र दिये हैं जो कि समिप्त होते हुए भी अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। प्रातः उठकर यदि अवधि इनमें से किसी एक स्तोत्र का पाठ भी कर ले तो उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अनाव नहीं रहता। चिन्ता एवं रोग निवारण के लिये "मूरेश-स्तोत्र" अत्यन्त समय है, यह स्तोत्र मनुष्य को भक्ति मार्ग में लगाने वाला तथा समस्त प्रकार के पापों को नाश करने वाला है। मानसिक रूप से चाहे कितनी ही चिन्ताएं व्यक्ति को परेशान कर रही हों, यदि वह ११ दिन ही प्रातः उठकर "मूरेश स्तोत्र" का पाठ कर ले तो वह स्वयं ही आश्चर्यजनक रूप से अनुभव करेगा कि चिन्ताएं एवं समस्याएं स्वतः ही समाप्त हो रही हैं। और उन समस्याओं का मुक्तवाच मनन अनुकूल ही रहा है। यह शुभ स्तोत्र मानसिक चिन्ता तथा वारोरिक रोग को दूर करने में अत्यधिक सहायक एवं यनकूल है।

मेरे मित्र कई वर्षों से सर्वी-स्वामी जैसे रंग से पोहित थे उन्होंने सैकड़ों इन्द्रेशन लगाये होंगे और न मालूम कितने ही वैद्या की देवाइयाँ सेवन की होंगी परं रोग कुछ इस प्रकार से था कि वह नियंत्रण में ही नहीं आ रहा था, एक दिन जब उसने अपनी व्यथा मेरे सामने प्रकट की तो मैंने उसे "मूरेश-स्तोत्र" का नित्य पाठ करने की सलाह दी। उसने दूसरे ही दिन से मेरे बताये हुए तरोंके से स्तोत्र का पाठ करना शुरू किया, और यह जानकर अत्यन्त अस्वचं प्रहुआ कि वह पुराना रोग मात्र ३० दिन के पाठ से ही समाप्त हो गया और उसके बाद धार लगभग ३ वर्ष बीत गए हैं उस रोग से सम्बन्धित कोई शिकायत उन्हें नहीं है।

मैंने इस स्तोत्र का पाठ करने की सलाह कई रोगियों को दी है और इसका धाराजनक फल प्राप्त हुआ है। कई भव्यकर रोगों में भी इस स्तोत्र ने रामबाण की तरह काम किया है और उन्हें घसाई रोगों से मुक्ति दिलाई है।

नित्य प्रातः स्नान कर शुद्ध रेखामी वस्त्र पहन गणपति की शूति या उसके चित्र के सामने बैठकर अढापूवकं एक बार "मूरेश-स्तोत्र" का पाठ करें और इस प्रकार तब तक करते रहे स्तोत्र-शक्ति

२

१७

जब तक कि वह कायं सिद्ध न हो जाय, निश्चय ही वह प्रपने कायं में सफल होगा इसमें कोई सन्देह नहीं।

संकटनाश के लिये गणपति से संबधित एक अन्य महत्वपूर्ण स्तोत्र 'भक्टनाशन स्तोत्र' है। यह स्तोत्र भी अपने आप में महत्वपूर्ण है, व्यक्ति के जीवन में कितना ही भयकर संकट क्यों न आया हो, यदि इस स्तोत्र का पाठ नित्य अद्वापूर्वक करे तो वह उस संकट से मुक्ति प्राप्त करने में सफल हो जाता है। इस स्तोत्र का प्रभाव मैंने यहाँ तक देखा है कि व्यक्ति जेल से मुक्त हो जाता है तथा मुकदमे में सफलता प्राप्त कर लेता है।

जिन व्यक्तियों पर मुकदमे चल रहे हों, या शश परेशान कर रहे हों तो उस व्यक्ति के लिये यह स्तोत्र कल्प वृक्ष के समान है। उन्हें चाहिए कि इस स्तोत्र का पाठ नित्य पाँच बार करे, और उन्हें तक इस स्तोत्र का पाठ चाल रख जब तक कि उसे प्रपने कायं में सिद्धि प्राप्त न हो जाय, तब विनय, मुकदमे में सफलता तथा वाधाओं की शान्ति के लिये इससे बढ़कर कोई अन्य स्तोत्र नहीं है।

गणेश पुराण में समस्त कामनाओं की सिद्धि के लिये 'गणेशाष्टक' दिया गया है, यह गणेशाष्टक कष्ठि-सिद्धि के लिये तथा व्यापारिक उन्नति के लिये प्रत्यन्त फलप्रद है, जिस व्यक्ति का व्यापार भली प्रकार न जम रहा हो या व्यापिक घाटा हो रहा हो या ग्रन्थिवा वह व्यापिक दृष्टि से परेशानी इन भव कर रहा हो तो उसे चाहिए कि वह गणेशाष्टक का पाठ नित्य करे। व्यापिक सम्पन्नता के लिये यह गणेशाष्टक का पाठ ही व्यक्ति की सम्पन्नता में सहायक होता है। मैंने जिन-जिन व्यक्तियों को इस स्तोत्र का पाठ करने होता है। उन्हें व्यापारजनक परिणाम प्राप्त हुए हैं। उनके की सलाह दी है उन्हें व्यापार में अद्भुत सफलता मिली है। बेकारी का दौर उन्हें व्यापार में अद्भुत सफलता मिली है। किसी प्रकार का कोई समाप्त हो गया है, तथा व्यापिक दृष्टि से किसी प्रकार का कोई अन्य तर्ही यहा है, मेरी तो यहाँ तक का मान्यता है कि यदि व्यक्ति सभी दृष्टियों से सुखी, सफल एवं सम्पन्न भी हो तब भी उसे इस गणेशाष्टक का नित्य पाठ करना चाहिए। ऐसा करने से उसके जीवन में किसी प्रकार से कोई अभाव नहीं रह सकता।

स्तोत्र-व्यक्ति

१८

लहरी प्राप्ति के लिये मैंने इन्हीं पृष्ठों में गणपति का एक स्तोत्र दिया है जो प्रपने आप में संबिन्द द्वेष है औ पूर्ण फलप्रद है। यदि व्यक्ति इस स्तोत्र को नित्य एक माला फेरे अथवा माला पौत्र पाठ ही नित्य करे तो उसे जीवन में पूर्ण लक्ष्यी प्राप्ति होनी है, तथा व्यापिक जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता, मेरे स्वयं की नित्य पूजा में यह स्तोत्र सम्मिलित है।

इसी क्रम में मैंने गणपति के दो अत्यन्त दुर्लभ स्तोत्र दिये हैं जिनमें से एक 'गणाधिप स्तोत्र' है जो कि श्री एवं पुत्र की प्राप्ति के लिये है दूसरा स्तोत्र पुत्र की प्राप्ति के लिये है। ये दोनों ही स्तोत्र अत्यन्त चमत्कारिक एवं पूर्ण लाभप्रद हैं। श्री एवं पुत्र की प्राप्ति के लिये स्तोत्र मुख्यतः कठ से गाये जाने पर विशेष लाभप्रद माना गया है। शंकराचार्य विरचित यह स्तोत्र अत्यन्त दुर्लभ है, तथा लक्ष्यी प्राप्ति के लिये एवं पुत्र की उन्नति के लिये इस स्तोत्र के नित्य पाठ से सन्तान सुखोप्त बनती है। तथा उसको उन्नति में किसी प्रकार की कोई छाकट नहीं रहती। यदि अव्यापकी उन्नति में कोई वाचा अनभव होती है या उसे नीकरी नहीं मिल रही हो या मरवदि हो अथवा उसको परोक्षा वा सफलता में संदिव्यत्य हो तो व्यक्ति को चाहिए कि इस स्तोत्र का नित्य पाठ करे, कुछ ही दिनों में वह खुद ही अनभव करेगा कि यह स्तोत्र इस प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिये अद्भुत लाभदायक है।

पुत्र की प्राप्ति के लिये जो स्तोत्र दिया है वह आकार में भले ही छोटा ही परन्तु उसका प्रभाव विशेष है, यद्यपि सन्नान प्राप्ति के लिये अन्य कई उपाय हैं परन्तु मेरे अनुभव में यह स्तोत्र अपने पाप में ही पूर्ण लाभप्रद है। इस स्तोत्र का पाठ स्वीका या पुष्प दोनों में से कोई कर सकता है और यदि अद्वापूर्वक नित्य पाठ इस प्रकार का प्रयोग मैंने अपने परिचितों से करवाया है और उसका पूर्ण घनकूल परिणाम रहा है।

निश्चय ही गणपति समस्त कामनाओं की सिद्धि देने में सहायक है। अतः यथासभव हमें गणपति का पूजन या उसके स्तोत्र का पाठ नित्य करना चाहिए। हमारे पूजा में चाहे अन्य स्तोत्र सम्मिलित हों पर उसमें गणपति से संबधित एक स्तोत्र प्रवश्य ही स्तोत्र-व्यक्ति

१९

प्रारम्भ में रहना चाहिए जिससे कि हमारे जीवन में किसी प्रकार का कोई शराब या शोषण रहे।

चिन्ता एवं रोग निवारण के लिये

मयूरेशस्तोत्रम्

ब्रह्मोवाच

पुराणपुरुषं देवं नानाकोडाकरं शुदा ।
मायाविनं दुर्विभाव्यं मयूरेश नमाम्यहम् ॥
परात्परं चिदानन्दं निविकारं हृदि स्थितम् ।
गुणातीतं गुणमयं मयूरेशं नमाम्यहम् ॥
सज्जनं पालयन्तं च तंहरतं निजेच्छया ।
संवं विज्ञहरं देवं मयूरेश नमाम्यहम् ॥
नानादेव्यनिहन्तारं नानाल्पाणि विभृतम् ।
नानाषु धधरं भक्तया मयूरेशं नमाम्यहम् ॥
इन्द्रादिवेषतावृद्वेरभिष्ठुतमहनिशम् ।
सदसहयक्तभव्यक्तं मयूरेश नमाम्यहम् ॥
सर्वं गच्छित्तमयं देवं सर्वं विभुम् ।
सर्वं विद्याप्रवक्तारं मयूरेशं नमाम्यहम् ॥
पावतीनन्दनं शश्मोरानन्दपरिवर्धनम् ।
भक्तानन्दकरं नित्यं मयूरेश नमाम्यहम् ।
मुनिष्येयं मुनिनुतं मुनिकामप्रपूरकम् ।
सर्वाद्यविष्टिष्ट्वा मयूरेश नमाम्यहम् ॥
सर्वाज्ञाननिहन्तारं सर्वज्ञानकरं शुचिम् ।
सर्वपञ्चानमयं सत्यं मयूरेश नमाम्यहम् ॥
जनकोटिश्चाण्डनायकं जगदोऽवरम् ।
जनन्तदिव्यव विष्णु मयूरेश नमाम्यहम् ।

स्तोत्र-वाचि

मयूरेश उवाच

इवं ब्रह्मकरं स्तोत्रं सर्वं प्राप्नेतान्तम् ।
सर्वकामप्रदं नृणां सर्वोपद्वनाशनम् ।
कारणाहुगताना च मोक्षं विनाशपतकात् ।
आधिव्याधिहरं चंच भूषितम् कित्प्रदं शुभम् ॥

संकटनाश के लिये
संकटनाशन स्तोत्रम्
नारद उवाच

प्रणम्य विरता देवं गौरीपुत्रं विनापकम् ।
भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायु कामायं सिद्धये ॥
प्रथमं वक्तुण्डं च एकादशं द्वितीयकम् ।
तृतीयं कृष्णपिण्डालं गजबकां चतुर्थकम् ।
लम्बोदरं पंचमं च पाष्ठं विकटमं च ।
सप्तमं विज्ञराजेन्द्रं धूमधूषं तथा इतम् ॥
नवमं भालवन्दं च वशम् तु विनापकम् ।
एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम् ।
द्वावशंतानि नामानि विसंघ्यं यः पठेत् ।
न च विष्णमयं तस्य सर्वसिद्धिकरं परम् ।
विद्यार्थी लभते विद्या यनार्थी लभते धनम् ।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान् सोक्षार्थी लभते गतिम् ॥
जपेवगणापतिस्तोत्रं वद्विभिसिः फलं लभेत् ।
सर्वत्सरेण सिद्धि च लभते नान संशयः ॥
अष्टमयो ब्राह्मणम्यश्च लिङ्गित्वा यः समर्पयेत् ।
तस्य विद्या भवेत् सर्वा गणेशस्य प्रसादतः ॥

स्तोत्र-वाचि

समस्त कामनाओं की तिदि के लिये गणेशाच्छक

यतो नन्तरापते रन्नतावच जीवा यतो निगुणादप्रमेया गुणात्मे ।
 यतो भासि रथे किंवा मेरविनिष्ठं सदा तं गच्छेदं नमाम्यो भजामः ॥
 प्रतिष्ठविविशीउग्रात्मसंबंधं तत्पात्राच्चालनो विश्वगो विश्वगोप्ता ।
 तथेन्द्रादपो देवसंघा मनुष्याः सदा तं गच्छेदं नमाम्यो भजामः ॥
 यतो बहु॒ नमान॑ न॒ भवो भञ्जलं च यतः सागराच्चन्द्रमा व्योम वापुः ॥
 यतः स्पावरा जंगमा वृक्षसंघा: सदा तं गच्छेदं नमाम्यो भजामः ॥
 यतो द्वानपाः किनरा पक्षसंघा प्रतिष्ठारणा वारणा: इवाप्तवाच ॥
 यतः पश्चिकोदा यतो बोलवाच्च सदा तं गच्छेदं नमाम्यो भजामः ॥
 प्रतो वृद्धिराजाननाशो मुमक्षोयेत् तमप्यवो भक्तसंतोषितका: स्मृतः ॥
 यतो विन्दननाशो यतः कार्यसिद्धिः तदा तं गच्छेदं नमाम्यो भजामः ॥
 यतः पुरुषसम्पृष्ट यतो वाञ्छितायो यतो भक्तविन्दनास्त्वयनेकायाः ॥
 यतः शोकमोहो यतः काम एव सदा तं गच्छेदं नमाम्यो भजामः ॥
 प्रतो नन्तरापतिः स शेषो बभूव वरापात्रारणे नेकलये च दृष्टतः ।
 प्रतो नेकाया स्वर्णसोका हि नाशा सदा तं गच्छेदं नमाम्यो भजामः ॥
 प्रतो वेदवाचो विकुण्ठा मनोऽभिः सदा नेति नेतोति यस्ता गृह्णन्ति ।
 परद्वयाकर्षं चिदानन्दभूतं सदा तं गच्छेदं नमाम्यो भजामः ॥

३०८

पुनरावे गजाधीशः स्तोत्रमत्पत्यठेन्नः ।
 चिसंवयं त्रिदिनं तस्य वै कायं भविष्यति ॥
 यो अपेक्षद्विसं इतोकाष्ठकमिव शुभम् ।
 अष्टवारं चतुर्थी तु शोष्ट्रलिंगौरवान्यात् ॥
 यः पद्मभास्तयां तु दशावारं दिने विने ।
 ए योवैद्यन्यगतं राज्ञवध्यम् न संशयः ॥
 विद्याकामो लभेद्विद्वा दुष्कालो युत्पमान्यथात् ।
 वाङ्मित्रान्तर्भते—सवनिकविद्विवारतः ॥
 यो जपेत् परया भवेत्या गजाननपत्तो नरः ।
 एवम् यस्या ततो देवद्वाम्नपर्विं ततः प्रभः ॥

सामग्री द्राविन के लिये

बो एवं प्राप्त की ग्राहित के लिये

सरागितोकुरंभे विरागितोक्तुजिते मुरामुरंनेमाहृते वरादिमृद्युना-
 दाप्तय् ।
 गिरा धूं चिता हृं लवनि वल्पवाचंका नमामि ते गच्छिष्य
 गिरोण्डकांधुम्बुद्धप्रभोदाम भास्त्रं करोण्डकामानालाङ्घ-
 शंघवास्त्रलोक्तम् ।
 तरोग्नंपेशब्दुकुलिप्राप्यद्यापि संतते शरोरकान्तिविजिताव्यवग्नद्वा-
 गुकारिष्योनिवन्दिते गकारधार्यवशरं गकारधिवद्वाप्यम
 गवातनं गतुर्भुविकासिवद्यपुजिते गकासितामताक्षरं नभास्यते
 गताधिष्ठाप्यक गतादितोक्ताप्यक गतादितामावास्त्रं विरा-
 हता मुरामुरम् ।

कराम्बुजं वर्णन् सूगीन विकारशून्यमानसंहंदा सदा विभावितं
 गुदा नमामि विभन्पम् ॥
 षष्ठमापतोदनक्षमं तमाहितान्तरात्मना समाधिमिः सदाचितं क्षमा-
 निधि गणाधिपम् ।
 रत्नाधवादिपूजितं यमान्तकात्मसम्भवं शभादिष्टिगुणप्रदं नमामि
 तं विभूतये ॥
 गणाधिपस्य पञ्चकं नृणामभीष्टदयाकं प्रणामपूर्वकं जनाः पठन्ति
 ये मुदायुताः ॥
 भवन्ति ते विदाम्बुरः प्रगीतवंभवाः जनाश्चिरारप्युषो विकल्पियः
 समनवो न संग्रामः ॥

पुत्र की प्राप्ति के लिये

नमो स्तु गणतात्राय सिद्धिबृद्धिपूताय च ।
 सर्वप्रदाय देवाय पुत्रबृद्धिप्रदाय च ॥
 गृहवराय पुरवे पौत्रे गृह्यासिताय ते ।
 गोप्याय गोपिताशेषभवनाय चिदात्मने ॥
 विश्वमूलाय भव्याय विश्वसूलिकराय ते ।
 नमो नमस्ते सत्याय सत्यपूर्णाय शूणिङ्गे ॥
 एकदन्ताय शृद्वाय सुमखाय नमो नमः ।
 प्रपञ्चजनपालाय प्रणतार्तिविनाशिने ॥
 शरणं भव देवेश संतति नुदूढा कुष ।
 भविष्यति च ये पुत्रा बत्कुल गणनायक ॥
 ते सर्वे तव पूजायं निरताः स्पृशं रो मतः ।
 पृत्रप्रदिवं स्तोत्रं सर्वं तिद्विप्रदायकम् ॥

संकष्टहरण शास्त्रका ॥

राजानासत्स्य भृत्या इव पुर्वति कुलं दास वत्सर्वदास्ते,
लभ्मोः सर्वाङ्गपक्ता अपति च सदने फिकरा सर्वलोकाः ।
पुत्राः पुष्पयः पर्विजा रणभवि विजयी द्यूतवादेषि वीरो,
यस्येषो विघ्नराजो निवसत्ते हृत्ये भक्ति भाष्यस्य रुद्गः ॥१८॥

राम रक्षा स्तोत्र

प्रजिद्ध संत स्वामी महेशानन्दजी भारत को दिव्य विभूति है, उनसे इस जीवन में कई बार मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वे उच्च कोटि के साधक एवं योगी हैं। एक बार चर्चा ने जब 'राम रक्षा स्तोत्र' की बात चल पड़ी तो उन्होंने अपने प्रत्यन्बद्ध बताते हुए कहा कि 'रामरक्षा स्तोत्र' इन दग का मर्वयेष्ट स्तोत्र है। मैंने अपने जीवन में इस स्तोत्र का विभिन्न अवसरों पर विभिन्न स्थितियों में प्रयोग किया है और वे सभी प्रयोग शत-प्रतिशत सही रहे हैं, उनके अनुसार विच्छु काटने से लेकर भयानक विष के प्रयोग में इस स्तोत्र के पाठ से लाभ पहुँचा है तथा घोर आधिक सकटों में रास्त व्यक्ति द्वारा इस पाठ से कुछ ही समय में ऋण से उबरते हुए देखा है। नीकरी छुटना, दुखार आना, जो मचलाना, मुसीबत, व्यर्थ की परेशानी तथा सकटकालोन परिस्थितियों में मात्र एक दो पाठ से ही व्यक्ति परेशानी से मुक्त हो जाता है और उसे उसी समय नई राह मुझने लग जाती है।

एक बार महेशानन्दजी के परिचित श्री गंगाधरग चिह जी से मिलने पर उन्होंने बताया कि मैं एक बार भयानक बीमारी से परेशान था और संकड़ों उपचार कराकर हार गया था। मन बड़ा उद्बिग्न था और उन दिनों मध्ये कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था। सात भर बाद मेरी स्थिति ऐसी हो गई कि मैं आसानी से चल फिर भी नहीं सकता था। कमजोरी तथा बीमारी ने मेरे जीवन का आनन्द तथा असन्तुष्टि समाप्त कर दी थी, एक दिन मैंने इसका जिक्र अपने एक भिज से किया तो उन्होंने मझे महेशानन्द जी से मिलने का उपाय मुझाया तथा उनसे सलाह लेने की राय बताई। मैंने जब महेशानन्दजी से मिलकर अपनी समस्या उनके सामने रखी तो उन्होंने मझे अपने सामने बिठाकर एक स्तोत्र का पाठ किया और इस मिनट में ही मुझ घूर्ण मानसिक बत मिला।

स्तोत्र-शक्ति

लगभग एक महीने बाद मैं इतना अधिक ठीक हो गया था कि मैं आसानी से मील भर टहल सकता था। मेरे जीवन को जिन खुशियों का अन्त हो गया था, वे पुनः लौट आई थीं।

एक दिन जब मैंने महात्मा जो से उम स्तोत्र का रहस्य जानना चाहा तो उन्होंने मुझे बताया कि मैंने केवल मात्र राम रक्षा स्तोत्र का ही पाठ किया था। उन्होंने विस्तार से इसका अर्थ भी मुझे बताया, इसके बाद से 'राम रक्षा स्तोत्र' मेरे जीवन की पेटेन्ट दवाई बन चकी है। जब भी मैं जीवन की किसी भी परेशानी से ग्रस्त होता हूँ तो मैं 'राम रक्षा स्तोत्र' का पाठ करने लग जाता हूँ, और एक पाठ से ही मृजं अपूर्व मानसिक बल भिलता है तथा एक सप्ताह के भीतर-भीतर मैं उस समस्या पर विजय प्राप्त कर लेता हूँ।

यब तो मैं स्वयं इस स्तोत्र का प्रयोग कई व्यक्तियों पर कर चुका हूँ, भूत-प्रेत भगाने से लेकर विष उतारने तथा बीमारियों से मरित दिलाने से लेकर जूहण उतारने की बाधाओं में इसके पाठ की लालाह देता हूँ और वे मद्देव इससे लोभ उठाते हैं, तथा सफलता प्राप्त करते हैं। इस स्तोत्र के एक-एक शब्द में अपूर्व शक्ति, साहस तथा अमूल्य गुण छिपे हुए हैं। इसके एक-एक शब्द में नई शक्ति है, जो वा की नई अफताएँ हैं तथा बाधाओं पर विजय प्राप्त करने का अमोघ साधन है।

इसी प्रकार का एक चर्चा एक ध्वनि विज्ञानो मिस्टर रामानुजा से हुई तो उन्होंने बताया कि मंत्र में शब्दों का गुंफ़न ही अपने आप में महत्वपूर्ण है। स्तोत्र का प्रभाव या किसी मंत्र का प्रभाव इसलिये होता है कि उसके शब्दों का सयोजन अपने आप में विलक्षण होता है। उन्होंने बताया कि ध्वनि के माध्यम से कई असंभव कार्यों को सम्भव किया जा सकता है। युद्ध से वस के घमाके से आदमी बहरा हो जाता है, मकान की लिंडियाँ ढूँढ़ जाती हैं, तथा कई मकान भहरा करके नीचे गिर जाते हैं। अमेरिका में ध्वनि के प्रयोग से बड़-बड़े तालाब खोद लिये जाते हैं तथा केवल मात्र, ध्वनि से बड़-बड़े बांध तथा पहाड़ को इधर-उधर त्रिसकाया जाता है, उन्होंने बताया कि कई बार युद्ध में केवल वस की ध्वनि के आधार से व्यक्तियों को लकवा हो जाता है। उनके मुह टेढ़े हो जाते हैं, नाड़ी संस्थान कार्य करना बन्द कर

स्तोत्र-शक्ति

२५

देता है, गर्भवती स्त्रियों के गर्भ गिर जाते हैं, तथा हृदय रोग से पीड़ित व्यक्तियों का देहान्त हो जाता है। तेज ब्रावाज से वायु मण्डल में तीव्र कम्पन पैदा होते हैं और जब वे कम्पन हमारे मस्तिष्क को संशय करते हैं तो उसके दुष्प्रभाव से व्यक्ति पागल हो जाता है।

मंत्रों के प्रभाव के मूल में यही ध्वनि-विज्ञान कार्य करता है। मंत्रों के प्रत्येक अक्षरों का आपस में संबंध रहता है और उन अक्षरों के सम्बन्ध में एक विशेष ध्वनि का प्रादुर्भाव होता है और वही ध्वनि वायु-मण्डल में फैलकर इच्छित कार्य करने में सकल होती है।

'राम रक्षा स्तोत्र' के प्रभाव के मूल में भी यही ध्वनि कार्य करती है। इस स्तोत्र में शब्दों का सयोजन अपने आप में विलक्षण एवं अप्रितम है, जिसकी वजह से एक विशेष ध्वनि का निर्माण होता है और उस ध्वनि के कम्पन बीमार के अचेतन मन ने जाकर उसे साहस दृढ़ता एवं हिम्मत प्रदान करते हैं। इस आत्म बल से ही रोग दूर होते हैं तथा उसे आरोग्य, बल एवं शान्ति भिलता है। जो व्यक्ति जितनी ही पुष्टता से तथा विश्वास ने इस स्तोत्र का पाठ करता है उसे उतनी ही जल्दी सफलता प्राप्त होती है। यह अपने आप में एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है, और यह प्रक्रिया लालों लोगों ने लालों वार आजमाई है तथा उन्हें अपने कार्य में सफलता भिली है।

कई पुस्तकों तथा पत्र प्रिकार्डों में राम रक्षा स्तोत्र के फल के बारे में समाचार मुझने को दिलते रहते हैं। मेरे व्यक्तिगत अनुभव में भी सैकड़ों लोगों ने मृजं राम रक्षा स्तोत्र की सफलता के बारे में बताया। उनमें से कुछ सम्पर्क नोंचे दे रहा हूँ:

एक सज्जन को शराब की भयकर लत लग गई थी और धार-धीरे यह आदत इतनी बलवान हो गई कि उसने अपना सारा धन इसके पीछे स्वाहा कर दिया, यही नहीं अपितु एक दिन ऐसा भी आया कि जब उसके पास पहनने के पूरे कपड़े तक भी नहीं थे, उसकी पहनी बड़ी धर्मपरायण थी, और इस परेशानी को भी प्रभु का प्रसाद समझकर सन्तुष्ट रहती थी, पर जब मिथि मीमा से बाहर हो गई तो उसने किसी महात्मा से इसका हूँ पूछा तो

स्तोत्र-शक्ति

२६

महात्मा ने उसे शान्त चित्त से 'राम रक्षा स्तोत्र' का पाठ करने को सलाह दी और उसने उसी दिन से इस स्तोत्र का विधिपूर्वक पाठ करना प्रारंभ कर दिया।

कुछ ही दिनों बाद लोगों ने देखा कि वह व्यक्ति धीरे-धीरे सम्मान पर आ रहा है और एक दिन उसने शराब की बोतल फोड़ कर यह प्रतिज्ञा कर ली कि आज से यदि मैं शराब पीऊँगा तो मेरे लिये गौमांस के बराबर होगा।

पता नहीं यह सद्बुद्धि उसे किस प्रकार से मिली, पर लोगों ने देखा कि उस दिन से उसने जो शराब छोड़ी तो वापस भूलकर भी उसने शराब को मूँह नहीं लगाया और आज वह व्यक्ति अत्यन्त सफल यहस्थ-जीवन व्यतीत कर रहा है, उसकी पत्नी आज भी नियमग्रुचक राम रक्षा स्तोत्र का पाठ करती है और अपने सफल यहस्थ-जीवन एवं पति के विचारों में परिवर्तन का श्रेय इस स्तोत्र को ही देती है।

आरा० सो० भेदहा एक सफल दिल्ली के प्रशासक है और उन्होंने अपने जीवन में कई खतरों का सामना केवल इस स्तोत्र के माध्यम से ही किया है।

एक बार वे वायुयान से यात्रा कर रहे थे, उन्होंने अपने अनुभव मुताते हुए बताया कि जब मैं विमान में बैठा था कि अचानक वह विमान डगमगाने लगा और कुछ ही क्षणों बाद वह विमान आग के शोलों के रूप में बदल गया, जिस क्षण से वह विमान डगमगाने लगा उसी क्षण से यत्रवत् भेटे मूँह से राम रक्षा स्तोत्र प्रारंभ हो गया था। एकदम ऐसा लगा कि जैसे मुझे किसी ने जोरों से धक्का देकर उछाल दिया हो। मैं जलते हुए विमान से लगभग ४० गज दूर पड़ा था, मेरे मूँह से उस समय भी अनवरत 'राम रक्षा स्तोत्र' का पाठ चल रहा था और मैंने जलते हुए मलबे को अपनी धाँखों से देखा जिसमें केवल मैं ही एक यात्री जीवित बचा था, जिस प्रकार से उस विमान की दुष्टिना हुई थी उससे तो मेरा बचना असम्भव सा ही था, पर राम रक्षा स्तोत्र के चमत्कारिक फल ने यही पर भी मेरी प्राण रक्षा की।

जोधपुर में ही एक व्यक्ति एक अच्छे पद पर कार्य कर रहा था एक बार उसके घराने कुछ चांगों था अभियोग लगाये गये और उसको तौकरी से हटा दिया गया। उन दिनों वह अधिकारी अत्यन्त परेशान था, उसने जब अपनी समस्या के बारे में मुझसे जिक्र किया तो मैंने उसे नियम प्रातः-सायं राम रक्षा स्तोत्र के पाठ करने की सलाह दी। उसने उसी दिन से इसका पाठ शुरू कर दिया, और अगले ३० दिनों के भीतर-भीतर उसके घराने जो अभियोग थे वे निर्मल सावित हुए और उसे पुनः सम्मान वह पद दिया गया, उसके बाद से राम रक्षा स्तोत्र उसके जीवन का अभिभाव अंग बन गया।

इन्दौर के आरा० पी० सानी ने मिलने पर मूँह अपने अनुभव बताते हुए कहा था कि मैं और कुछ नहीं जानता केवल राम रक्षा स्तोत्र का पाठ जानता हूँ और उसके प्रभाव से मैं आज अपने समाज में सम्माननीय स्थान प्राप्त किये हुए हूँ, यद्यपि मेरे जीवन में सैकड़ा परेशानियाँ और मुसीबतें आई हैं परन्तु मैंने एक दिन के लिये भी राम रक्षा स्तोत्र का पाठ नहीं छोड़ा, और आज मैं अधिकार पूर्ण स्वर से कहने को यह समर्थ हूँ कि मेरे जीवन में विपक्षिया और बाधाओं को टालने में इस स्तोत्र ने राम बाण को तरह काम किया।

उसने बताया कि सन् ६१ में जब यष्ट यही योग था उन्हीं दिनों मेरा वच्चा सत्तिपात्र में आ गया था। डाक्टर ने अपने हाथ झटक दिये थे, और कहा था अब ससार का कोई इजेक्शन इसकी मृत्यु को नहीं टाल सकता, मैं दबाइया तथा चिकित्सकों को प्रारम्भ से ही अप्य समझता था, पर घर वालों की हठ के कारण ही मैंने उन्हें बुलाया था, जब डाक्टरों ने हाथ झटक लिये तो घर में कोहराम सा मच गया परन्तु उन कठिन क्षणों में भी मैं अडिग था और मूँह राम रक्षा स्तोत्र पर पूरा भरोसा था।

मैं उसके सिरहाने जाकर सस्वर राम रक्षा स्तोत्र का पाठ करने लग गया, मेरे सम्बन्धियों ने मुझे मूँह समझा और कहा स्तोत्र-शक्ति

यह समय अत्यन्त कोमती है, इसके एक-एक क्षण का उपयोग करना चाहिए। तुम्हें एक नहीं तो दूसरे अवश्या तीसरे डाक्टर से परामर्श करना चाहिए, जबकि तुम इस व्यथे के स्तोत्र को लेकर अपना समय बरबाद कर रहे हो।

मैं मौन रहा, और कहा—जो कुछ करना है तुम करो, मैं अब यहाँ से तब तक नहीं बढ़ूँगा जब तक इस बच्चे की मन्त्रिपात्र श्रवस्था मुधर नहीं जाएगी, मैंने उसके सिरहाने सुगंधित धगरवती लगा ली, और राम रक्षा स्तोत्र का पाठ करने लगा। मेरे मन मे पूर्णतः शान्त थी और भगवान् थी रामचन्द्र का पूरा-पूरा भरोसा था।

इस बीच मेरे बड़े भाई ने टेलीफोन से दो बड़े डाक्टरों को भी बुलाया मगर उन्होंने भी बताया कि अब कुछ नहीं किया जा सकता। वे दोनों डाक्टर भी अपनी-अपनी फीस लेकर चले गये।

मेरा स्तोत्र पाठ अनवरत रूप से चाल था। मैंने करीब ग्यारह पाठ पूर्ण किये थे कि धीरे-धीरे उसके शरोर की उन्मादा-स्वस्था ठीक होने लगी और दूसरे दिन सुबह तक पूर्ण स्वस्थ हो गया।

कलकर्ते में एक बार भयानक प्लेग फैल गया था। वी हरीरामजी गोयनका अत्यन्त ही धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति-थे। उनका सारा जीवन ईश्वर-चिन्तन एवं धार्मिक कार्यों में ही व्यतीत होता था। कलकर्ते में अधिकतर धार्मिक संस्थान गोयनका के बजह से ही चलते थे। सयोगवश उस प्लेग की चपेट में गोयनका जी भी आ गये, उन्हें तेज ऊर चढ़ आया तथा दोनों ओर दो गिन्टियाँ निकल आईं, घर वाले अत्यन्त चिन्तित हुए और उस समय के कलकर्ता के प्रशिद्ध डाक्टरप्रभुपद बाबू को बुलाया, उन दिनों प्रभुपद बाबू कलकर्ता में ईश्वर के नाम से जाने जाते थे। गोयनका जी के परिवार से उनका घरेन् सम्बन्ध था, टेलीफोन करने पर वे दोड़ आये और जब उन्होंने गोयनका जी को देखा तो उनके चेहरे पर चिपाद की रेखाएँ खिच गईं। उन्होंने स्पष्ट कहा कि प्लेग का धाकमण इतना भयानक हुआ है कि

स्तोत्र-वक्ति

३२

अब श्री गोयनका किसी प्रकार से नहीं बच सकते, यदि यह रात निकाल दें तो निकाल दें, परन्तु मेरे चिकित्सा-प्रनुभव के आधार पर यह रात इनकी अनितम रात्रि होगी और यह कहकर वे उल्टे पांव लौट गये।

गोयनका जी यह सब मूल रहे थे, जब उनको पता चला कि आज की रात मेरे जीवन की अनितम रात है, तो उन्होंने नौकर को कहकर शुद्ध गंगाजल से सारा कमरा बुलवाया, स्वयं स्नान किया और परिवार वालों के मता करने पर भी वे फौंस पर आसन बिछाकर बैठ गये, और अन्दर से दरवाजा बन्द कर दिया।

रात्रि को उन्होंने भगवान् श्रीराम का एक बड़ा सा चित्र अपने सामने रख दिया और अनवरत रूप से 'राम रक्षा स्तोत्र' का पाठ करने लगे, उन्होंने स्तोत्र लिया कि मुझे मरना तो है ही, फिर भी सारीरिक-विवरणों में उल्जनकर अपने प्राण क्यों विसर्जित करें। सारी रात वे राम रक्षा स्तोत्र का पाठ करते रहे रात्रि को लगभग ५ बजे उनको महसूस हुआ कि उनके शरीर में प्लेग की गिल्टियाँ दब गई हैं, सुबह होते-होते वे अपने आपको पूर्ण स्वस्थ प्रनुभव करने लगे, जबर जाता रहा तथा शारीरिक तथा मानसिक रूप से अपने आपको काफी तरोताजा प्रनुभव करने लगे। प्रातः उठते ही उन्होंने नौकर को बुलाकर कहा मेरो मृत्यु नहीं हुई है तुम अभी २५ बाह्यणों को बुलाकर लाओ, मुझे बाह्यण भोजन कराना है।

लगभग ११ बजे डाक्टर प्रभुपद पाये उन्होंने तो यह सोच ही लिया था कि गोयनका जी का दाह स्तुकार हो गया होगा और सातवना देने के लिये घर जाना जरूरी था। मगर डाक्टर साहब जब उनके घर पहुँचे तो उन्होंने देखा कि गोयनका जी लड्डू तथा पूँछी था रहे हैं और लगभग पूर्ण स्वस्थ से दिखाई दे रहे हैं।

डाक्टर साहब अत्यन्त आश्चर्यचकित हुए, उन्होंने पूछा तुम भोजन करने की सलाह तुम्हे किसने दी? और यह लड्डू तथा इतना गरिम्बन भोजन करने की सलाह तुम्हे किसने दी?

गोयन जी ने उत्तर दिया जिन्होंने मूँज स्वस्थ किया है उनकी आज्ञान सार हो मे यह भोजन भी गहण कर रहा हूँ।

इस घटना के बाद लगभग ३० बजे तक गोयनका जी और

स्तोत्र-वक्ति

३

जीवित रहे तथा जब तक जीवित रहे उन्होंने राम रक्षा स्तोत्र का पाठ करना नहीं छोड़ा।

स्वामी कृष्णानन्द जी का धनुभव भी अपने आप में अद्भुत है। एक बार उन्होंने बताया कि मैं सन् १९३७-३८ में हिमालय की तरफ गया था। कश्मीर में श्रीनगर से आगे जब मैं अमरनाथ की तरफ बढ़ रहा था तो मार्ग में आस्थानमर्ग की चढ़ाई आती है, इसे हत्यारा तालाब भी कहते हैं। पूर्मते-धूमते जब मैं इस स्थान पर आया तब तक सोझ घिर आई थी, उस जगह के लिये मैं सर्वथा अपरिचित था, तब उस भयंकर शौत में विश्राम के लिये मूँझे कोई स्थान दिखाई नहीं दे रहा था, मेरा हृदय आशकित हो उठा, और इबर-उधर देखा परन्तु ऐसा लगा जैसे मैं रास्ता भूल गया हूँ और चारों तरफ अंधकार घिरता जा रहा था।

एक प्रकार से मेरी हिम्मत जबाब दे गई, पर उसी समय मन में कुछ ऐसा धनुभव हुआ कि इस विपत्तिकाल में केवल राम रक्षा स्तोत्र ही मेरी रक्षा कर सकता है, और कोई उपाय नहीं है। मैं वहीं पर एक गया और आगे मार्ग-दर्शन के लिये जोर-जोर से राम रक्षा स्तोत्र का पाठ करने लग गया।

लगभग २५-३० मिनट बीते होंगे और मैंने राम रक्षा स्तोत्र के २-३ पाठ ही किये थे कि मूँझे उस वियावान जंगल में और दैर्घ्यों से रात में, एक तरफ से टाचं का प्रकाश आता दिखाई दिया, ऐसा लग रहा था जैसे वह टाचं का प्रकाश मूँझे सकेत से उस दिन को और आने के लिये प्रेरित कर रहा हो, मैं उठा और जिधर से टाचं का प्रकाश आ रहा था उस तरफ अपने पाँव बढ़ा दिया, ज्यों-ज्यों मैं आगे बढ़ता जाता, त्यों-त्यों वह प्रकाश भी आगे बढ़ता जाता, और मूँझे उस तरफ चलने का सकेत करता जाता।

उस अधिरो रात में लगभग एक मील चलने के बाद मूँझे डाक बंगला दिखाई दिया, जो कि उस जंगल में केवल मात्र वही आश्रय स्थल था, जब मैं डक बंगला के पास पहुँचा तो मूँझे वह टाचं का प्रकाश दिखाई देना बन्द हो गया।

डाक-बंगले में वही का चौकीदार था उससे मैंने प्रार्थना की तो उसने मूँझे सांने के लिये एक कमरा दे दिया। मैंने उस चौकीदार से पूछा भी, कि क्या इस डाक बंगले के प्राम-पास कोई और

लोग भी रहते हैं तो उसने उत्तर दिया कि इस डाक बंगले के चारों प्रोर १०-१२ मील तक न तो कोई थर है और न कोई व्यक्ति ही रहता है। जब मैंने उसे टाचं के प्रकाश के बारे में बताया तो उसने कहा यहाँ से तो किसी ने टाचं का प्रकाश ढाला नहीं, और आस-पास भी कोई व्यक्ति हो, ऐसा प्रतीत नहीं होता। अस्तु।

रात भर मैं प्रभु का वन्यवाद कर प्राराम से साया। सबह उठने पर चौकीदार से पता चला कि रात को भयकर बफ़ौला त्रुकात आया था, और लगभग १२-१२ इंच बफ़ौला चारों तरफ गिर चूँकी है। मैं यह मुनकार मिहर उठा और योचा कि यदि मैं रास्ता भूलकर जंगल में ही पड़ा रहता तो यद तक तो मैं कभी का समाप्त हो चूका होता, पर प्रभु के हाथ लग्जे हैं और उसने मूँझे बचा लिया।

स्वामी जी मूँझे अपना यह धनुभव बताते हुए बोले कि उस दिन से मूँझे पर जब-जब भी कोई विपत्ति आई है तो मैंने केवल राम रक्षा स्तोत्र का ही पाठ किया है, और इस पाठ के बाद मेरी वह समस्या स्वतः ही मुलझती चली गई है।

मूँझे सन् १९४७-४८ का जमाना पाद है उन दिनों जब कि भारत-पाकिस्तान के टूकड़े हो गये थे, तब चारों तरफ भार-काट मच्छे हुई थे, तब मैं पाकिस्तान में था, हमारे थर के पास तो एक सोनार रहते थे जिनका नाम डारिका प्रसाद था। उसने एक बार बताया था कि जब मूँसलधानों ने मेरे थर पर आक्रमण कर दिया तब मैंने वह प्रचल्ली तरह से सोच लिया था कि अब मूँझे ससार की कोई भी ताकत नहीं बचा सकती। मैंने बाहर से दरखाजा बन्द कर दिये थे? अन्दर मैं, मेरी पत्नी तथा मेरी जबान पुत्री थी। बाहर से धर्माच्छ आतताइ दरखाजा तीड़ने में व्यस्त थे, और मैं मन ही मन डर रहा था कि अभी यह आतताइ कमरे में घस-घड़े और मेरी बच्चों का शोल-भग भेरे सामने हो हो जायगा और इसके भलाका भी न मालूम किस-किस प्रकार को विपत्तियों का सामना करना पड़ेगा।

उसी ज्ञान भेरे हृदय में जैसे प्रकाश सा हुआ, मन के एक कोने से आवाज आई आज तक जब धोराम ने तुम्हारी मदद की है तो आज वे कैसे तुम्हें भूल सकते हैं ?

मैं पूजा गृह में चला गया और पुरा परिवार भेरे पास आकर बैठ गया, मैं प्राप्ते बन्द किये लगातार राम रक्षा स्तोत्र का पाठ करने लगा मन में यह निश्चय कर लिया था कि जब जो भी होगा देखा जायगा, मगर पाठ करते-करते लगभग घण्टा बीत गया और कोई आतताई अन्दर नहीं घुसा तो मुझे आश्चर्य हुआ, पहले तो मैंने चपचाप कान लगाकर मुनने की बेट्टा की परन्तु जब बाहर किसी प्रकार को हलचल न मुनाई दी तो मैंने दरबाजा धोरे से खोला और बाहर जाकर तो मृजे एक भी व्यक्ति बाहर दिखाई नहीं दिया, पता नहीं थी राम ने किस प्रकार से मेरी रक्षा की और किस भय से वे आतताई वहाँ से भाग गये। मैं कह नहीं सकता परन्तु उस दिन भेरा बाल भी बोका नहीं हुआ।

उसी रात को हम लोगों ने किराये पर ऊंट किये और भारत पाक सीमा से होकर जैसलमेर पहुँचे, यदि मैं उस दिन राम रक्षा स्तोत्र का पाठ नहीं करता तो मृज कोई भी बचा नहीं सकता था।

२१-४-७० की बात है, मेरी माता जी भयानक हृषि से बीमार पड़ गई। यद्यपि वे पिछले काफी वर्षों से बीमार चल रही थी और उन्हें गदों की बीमारी थी, अनेक इलाज करवाये तथा तरह-तरह के दैदारी और डाक्टरों से उपचार भी करवाया, मगर रोग-नियन्त्रण में आ ही नहीं रहा था।

होता यह कि योड़ा बहुत इलाज कराने पर वे स्वस्थ हो जाती पर तभी पश्यापद्य का ध्यान न रखती और वह बीमारी पुनः उन्हें दबोच लेती।

२१ प्रैरिल की घटना है, सुबह जब मैं चाय लेकर उनके पास पहुँचा तब वे लगभग सजा शून्य सी बिस्तर पर पड़ी थी, मैं घबरा गया, उनकी नाड़ी देखी जो अत्यन्त मद गति से चल रही थी, उन्हें हिलाया-हूँलाया तो उनके शरीर में किसी प्रकार की हरकत मृज

स्तोत्र-शक्ति

३६

दिखाई नहीं दी।

मैं चिन्तित हो उठा और उसी समय धपने लड़के को भेजकर वहाँ के प्रसिद्ध चिकित्सक प्यारे लाल जी को बुलवाया उन्होंने आकर जब उनकी परीक्षा की तो पता चला कि यह संज्ञा शून्य अवस्था में तीन चार घण्टे से चल रही है और नाड़ी स्पन्दन इतना कमज़ोर हो रहा है कि संभवतः रागी ३-५ घटों से ज्यादा जीवित नहीं रह सकता, मैंने बैद्य जी से प्रायंना की कि क्या इन्हें शहर के बड़े अस्पताल में ले जाना ठीक रहेगा ?

उन्होंने उत्तर दिया कि मेरी राय में वहाँ ले जाना धपने आप में कोई अर्थ नहीं रखता, क्याकि ऐसा करने से मार्ग में ही इनके प्राण-विसर्जन होने का खतरा है और जिस प्रकार से नाड़ी-स्पन्दन कार्य कर रहा है उस हिसाब से मैं अब ३-५ घटों से ज्यादा जीवित नहीं रह सकती, इतना कहकर बैद्य जी धपने घर लौट साये, मैंने आंगन पर चौका दिया तथा माताजी को उस पर लिटा दिया, उसके सारे शरीर को गंगाजल से धोया, और पास में श्री रामचन्द्र जी की बड़ी सी तस्वीर लाकर रख दी, तथा उसके सामने धूत का दीपक लगा दिया एवं सुगन्धित अगरबत्ती भी जला दी, इसके बाद मैं सस्वर राम रक्षा स्तोत्र का पाठ करने लग गया।

इस प्रकार पाठ करते-करते लगभग तीन घण्ट बीत गए तो मैंने देखा कि माँ ने आख्ये खोल ली है, और मृजसे पुनः पलंग पर सोने को कहने लगी। मैंने उन्हें बहाँ से उठाकर पलंग पर लेटाया, तो उन्होंने बताया कि मृज कुछ ऐसा प्रतीत हुआ कि जैसे मैं इस देह से मृत होकर कहीं दूर जा रही हूँ। परन्तु इसके कुछ ही समय बाद पीछे से श्री राम मृज वापस बूला रहे हैं और जर्जर ही मैं पुनः शरीर में आई त्यों ही मेरी आँख खुल गई।

राम रक्षा स्तोत्र की अनन्य शक्ति पर मैं अड़ा बिनीत हो गया और एक प्रकार से इस स्तोत्र के कारण ही माता को पुनर्जन्म मिला।

मेरी ऐसी धारणा है कि असंभव कार्य में भी राम रक्षा स्तोत्र अत्यन्त सहायक तथा सिद्धिप्रद रहता है, इसके बाद भी अनेक बार विपत्तियाँ आईं, पर राम रक्षा स्तोत्र ने हमेशा मेरी सहायता की।

स्तोत्र-शक्ति

३७

राम रक्षा स्तोत्रम्
विनियोगः

अस्य श्रीराम रक्षा स्तोत्रमन्त्रस्य बुधकौशिक ऋषिः श्रीसीता-रामचन्द्रो देवता अनष्टम छन्दः सीता शक्तिः श्रीमान् हनुमान् कोलंक श्रीरामचन्द्रप्रीत्यये रामरक्षा स्तोत्रजये विनियोगः ।

ध्यानम्

प्यायेदाजानुवाहै धृतशरथनयं वद्धपदमासनस्यं ।
पीतं वासोवासानं नवकमलदलस्पर्धिं नेत्रं प्रसन्नम् ।
वामाइका हृदसीताभूखकमलमिललोचनं नीरवामं ।
नानालंकारवीप्तं वधतमुण्डटामण्डलं रामचन्द्रम् ॥

स्तोत्रम्

चरितं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरम् ।
एकं कमक्षरं पूर्णा महापातकनाशनम् ॥१॥
व्यात्वा नीलोत्पलशयामं रामं रजीवलोचनम् ।
जानकीलक्षणोपेतं जटामुकुटमण्डितम् ॥२॥
सासित णधनवर्णणायाणिं नवतंचरान्तकम् ।
स्वीलीलया जगत्वातुमाविर्भूतमजं विभूम् ॥३॥
रामरक्षां पठेत्राजः पापनीं सर्वकामदाम् ।
शिरो में राघवः पातु भालं दशरथात्मजः ॥४॥
कौसल्येयो दृशो पातु विवामित्रप्रियः श्रुती ।
द्राणं पातु मखव्राता मुखं सोभित्रिवत्सलः ॥५॥
जिह्वा विद्यानिधिः पातु कण्ठं भरतवर्णितः ।
स्फन्धो दिव्यायुधः पातु भुजो भग्नेशकामुकः ॥६॥
करी सीतापितिः पातु हृदयं जामदग्न्यजित् ।
मध्यं पातु खरच्चंसी नाभिं जाम्बवदोभयः ॥७॥
सुप्रीवेजः कटी पातु सक्षियनी हनुमप्रभुः ।
ऋक रघु तमः पातु रक्ष कुलविनाशकृत ॥८॥

स्तोत्र-शास्त्रि

जाननी सेतुहृत्पातु जडघे दशमखान्तकः ।
पादी विभीषणधीदः पातु रामोऽविलं वपुः ॥९॥
एतो रामवलोपेतां रक्षां यः सुकृती पठेत् ॥१०॥
सच्चिरायः सुखी पुत्री विजयो विनयी भवेत् ॥११॥
पातालभृतलव्योमचारिणश्छदमवारिणः ।
न द्रष्टुभूपि शक्तास्तं रक्षितं रामनामभिः ॥१२॥
रामेति रामभद्रेति रामचन्द्रेति या स्मरण् ।
नरो न लिप्यते पापं भूवितं च विन्दति ॥१३॥
जगज्जन्मत्रं कमन्त्रेण रामनाम्नाभिरहितम् ।
यः कण्ठेधारयेत्स्य करस्थाः सर्वसिद्धयः ॥१४॥
वज्रपंजरनामेवं यो रामकवचं स्मरेत् ।
अव्याहताजः सर्वं लभते जयमंगलम् ॥१५॥
आदिष्ठवान्यथा स्वप्ने रामरक्षमिमां हरः ।
तथा लिखितवान्प्रातः प्रवृद्धो बुधकौशिकः ॥१६॥
आरामः कल्पवक्षाणां विरामः सकलापदाम् ।
अभिरामस्त्रिलोकानां रामः श्रीमान्स नः प्रभुः ॥१७॥
तह्यो हृपसम्पन्नी सुकुमारीं महाबलौ ।
पुण्डरीकविशालाक्षो चौरकृष्णाजिनाम्बरो ॥१८॥
फलमूलाजिन्नो दान्तो तापसो ब्रह्मचारिणो ।
भुत्री दशरथस्यंती भातरौ रामलक्ष्मणो ॥१९॥
शरण्यी सर्वंसत्तवानां श्रेष्ठो सर्वंधनुष्मताम् ।
रक्षः कुलनिहन्तारो त्रायेतां नो रघुतमो ॥२०॥
आत्मसज्जधन्त्याविष्युस्पृशावक्षयाशुग्निवंगसंगिनौ ।
रक्षाणाय मम रामलक्ष्मणावप्रतः पवित्रं तदंव गच्छताम् ॥२१॥
संनद्धः कवची खंगी चापदाणवरो युवा ।
गच्छन्मनोरयान्प्रश्नं रामः पातु सलक्ष्मणः ॥२२॥
रामो दावारपि शरो लक्ष्मणानचरो बली ।
काकुत्स्यः पुरुषः पूर्णः कौसल्येयोरघूलमः ॥२३॥
बेदान्तवद्यो यज्ञेशः पुराणपुरुषोत्तमः ।
जानकीवल्लभः श्रीमानप्रभमयपराक्रमः ॥२४॥
इत्येतानि जपनित्यं मद्भवतः श्रद्धयान्वितः ।
अष्टवर्षधारिकं पुण्यं सम्प्राप्नोति न संशय ॥२५॥

स्तोत्र-शास्त्रि

रामं द्वार्देलश्यमं पदमाजं पीतवाससम् ।
 स्तुवन्ति नाभाभिविष्येन ते संसारिणो नराः ॥२५॥
 रामं लक्षणपूर्वजं सीतापति सुन्दरं ।
 काङ्क्षयं करुणाणं बृंगनिधि विप्रश्रियं घामिकम् ।
 राजेन्द्रं सत्यसंयं दशरथतनयं इयामलं शान्तमूर्ति ।
 वन्दे लोकाभिरामं रघुकुलतिलकं राघवं रावणरिम् ॥२६॥
 रामायं रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे ।
 रघुनाथाय नाथाय सीतायः पतये नमः ॥२७॥
 श्रीरामं रामं रघुनन्दनं रामं रामं
 श्रीरामं रामं भरताप्रजं रामं रामं ।
 श्रीरामं रामं रणकक्षशरामं रामं
 श्रीरामं रामं शरणं भवं रामं रामं ॥२८॥
 श्रीरामचन्द्रचरणो मनसा स्मरामि ।
 श्रीरामचन्द्रचरणो वचसा पणामि ।
 श्रीरामचन्द्रचरणो शिरसा नमामि
 श्रीरामचन्द्रचरणो शरणं प्रपद्य ॥२९॥
 माता रामो मतिपता रामचन्द्रः ।
 स्वामो रामा मत्सत्त्वा रामचन्द्रः ।
 सर्वस्वं मे रामचन्द्रो दयालः ॥
 नन्यं जाने नैव जाने न जाने ॥३०॥
 दक्षिणे लक्षणो यस्य वामे च जनकात्मजा ।
 पुरतो मारुतियस्य तं वन्दे रघुनन्दनम् ॥३१॥
 लोकाभिरामं रणरंगधीरं
 राजीवने त्रं रघुवशनायम् ।
 काङ्क्षयकं करुणाकरं ते ।
 श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्य ॥३२॥
 मनोजवं मारुततुल्यवेगं
 वितेन्द्रीयं बुद्धिमता वरिष्ठम् ।
 वातात्मजं वानरयस्य महये ।
 श्रीरामद्रूतं शरणप्रपद्य ॥३३॥
 कृजन्तं रामरामेति मधुरं मधुराकरम् ।
 जाहु हयं कविताशालां वृन्दे वाल्मीकिकोकिलम् ॥३४॥

आपदामपहृतारं वातारं सर्वसम्पदाम् ।
 लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमास्यहम् ॥३५॥
 भर्जनं भवबीजानामर्जनं मुखसम्पदाम् ।
 तज्जनं यमद्रूतानां रामरामेति गर्जनम् ॥३६॥
 रामो राजमणिः सदा विजयते रामं रमेशं भजे
 रामेणाभिहता निशाचरचम् रामाय तस्मं नमः ।
 रामान्नास्ति परायणं परतरं रामस्य दासोऽस्म्यहं
 रामे चितलयः सदा भवतु मे भो राम मामहर ॥३७॥
 राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे ।
 सहस्रनामं तस्तुप्यं रामनामं वरानने ॥३८॥

गजेन्द्र मोक्ष

गजेन्द्र मोक्ष स्तुति सभी स्तुतियों से अत्यन्त विष्ट एवं प्रभावकारी मानी गई है। महामना मालबीय इसके परम भक्त थे। एक बार हनुमान प्रसाद जी पौहार से चर्चा चलने पर उन्होंने बताया था कि जब-जब भी मेरे जीवन पर समस्याएँ संकट आए हैं, या हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना के समय आधिक संकट से मैं परेशान हुआ हूँ तब-तब गजेन्द्र मोक्ष का मैंने पाठ किया है और इससे मैंने उस विपत्ति से छुटकारा पाया है।

एक बार मालबीय जी का पुत्र अत्यन्त बीमार पड़ा तो उन्होंने तार द्वारा मालबीय जी को सूचना दी कि मेरी तबीयत ठीक नहीं है, उन दिनों मालबीय जी किसी ऐसे कायं से उलझे हुए थे कि चाह कर भी उधर नहीं जा सकते थे, उन्होंने पुनः आपने पुत्र को एक लम्बा पत्र लिखते हुए कहा कि तुम्हें आपने स्वास्थ्य के बारे में चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं है, मैंने तुम्हें गजेन्द्र मोक्ष के समान अद्भुत धोयधि दी है तो फिर तुम मेरो उस धोयधि का सेवन कर्यों नहीं करते?

पुत्र ने गजेन्द्र मोक्ष का पाठ किया और कुछ ही दिनों में वह उस भयानक रोग से बच गया।

एक बार जब मालबीय जी वाराणसी में थे तो एक महात्मा उनसे मिलने के लिये उनके पार गये और पूछा कि आप गृहस्थ होते हुए भी परम तपस्वी कैसे हैं? वह कोन-सा मंत्र आपके पास है जिससे कि आप इस गृहस्थी रूपी कीचड़ में भी कमलवत् खिले रहते हैं।

मालबीय जी ने उत्तर दिया, धाज में पहली बार आपको इस रहस्य की बात बताता हूँ। मेरी माता ने मुझे इस अद्भुत मंत्र की विज्ञा दी थी और कहा था कि जब भी तुम पर संकट आए या किसी प्रकार की परेशानी महसूस हो तब तुम इसी मंत्र-राज

का उपयोग करना।

मालबीय जी काफी उतारबले हो गए, उन्होंने निवेदन किया मालबीय जी! छूपा करके आप मुझे भी वह मंत्र बताए, जिसमें कि मैं उसका सम्बूद्धित उपयोग कर सकूँ।

मालबीय जी ने उत्तर दिया बास्तव में वह मंत्र आपने आपमें अद्भुत है, मेरा जीवन बाधाओं और समस्याओं का धर है। जीवद ही कोई ऐसा दिन बीतता होगा जिस दिन मेरे सामने नई समस्या नहीं आई हो मगर जब भी समस्या मेरे सामने आती है तो मैं एक लण के लिये भी हिचकिचाता नहीं हूँ क्योंकि मैं जानता हूँ कि मेरे पास मेरी पूज्य माता जी द्वारा दिया हुआ एक ऐसा अमोघ मंत्र है जो इस विपत्ति को चुटकी बाजाते हीं दूर कर देगा। और महात्मा जी! मेरे जीवन में जब-जब भी विपत्ति या कोई समस्या आई है, तभी मैंने इस मंत्र का स्मरण किया है और आज तक भी इस मंत्र का प्रताप व्यर्थ नहीं गया।

महात्मा जी अत्यन्त उतारबले हो गये उनके प्रत्येक शब्द से भाग्यह टपक रहा था, उन्होंने कहा मालबीय जी मैं वह अद्भुत मंत्र आपसे अवश्य सीखना चाहूँगा मझे विश्वास है कि आप मेरी इस प्रार्थना को ठुकराएँगे नहीं।

मालबीय जी ने अनन्दर से गजेन्द्र मोक्ष की पुस्तक लाकर उन्होंने भी कहा—यही वह अद्भुत एवं अमोघ मंत्र है, जिसको बजह से मैं आज तक आपने प्रत्येक कार्य में सफल होता आया हूँ, यद्यपि मैंने आपने जीवन में अन्य कई स्तोत्रों का पाठ किया है, उसका प्रभाव देखा है, परन्तु गजेन्द्र मोक्ष में एक विशेषता है, कि इसका प्रभाव तुरंत होता है और आपने आप से अद्भुत एवं पूर्ण होता है, मेरी मां ने मुझे जो अमोघ मंत्र दिया था, वही मैंने आपके सामने रखा है। और आप भी अद्भुत से यदि इसका पाठ करेंगे तो निश्चय ही आप आपने प्रत्येक कार्य में पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

बास्तव में वो प्रकार के गजेन्द्र मोक्ष पाठ मिलते हैं। एक पाठ वामन पुराण के अन्तर्गत गजेन्द्र मोक्ष यथाय से लिया गया है, जो कि पूर्णतः अनुकूल है। इसके अतिरिक्त दूसरा भी मद्भागवत् में से लिया हुआ गजेन्द्र मोक्ष पाठ है यद्यपि ये दोनों ही पाठ आपने आप में पूर्णतः अनुकूल हैं, पर महामना मालबीय और स्तोत्र-शक्ति

मद् भागवत् के प्रष्टम स्कन्ध में दिलीय अध्याय के अन्तर्गत आया हुआ गजेन्द्र मोक्ष पाठ को ही फलप्रद समझते थे।

मेरी भी ऐसी वारणा है कि श्रीमद् भागवन्तान्तरंत गजेन्द्र मोक्ष पाठ ज्यादा अनुकूल तथा मिहिप्रद है।

मझे इस स्तोत्र के प्रभाव से सब्वित कई आस्थान सुनने को मिले हैं, और कई व्यक्तियों से इसकी सिद्धि के बारे में भी जानने को प्राप्त हुआ है। जयपुर में एक बार इस स्तोत्र की परीक्षा का पुत्र आई० ए० एस० की परीक्षा दे रहे थे, दूसरे ही दिन मुख्य उनका पेपर था और उससे एक दिन पहले ही उन्हें तेज वृक्षार चढ़ आया था, वृक्षार के साथ-साथ तेज सिर दबं तथा खासी भी आई थी, ऐसी स्थिति में परीक्षा देना संभव भी नहीं था, और यदि परीक्षा दी भी जाती तो उसके लिये भली प्रकार तैयारी नहीं हो सकती थी।

श्री हरीराम जी ने मेरे सामने इस समस्या को रखा, उन्होंने बताया कि डाक्टरों का इन्जेक्शन देने से वृक्षार तो टूट जायगा पर इससे कमज़ोरी इतनी अधिक बढ़ जायगी कि यह शान्त चित्त से परीक्षा नहीं लेने पाएगा, मैंने उन्हें बताया कि इस समय और कोई उपाय नहीं है, यदि वह लड़का शान्त चित्त से मात्र गजेन्द्र, मोक्ष के ११ पाठ करले तो मझे विश्वास है कि वह परीक्षा में अवश्य ही सफलता प्राप्त कर सकेगा। मैं श्री हरीराम जी के साथ उनके घर भी गया और उनके पुत्र से यह सारी बात बताई तथा गजेन्द्र मोक्ष के पाठ की विधि भी उसे समझाई।

उसने मेरी बात तुरन्त स्वीकार कर ली और उसी समय हाथ पर धोकर पूजा-कक्ष में आसन पर बैठ गया, तथा गजेन्द्र मोक्ष का पाठ करने लग गया।

शाम को लगभग सात-आठ बजे उसने ऐसा अनुभव किया जैसे वह पूर्णतः स्वस्थ है तथा वृक्षार व खासी का नाम तक नहीं है, रात भर उसने परीक्षा को तैयारी की और दूसरे दिन प्रसन्न चित्त से आई० ए० एस० की परीक्षा दी और इस परीक्षा में पूर्णतः सफल भी रहा।

लक्ष्मण के मंगल प्राप्ति जी ने भी इस बारे में मझे अपना अनुभव बताया था कि जब अधिकारियों के पद्धति से उन्हें बैक की नीकरी से अलग कर दिया गया और उन पर जठो चार्ज लगाय गये, तो उन्होंने और किसी सिफारिश या अन्य किसी कार्य का आधार नहीं लिया, उन्होंने यह निश्चय कर लिया कि मेरी विपत्ति का निवारण गजेन्द्र मोक्ष ही कर सकता है दूलगा कोई उपाय इसके लिये अनुकूल नहीं है।

वे घर आये, और दूसरे दिन से उन्होंने नित्य ११ पाठ करने का प्रयत्न ले लिया। श्रीकृष्ण की मृति के सामने श्रीमद् भागवत् के अन्तर्गत शाये हुए गजेन्द्र मोक्ष के पाठ का त्रैम प्राप्ति हो गया।

उन्होंने बताया कि मात्र २१ दिन में ही मेरे विष्णु जो अभियोग लगाये गये थे वे निर्मल साक्षित हुए और मेरे अवहार को उचित मानते हुए मझे अतिरिक्त बेतन बढ़ि देकर स-सम्मान उसी स्वास्थ्य पर नियुक्त किया जबकि मैंने इसके लिये न तो किसी अधिकारी को कहा था और न किसी प्रकार की सिफारिश ही करवायी थी। इन २१ दिनों में गृहस्थी के कार्यों के अतिरिक्त घर से बाहर भी नहीं निकला था।

उन्होंने अपने अनुभव बताने हुए कहा था कि आज मैं सभी दृष्टियों से पूर्णतः सुखी और अपने आपको सफल मानता हूँ, मेरे जीवन का एकमात्र सहारा गजेन्द्र मोक्ष स्तुति ही है और मैंने कभी भी अपने जीवन में किसी प्रकार की असफलता का सामना नहीं किया है।

एक बार मैं गीता भवन, चृष्णि केश सत्संग में गया हुआ था मेरे साथ प्रथमन कुमार जी भी थे जो कि श्रेष्ठ अवसायी एवं धर्मात्मा व्यक्ति हैं, प्रति वर्ष वे गीता भवन सत्संग के लिये जाते हैं।

गीता भवन गये मुश्किल से सप्ताह भर चीता होगा कि घर से उनके बच्चे की सहत बीमारी का तार मिला, उसमें लिखा हुआ था बच्चा मृत्यु के निकट है, तुरन्त घर आओ। मैंने वह तार पढ़ा, प्रद्युम्न कुमार जी ने मझसे पूछा कि क्या मुझे आज ही घर रखाना हो जाना चाहिए, उसके दिल में अफसोस इस बात का था कि इस बार वे सत्संग का पूरा लाभ नहीं उठा सकेंगे।

मैंने उन्हें परामर्श दिया कि अभी तार मिला है, आज की रात यहाँ रुक जाइये मुबह घर से टेलिफोन कर बाल्तिकता जान लेंगे, और तभी आगे के लिये आवश्यक कदम उठायेंगे, इसके साथ ही मैंने उनसे आग्रह किया कि आज रात भर श्रीकृष्ण मन्दिर में हम दोनों अनवरत गजेन्द्र मोक्ष का पाठ करेंगे।

वे तैयार हो गये और उन्होंने अपनी यत्रा के बारे में भाजी कायं-क्रम मुझ पर छोड़ दिया। सायंकाल श्रीगंगा में स्नान कर हम दोनों श्रीकृष्ण मन्दिर में बैठ गये और रात भर गजेन्द्र मोक्ष का पाठ करते रहे, इस बीच हमने न तो किसी प्रकार की कोई बातचीत की थी और न तो किसी प्रकार का कोई व्यवधान ही आया, मुबह लगभग ८ बजे हम में से प्रत्येक ने १०८ पाठ पूरे कर लिये थे।

प्रातः हमने घर टेलिफोन लगाया तो वहाँ से समाचार मिला कि बच्चा स्वस्थ है और यहाँ सभी इस बात के लिये आश्रयन कर रहे हैं कि कल सायंकाल तक बच्चा भयानक रूप से बीमार था, पर आज काफी स्वस्थ है, ऐसी स्थिति में घर रखाना कोई आवश्यक नहीं है।

प्रद्युम्न कुमार जी के जी में जी आया और उन्होंने मुझसे प्रारंभना की कि आज सायं-सत्संग तक, मैं फिर गजेन्द्र मोक्ष के पाठ करना चाहता हूँ और शाम को एक बार फिर टेलिफोन कर लेंगे और उभी आग का कायं-क्रम निविच्छित किया जायगा।

मैंने उन्हें स्वीकृति देदी और मैं घर चला आया। वे सायंकाल चार बजे तक गजेन्द्र मोक्ष का अनवरत पाठ करते रहे। शाम की लगभग पाँच बजे घर से टेलिफोन मिला और उसमें जात हुआ कि बच्चा पूर्णतः स्वस्थ है किसी प्रकार की चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है।

मैंने देखा है कि गजेन्द्र मोक्ष में शद्भूत प्रभाव है। प्राथ्यात्मिक, भौतिक या दैहिक किसी भी प्रकार की समस्या को सुलझाने में यह सुनिति द्यपने द्याप में रामबाण है और इसका प्रयोग जब-जब भी मैंने किया है द्यपने द्याप में पूर्ण अनुकूल समाचार प्राप्त हुए हैं।

एक बार मैं भोपाल द्यपने एक परिचित स्वजन के यहाँ ठहरा था उनके यहाँ भेरा तीन बार दिन रखने का इरादा था। एक दिन रात को उनको पत्नी किसी तात्त्विक प्रभाव से अस्वस्थ हो गई। यथापि मैं भूत-प्रेतों में चिदवास नहीं करता परन्तु मित्र की पत्नी की डल-डलूल बाते सुनकर ऐसा लग रहा था, माना यह किसी भूत या प्रेत के प्रभाव में है।

मैंने उनकी नाड़ी देखी ठीक तरह से चल रही थी परन्तु वह द्यपने होते में नहीं थी, तथा द्यपने द्यापका एक अस्त्र स्त्री बता रही थी, जिसकी मृत्यु कुछ समय पहले हो दी थी, और वह और से चीख रही थी, और द्यपने कारण काढ रहा थी।

मूँह धाइचर्य इस बात का हो रहा था कि दाम के पाँच बजे तक पूर्ण स्वस्थ थी परन्तु याठ बदले-बदले उनको ऐसी हातत करते हो गई थी।

अपने परिचित बन्धु से पूछने पर उन्होंने बताया कि परित जी यैह क्या रोग है, किसी के तमज्ज में नहीं आता, मैं सैकड़ों डाकटरों, बैद्यों तथा हकामों की दिखा चका हूँ, तथा तरह-तरह की दवाइयाँ दे चुका हूँ। परन्तु इस रोग से छुटकारा नहीं मिलता, इस प्रकार का यह बाक्सण कमों था हो जाता है, कई बार दो-दो महीने तक नहीं होता, और कई बार एक दो दिन के अन्तराल से ही हो जाता है।

मैंने उनसे पूछा कि यह कोई डायिक प्रयोग तो इस पर नहीं है? मित्र ने जवाब दिया कि मैं सपानों और ध्यानों को भी दिखा चुका हूँ।

इधर मैं द्यपने मित्र से जानकारी प्राप्त कर रहा था और उपर

स्तोत्र-वाचिक

४३

मिल की पत्नी चण्डिका के समान अपने बाल फैलाकर घर के बत्तन लोड रही थी, तथा बच्चों को मारपीट, रखी थी।

सिंह ने मेरे कहने से पत्नी को जबरदस्ती। पलंग पर सुला दिया और मेरी ही आङ्गा के अनुसार उसके सामने बैठकर दीपक जलाकर गजेन्द्र मोक्ष का पाठ करना प्रारम्भ कर दिया।

दो तीन पाठ के बाद ही पत्नी की उन्मादावस्था शान्त होने लगी, धीरे-धीरे पूर्ववत् रूप में आने लगी, पाँच पाठ के बाद वह विलकुल शान्त ही।

मैंने गृह स्वामी से अनुरोध किया कि आज रात भर इस पाठ को करते रहे और प्रापकी पत्नी रात भर इस गजेन्द्र मोक्ष पाठ का अवश्य करती रहे, मेरे कहने से पत्नी भी शान्ति होकर पलंग के नीचे आसन पर बैठ गई।

सारी रात पाठ चलता रहा और प्रातः आठ बजे लगभग धीरुषण की आरती कर पाठ को समाप्त किया, रात भर में लगभग गजेन्द्र मोक्ष के १०० पाठ हो चुके थे।

इसके बाद कई बार उनके यहाँ जाने का मीका मिला, इस बात को लगभग ६ बयं बीत गए हैं, परन्तु आज तक बापिस उनकी पत्नी को उन्मादावस्था नहीं हुई और वे पूर्णतः स्वस्थ एवं स्थिर चित्त हैं, उनके घर में आज भी नित्य पति-पत्नी दोनों गजेन्द्र मोक्ष का पाठ करते हैं।

एक बार ऐसी ही एक घटना से मैं भी उलझ गया था। हरिहार की ही बात है मैं जहाँ ठहरा हुआ था, वहाँ रात्रि को अपना स्थान बूजा पाठ करता था और इस प्रकार मेरी साधना १० बजे रात से ३ बजे प्रातः तक चलती थी।

एक दिन सुबह चार बजे अपनी साधना समाप्त कर गंगा स्नान के लिये रवाना हुआ तो कोने में पड़ी छड़ी को अपने हाथ में पूर्वाभ्यास के अनुसार ली, कि तुरन्त एक लिजलिजा सा अनुभव हुआ। ऐसा प्रतीत हुआ जैसे मेरा हाथ सांप पर पड़ गया हो।

हुआ यह था कि सांप उस छड़ी से लिपटा हुआ था, और ज्यों

ही मैंने उस छड़ी को छुया, त्यों ही साप का सिर मेरी मृद्गी में था गया और उसने घबरा कर अपने बाकी शरीर से मेरे हाथ पर ऐठन दे दी? एक प्रकार से उसका सारा शरीर मेरे हाथ पर लिपट गया था।

यथापि मैं घबराया नहीं, परन्तु चिन्ता घबराय हुई कि ज्यों ही मैं मृद्गी खोलता हूँ, त्यों ही सांप मृद्गे डब लेगा और अच्युत की एक प्रकार की परेशानी होगी, ऐसे समय में मैंने गजेन्द्र मोक्ष का ही आश्रय लेना उपयुक्त समझा, और उसी प्रकार मृद्गी बन्दकर गजेन्द्र मोक्ष का पाठ करता-करता गंगा तट की ओर रवाना हो गया।

गंगा के किनारे पूर्वचते-पूर्वचते मेरा पाठ भी समाप्त हो गया था, और पाठ समाप्त होते ही थी कृष्ण को स्मरण कर मैंने धीरे से अपनी मृद्गी खोल ली, साप बिना हिचकिचाहट के अपनी जकड़न को छोड़कर मेरे कंधे पर से होता हुआ पीठ की ओर से नीचे उतर गया, और गंगा की रेती में आगे चलकर कहीं लो गया, इतनी देर तक मैं विलकुल निश्चित लड़ा था।

यदि मैं उस समय कुछ भी हरकत करता तो निश्चय ही साप मसे काट डालता और एक नयी परेशानी पैदा हो जाती, पर मृद्गे विश्वास था कि गजेन्द्र मोक्ष का पाठ करने के बाद इस प्रकार की कोई समस्या मेरे सामने आयेगी ही नहीं और इस प्रकार मैं उस दिन गजेन्द्र मोक्ष के पाठ के फलस्वरूप ही संपर्क से बच सका।

बिहू^४ के राजा सुमन प्रसाद सिंह ने भी गजेन्द्र मोक्ष का धर्मभूत चमत्कार मृद्गे सुनाया था, उन्होंने बताया कि मेरा ३ बयं का बच्चा विलकुल गूँगा था, मैंने सैकड़ों डाक्टरों को दिखाया पर उसका कोई शुभ फल प्राप्त नहीं हुआ था। बच्चा माझली ध्वनियों के अलावा कोई शब्द मूँह से नहीं निकलता था।

हारकर मैंने इस बारे में आपसे जिजासा प्रकट की थी और एवं मैं इसका उपाय भी पूछा था कि उस समय तक आपका मेरा स्तोत्र-शक्ति

परिचय इतना अतिष्ठ नहीं था, आपने अपने पत्र में यह बताया था कि नित्य गजेन्द्र मोक्ष का पाठ करने से तुम्हारे पृथक का गुण-पन दूर हो जायगा, और आपका पत्र प्राप्त होने के दूसरे ही दिन से मैंने गजेन्द्र मोक्ष का पाठ करना शुरू कर दिया था।

मैं नित्य प्रातः गजेन्द्र मोक्ष के ११ पाठ करता थौर मुझे ही नहीं अन्य सभी लोगों को यह जानकर अत्यन्त धाइर्य हुआ था, कि मात्र ३ महीनों में ही बच्चा बोलने लग गया था, और अब तो वह खूब घड़ने से बोल लेता है।

— — —

फिछली गमियों की ही बात है मेरे मित्र डाक्टर दिवकरण जी कार से सपरिवार अपने गोब जा रहे थे, वे डाक्टर होते हुए भी पूर्ण भगवान के उपासक हैं, और नित्य प्रातः गजेन्द्र, मोक्ष का पाठ अवश्य कर लेते हैं यद्य भी उनके जीवन में किसी प्रकार की समस्या आती है तो वे बिना हिचकिचाहट के गजेन्द्र मोक्ष का पाठ आरम्भ कर देते हैं। इस प्रकार उनका जीवन मुख्यमय अतीत ही रहा था। उनके जीवन में अभ्यास ही कुछ ऐसा पढ़ गया था जब भी कोई मुसीबत आती स्वतः ही उनके मुह से गजेन्द्र मोक्ष का पाठ प्रारम्भ हो जाता।

जब वे कार से गोब की तरफ जा रहे थे तो मार्ग में तेज वर्षा प्रारम्भ हो गई और ऐसी स्थिति हो गई कि चारों तरफ पानी ही पानी नजर आने लगा।

मार्ग में एक स्थान पर चड़ाई थी और उससे नीचे ढलान थी, उसके दोनों तरफ बड़े-बड़े घड़ थे, संयोग की बात कि सामने से आती हुई गाड़ी की गास्ता देने से उनके हाथ का स्टेटरिंग थोड़ा ज्यादा धूम गया और कार तेजी से चढ़ जो और लपकने लगी।

डाक्टर साहब के हाथ पर कूल गये और स्वतः ही उनके मुह से अभ्यासवश गजेन्द्र मोक्ष की स्तुति प्रारम्भ हो गई, डाक्टर साहब ने अपनी गालें बन्द कर ली थीं, मन में एक शण के लिये धूम गया था कि अब मैं तथा मेरा परिवार किसी भी प्रकार से बच नहीं सकता। यह गाड़ी चढ़ में गिरेगी और चकनाचूर हो

स्तोत्र-शक्ति

जायगी। इसके साथ ही हम लोगों की इहतीला भी उत्तम हो जायगी।

पर इस प्रकार दोनोंने भिन्न बीत गए उन्होंने दिमाग की लटका दिया तो जात हुआ कि गाड़ी का इतन क्षम है, और कार में सारा परिवार सुरक्षित है, उन्हे विश्वास नहीं हो रहा था कि वह सब किस प्रकार हुमा?

वे कार से नाचे उतर और उन्होंने देखा कि कार याधी खड़ के भीतर यार याधी खड़ के बाहर है, खड़ के प्रारम्भ में ही एक बड़ा धूहर का जाड़ था और कार का चमत्का भाग उस जाड़ पर जाकर टिक गया था, एक प्रकार से पुरा कार का आकार वह धूहर का पेहँ ही था, यदि कार एक इच्छा भी इच्छ-उच्चर होती तो कार मैंवडों पाठ लहड़े में जा गिरती, और इसमें क्या स्थिति होती इसकी कल्पना ही की जा सकती है।

डाक्टर साहब प्रभ के चमत्कार के द्वारा खड़ से भर आये उन्होंने प्रभ की जीवन-दान के लिये अन्यवाद दिया और किर कार का फिछला हिस्सा लोलकार पूरे परिवार को बाहर निकाला, तथा बाद में उच्चर से जाते हुए कुछ मजदूरों को बूलाकर कार की पाँछे से जीविकर याहू से बाहर सड़क पर निकाल कर लाया गया। डा० साहब आज भी अपना तथा आपने परिवार के जीवन का अंग गजेन्द्र मोक्ष स्तुति को ही देते हैं, उनका विश्वास है कि जीवन में हम किसी भी विपत्ति में उलझ नहीं सकते जब तक कि हमारे पास गजेन्द्र मोक्ष जैसा अमाप लापत विष्मान है।

— — —

मेरे वचपन की बात है, मैं अपने पिता के नाम याहू धूमने गया था। पिता जी को गजेन्द्र मोक्ष पर पूर्ण विश्वास था, और उसी के सम्मानकाल हम सब लोगों के जीवन में भी गजेन्द्र मोक्ष का प्रभाव लाभ कर रहा है।

पिता जी ने बताया था कि याहू में जब हम सब लोग नक्की तालाब में जाव पर दौर कर रहे थे कि अचानक बीच धारा में नाज उलट गई और ऐसा प्रवीन होने लगा कि अब हम सब लोगों का स्तोत्र-शक्ति

जीवन इसी जील में समाप्त होगा ।

अभ्यासवश पिता जी के मुंह से गजेन्द्र मोक्ष का पाठ प्रारम्भ हो गया । नाव चलाने वाला मल्लाह इस बीच जल में कूद चुका था और संयोग वश उसी समय एक नाव पास में से गुजरी और उन दोनों मल्लाहों ने हम सब बच्चों को उठाकर दूसरी नाव में छिठा दिया और इस प्रकार से हमारे पूरे परिवार की प्राण रक्षा हुई ।

वस्तुतः गजेन्द्र मोक्ष अपने प्राप में अद्भुत स्तुति है, मैंने अपने स्वय के जीवन में सौकड़ों बार इसका प्रयोग किया है, और जब-जब भी इसका प्रयोग किया है मुझे आशातीत सफलता प्राप्त हुई, विशेषकर नौकरी के सबध में ज्ञान से सम्बन्धित मामलों में, तथा अन्य किसी भी परेशानियों में यदि इसका प्रयोग किया जाता है, तो कुछ पाठ करने के बाद ही उसे आशाजनक सफलता मिलती है, और कुछ समय के बाद तो वह अपनी समस्या से मुक्ति पा लेता है, मेरी स्वय की नित्य की पूजा में यह पाठ सम्मिलित है ।

मूँझे विश्वास है कि यदि व्यक्ति कोई अन्य पाठ या स्तुति न भी करे तब भी उसे चाहिए कि नित्य उठाकर एक बार प्रवश्य गजेन्द्र मोक्ष का पाठ कर ले, ऐसा करने से उसके जीवन में किसी भी प्रकार की समस्या रह ही नहीं सकती । वस्तुतः कलियुग में इसे एक आश्चर्यजनक स्तुति कह सकते हैं ।

गजेन्द्र मोक्ष

एवं व्यवसितो बुद्ध्या समाधाय मनो हृदि ।
ज्ञाप परम जाप्यं प्राप्यजन्मन्युक्तिक्षितम् ॥१॥
ओम नमो भगवते तत्त्वं, यत एतच्चिददत्तमकम् ।
पुरुषायादिवीजाय परेशायाभिघीमहि ॥२॥
यस्मिन्निर्व यतश्चेदं येनेवं य इदं स्वयम् ।
यो स्मात्परस्माच्च परस्तं प्रपद्यो स्वयम्भुवम् ॥३॥

स्तोत्र-शक्ति

यः स्वात्मनीदं निजमायपरापितं
कवचिद्विभातं क्वच च तस्मिरोहितम् ।
अविद्वक् साक्ष्युभयं तदोक्षते
स आत्ममूलो बनु मां परास्त्यरः ॥४॥
कालेन पञ्चत्वमितेषु कृत्स्नशो
लोकेषु पालेषु च सर्वहेतुष्य ।
तपस्तदा सोद्गहनं गभीरं
यस्तस्य पारे भिविराजते विभुः ॥५॥
न यस्य देवा वृद्धयः पदं विदु-
जन्म्नुः पुनः को हृति गन्तुमीरितुम् ।
पथा नटस्याङ्गितिमिवच्छतो
दुरस्त्यथानुकमणः स भावतु ॥६॥
दिवृक्षबो यस्य पदं सुमगलं
विमुक्तसंगा मनयः सुसाधवः
चरन्त्यलोकवत्तमवणं वने ।
भूतात्मभूतः सुहृदः स मे गतिः ॥७॥
न विद्यते यस्य च जन्म कर्म चा
न नामस्त्रये गुणदोष एव चा
तपापि लोकाप्ययसम्भवाय यः
स्वमायपा तान्वनुकालमुच्छति ॥८॥
तस्मै नमः परेशाय बहुणे नन्तशक्तये ।
अहपापोरुपाय नम आशचयेकमर्णे ॥९॥
नम आत्मप्रदीपाय ताक्षिणे परमात्मने ।
नमो गिरा विद्वराय मनसद्वेत्सामपि ॥१०॥
सत्त्वेन प्रतिलभ्याय नेत्रस्येण विपद्धिता ।
नमः केवल्यनायाय निर्वाणं लुक्षतं विदे ॥११॥
नमः ज्ञान्ताय धोराय महाय गुणघमिणे ।
निविदेषाय साम्याय नमो ज्ञानघनाय च ॥१२॥
क्षेत्रज्ञाय नमतुम्यं सर्वाध्यजाय ताक्षिणे ॥
पुरुषायात्ममूलाय मूलभृतयं नमः ॥१३॥
सर्वेन्द्रियाण्ड्रष्टे सर्वं प्रत्ययहेतवे ।
असताच्छाययोक्ताय सदाभासाय ते नमः ॥१४॥

स्तोत्र-शक्ति

५३

नमो नमस्ते खिलकारणाय
 निष्कारणायादभूतकारणाय
 सर्वागमाम्नायमहणवाय
 नमो परार्थाय परायणाय ॥१५॥
 गुणार्थिन्दृष्टनन्नचिदूष्मपाय
 तत्क्षेभविस्फूजितमानसाय ।
 नेष्ठम्भंभावेन विवजितगम-
 स्वयम्भ्रकाशाय नमस्करोमि ॥१६॥
 मादृकप्रपत्रापशपाशविमोक्षणाय
 मृक्षताय भूरिकरणाय नमो लयाय ।
 स्वांशेन सर्वतनभून्मनसि प्रतीत-
 प्रत्यगदृढ़े भगवते वृहते नमस्ते ॥१७॥
 आत्मात्मजाप्तगृहवित्तजनेष सर्वते
 दुष्प्रायणाय गुणसंगविवजिताय ।
 मृक्षतात्मभिः स्वहृदये परिभाविताय
 ज्ञानात्मने भगवते नम ईश्वराय ॥१८॥
 यं धर्मकामार्थविमिक्षिकामा
 भजन्त इष्टां गतिमान्नवन्ति
 कि त्वाशिषो रात्परिप वेहमध्ययं
 करोतु मे दध्रुदयो विमोक्षणम् ॥१९॥
 एकान्तिनो यस्य न कर्चनाय
 वांछित ये वे भगवत्प्रपत्रा : ।
 अत्यदभूतं तच्चरितं सुमंगलं
 गायन्त आनन्दसम्ममानाः ॥२०॥
 तमशरं बहु परं परेण-
 मध्यक्षतमाध्यात्मिकयोगमध्यम् ।
 अतेन्द्रियं सूक्ष्ममिवातिदूर-
 मनन्तमाद्यं परिपूर्णमोडे ॥२१॥
 यस्य ब्रह्मादयो देवा वेदा लोकाश्चराचरा : ।
 नामहृष्पविष्वेदेन फलव्याच कलया कृताः ॥२२॥
 यथाचिष्ठो न्नः सवितुर्गंभस्तयो
 निर्यन्ति संयान्त्यसहृत वरोचिष्ठः ।

तथा प्रतीयं गुणसम्ब्रवाहो
 वृद्धिमनः खानि शरीरसगः ॥२३॥
 स वै न देवासुरमत्यंतिर्यङ्ग
 न स्त्री न वृष्टो न पुमान् न बन्धुः ।
 नायं गुणः कर्म न सब्र चासन्
 निवशेषो जयतादशोषः ॥२४॥
 जिज्ञासिवं नाहमिहामुया कि-
 मन्तवैहिश्वावृतयेभयोन्या
 इच्छामि कालेन न यस्य विप्लव-
 स्तस्यात्मलोकावरणस्य मोक्षम् ॥२५॥
 सो हं विश्वसृज विश्वमविश्वं विश्ववेदसम् ।
 विश्वात्मानमर्ज ज्ञाते प्रणतो स्म परं पदम् ॥२६॥
 योगरन्धितकर्मणो हृषि योगविभाविते ।
 योगिनो यं प्रपश्यन्ति योगेशं तं नतो स्म्यहम् ॥२७॥
 नमो नमस्तुन्यमसहयवेग-
 शक्तित्रयायाखिलवीर्याय ।
 प्रपश्यपालाय दुरन्तशक्तये
 करिन्द्रियाणामनवाच्यवत्मने ॥२८॥
 नापवेद स्वमात्मानं परच्छक्त्याहृष्याहतम् ।
 तं दुरस्यपमाहात्मयं भगवन्तमितो स्म्यहम् ॥२९॥
 एव गजेन्द्रमपवर्णितनिविष्ठ
 ब्रह्मादयो विविधलिङ्गभिदाभिमानाः ।
 नते यदीपतस्मृपुनिलिलात्मकत्वात्
 तत्राखिलामरमयो हरिराविरासीत् ॥३०॥
 तं तद्वातंमुपलम्य जगन्निवास,
 स्तोत्रं निशम्य विविजः सह संस्तुवदिभः ।
 छन्दोमयेन गहडे न समुहृमान-
 इचकायधो, न्यगमदाशु यतो यजेन्द्रः ॥३१॥
 सो न्तस्सरस्युरुवलन गहीत आतौ
 दृष्टाव गश्मति हृषि व उपातचक्रम् ।
 उत्क्षप्य साम्बजकरं गिरमाह कृच्छ्रा-
 ज्ञारायणाखिलगुरो-भगवन् नमस्ते ॥३२॥

त वी॒ष्य पी॒ष्टिमङ्गः तहरापलोप्य
सप्ताहमाशु सरसः कृपयाक्षग्नार ।
प्राहाद् विपादितम् लावरिणा गजेन्द्र
सन्धश्यतां हरितम् चतुर्ख्याणाम् ॥३३॥

नारायण कवच

नारायण कवच आपने आप में अत्यन्त अदभित एवं शोध्र कल दासक स्तुति है, कलयग में जितना शीघ्र फल यह कवच देता है। उतना हुसरा कोई कवच नहीं दे पाता, सबसे बड़ी विशेषता इस कवच में यह है कि इसके लिये व्यर्थ को न तो कोई पूजा अचंता है तथा न कोई जटिल विधि-विश्रान्, सोने-सादे इसके पाठ मात्र से भी ऐकड़ों मनुष्यों की मनोबांधित कामनाएँ सिद्ध होते हुए भैने देता है।

इस कवच की एक बड़ी भारी विशेषता यह है कि जीवन के प्रत्येक पहलु को सुलझाने में यह कवच अत्यन्त सहायक है। यदि व्यक्ति की नीकरी नहीं लग रही हो, या नीकरी में किसी प्रकार की बाधा या गई हो, अथवा उसे सञ्चान की तरफ से कोई तकलीफ हो, आदि ऐसी कोई भी घटना या परेशानी उसके जीवन में हो तो उसके लिये यह कवच अमोघ ओषधितुल्य है। भैरी व्यक्तिगत रूप है कि इस कवच का पाठ नित्य प्रत्येक घर में होता ही जाहिए।

‘इससे सम्बन्धित मने जो अनुभव तथा पठाकों, परिचितों एवं भित्रों से जो अनुभव प्राप्त हुए हैं उनमें से कुछ न नीचे दे रहा हूँ—

कलकर्ता के सेठ जौहरी जो अत्यन्त धर्मपरायण व्यक्ति थे, उनके जीवन का अधिकांश समय व्यापारिक कार्यों में अथवा धार्मिक कार्यों में ही व्यतीत होता था, परन्तु उनके जीवन की सबसे बड़ी विडम्बना यह थी कि उन्हें बृद्धावस्था में मात्र एक पुत्र प्राप्त हुआ था और वह भी मूँह से बोल नहीं सकता था। केवल कुछ इच्छियाँ ही मूँह से निकाल पाता था। छःनात वर्ष का होने के बावजूद भी उसके मूँह से एक भी शब्द नहीं निकल पा दहा था। डाकटरों ने उसे गुंगा चोपित कर दिया था, यद्यपि जोहरों जो ने इसके उपचार के लिये काफी प्रयत्न किये थे, सैकड़ों डाकटरों को

दिलाया था, उसका इलाज करवाया था परन्तु उन्हें इस कार्य में कोई सफलता नहीं मिल सकी थी। वक्तथा हार कर सेठ जी ने विधि का विश्वान समझकर यह निश्चय कर लिया था कि मेरे भाग्य में गुण पुत्र का ही सुख है।

उन्हीं दिनों कलकत्ता प्रवास में उनसे मेरा मिलना हुआ। सेठ जी अत्यन्त सरल, साम्य एवं धार्मिक प्रकृति के व्यक्ति थे और पुत्र का इतना भारी दुख होने के बावजूद भी उनके मन में किसी प्रकार की मलिनता नहीं थी। वे इसे ईश्वर का ही प्रमाद समझ रहे थे, उनके आग्रह पर मैं उनके पर गया और बच्चे से बातचीत करने का प्रयत्न किया, यद्यपि बच्चा बोलना चाहता था परन्तु समयतः कुछ ऐसी विवशता थी, या को ऐसा कारण था कि जिससे वह बालक बोलना चाह कर भी नहीं बोल रहा था। मैंने सेठ जी को श्री नारायण कवच का नित्य पाठ करने की सलाह दी और उन्हें विश्वास दिलाया कि आप नित्य पाठ करने के उपरान्त प्रभु से अपने पुत्र को अवण-शक्ति प्राप्त होने की इच्छा प्रकट करें और यवास भव नित्य इस बालक को सामने बैठाकर ही नारायण कवच का पाठ करें, उन्होंने मेरी आज्ञा शिरोधार्य कर ली, और वे भक्ति पूर्वक नित्य बच्चे को सामने बिठाकर नारायण कवचका पाठ करने लगे।

लगभग ४ महीनों के बाद एक दिन प्रातः उनका टेलिफोन मिला कि पंडित जी! बालक बोलने लगा गया था, और काफी सही शब्द मुँह से निकाल लेता है, मैंने उन्हें नारायण कवच का पाठ आगे के समय में भी करते रहने का आदेश दिया।

एक साल के भीतर-भीतर बालक भली प्रकार से बोलने लग गया और सबसे बड़ी आश्चर्य की बात यह थी कि उस बालक ने एक ही वर्ष में उतने शब्दों का ज्ञान सहज ही प्राप्त कर लिया था जितना कि कोई अन्य बालक सहज गति से विकास करता हुआ प्राप्त करता है।

ऐसी ही एक घटना लखनऊ के निवासी देवदत्त जी ने मुझे बताई थी वे सीधे-साइ तरल प्रकृति के सेवारत कर्मचारी हैं। माता

के प्रति उनका सेवा-भाव बन्दीय है, वे नित्य नारायण कवच का पाठ बारते हैं। उन्होंने एक बार नारायण कवच की प्रशस्ता करते हुए बताया कि पिछली गमियों में भी माता जी अत्यन्त बीमार थी। मैं और वह उनकी सेवा में लगे हुए थे, यात्रा के लगभग ११ बजे वा समय होगा कि माता जी जोर से चांची, मेरे पूछने पर उन्होंने बताया कि उन्हें दो काले भयानक यमदूत दिलाई हैं वे रहे हैं, मैंने उनके मंह में गंगाजल डाला और उनके पास बैठकर नारायण कवच का पाठ प्रारम्भ कर दिया, लगभग १५-२० मिनट के बाद उनके चेहरे पर शान्ति दिलाई दी और उन्होंने बताया कि अब मूँह भयानक यमदूत दिलाई नहीं दे रहे हैं, पर वे भागते हुए मुझे अवश्य नजर आ रहे हैं, कुछ समय के बाद ही उन्हें यम दूत बिलकुल ही दिलाई देने बन्द हो गए।

वस्तुतः मरणासन्न रोगी के पास बैठकर नारायण कवच का पाठ किया जाय तो निश्चय हो उस व्यक्ति की सद्गति होती है और वह किसी भी स्थिति में प्रमुखी में नहीं जाता।

भोपाल के स्वामी कीतंनानन्द जी ने भी मझे नारायण कवच के बारे में घपना एक अनभव सुनाया था, उन्होंने बताया था कि मेरे पिताजी अत्यन्त धार्मिक प्रकृति के व्यक्ति थे और मृत्यु से लगभग एक महीने पहले ही उन्होंने हम लोगों को सूचित कर दिया था कि मैं उस तारीख को मृत्यु प्राप्त करूँगा।

आखिर वह दिन भी था पहुँचा, उन दिनों वे अस्वस्थ थे हिलने-इलने की भी उनमें शक्ति नहीं थी, तथा बड़ी भूषिकाल से वे बोल पाते थे, एकाएक उन्हें ऐसा लगा जैसे दो विकराल मुख बाले व्यक्ति उनकी तरफ आ रहे हैं। उनके हाथ में मोटा मदगल तथा रस्सायी है, उन्हें देखते ही पिता जी को चोल निकल गई और उन्होंने नारायण कवच का पाठ प्रारम्भ कर दिया। उस एक मिनट के अन्तराल में मुझे भी उन्होंने नारायण कवच का जोर-जोर से पाठ करने वी आज्ञा दी। मेरे द्वारा पाठ का प्रारम्भ करने से पूर्व ही भय से वे घढ़े-मूँछित से हो गये थे।

मैं उनके पास बैठा लगातार नारायण कवच का पाठ करता रहा, लगभग शाखे घण्टे के बाद उनकी मुर्छा टटी, उनके चेहरे पर शान्ति एव सतोष के चिन्ह थे, उन्होंने बताया कि मैंने दो यमदूतों को भेरे गले में रस्सो डालते हुए देखा तो भेरी चीज़ निकल गई थी, पर मृजे नारायण कवच पर पूरा भरीसा था और इसीलिये मैंने तुम्हें नारायण कवच का पाठ करने को कहा था, अब मझे वे यमदूत कहीं भी दिखाई नहीं दे रहे हैं और चारों तरफ शान्ति का बातावरण अनुभव हो रहा है।

इसके बाद उन्हें गगा जल से स्नान कराया जाने के बदला और उन्होंने राम-राम का उच्चारण करते हुए अपना शरीर छोड़ा।

एक बार मैं किसी कार्य से अपने गाँव गया था, वहाँ एक चौधरी के घर बड़ी परेशानी थी, उसके बड़े पुत्र को भूत लग गया था और पिछले छः महीनों से वह बराबर घर दालों को तंग करता था। चौधरी ने कई सथानों को बुलाया, श्रोजाधों से भी उपचार करवाए पर किसी प्रकार वह भूत निकल नहीं सका। धीरे-धीरे वह बच्चा कमज़ोर होने लगा और छः महीनों के भीतर बच्चे का शरीर पीला सा पड़ गया, आखिं अन्दर धैंस गई और चल फिरने में भी वह अपने आप को असमर्थ सा अनुभव करने लगा।

मेरे गाँव जाने पर चौधरी मूलसे मिला और इस घटना का सविस्तार वर्णन किया, उसने बताया कि उसका पुत्र दुबला-पतला होने के बावजूद भी एक बार में ५०, ६० रोटियाँ खा लेता है भगव फिर भी उसकी भूख जान्त नहीं होती। उसका अभी एक साल पहले तो विवाह किया ही है, और यदि यही स्थिति रही तो यह बालक महीने दो महीने से ज्यादा जीवित नहीं रह सकेगा। यह कहकर वह फूट-फूट कर रोने लगा।

मैंने उसे सांत्वना दी और बताया कि यद्यपि इस जगत में भूत प्रेतों का भी अस्तित्व है, भगव इस बारे में मैं बहुत अधिक नहीं जानता, इतना अवश्य कह सकता हूँ कि यदि तुम किसी योग्य बाहुण से अपने पुत्र के सामने नित्य थी नारायण कवच का पाठ

कराते रहे तो इस समस्या से मुक्ति मिल सकती है, मैंने उसे नारायण कवच की एक प्रति भी दी।

दूसरे दिन से उसने गाँव के बाह्यण से अपने घर नित्य नारायण कवच का पाठ कराने लगा और यथा सभव यह प्रयत्न करता कि पाठ करते बबत उसका वह बालक सामने ही रहे, वह यवक कमज़ोर था खाट पर पड़ा रहता था, अतः इच्छा-यनिच्छा से वह नारायण कवच का पाठ सुनता रहता, लगभग १०-१२ दिन बीते होगे कि एक दिन नारायण कवच का पाठ सुनते सुनते वह जारों से उछला, और चिल्ला कर कहने सगा अब मैं किसी तरीके से पहाँ नहीं रह सकता, मृजे समाप्त करने वा पढ़्यन्त्र किया जा रहा है, यह कवच भेरी मृत्यु ह और ऐसा कहता-कहता वह खाट से उठा, पाँच-सात कदम दौड़ा और पृथ्वी पर गिर पड़ा।

घर वालों ने उसे उठाया और अन्दर लाकर पर्नग पर मुलाया, इसके बाद से उसका स्वास्थ सुधरने लगा तथा अगले तीन-चार महीनों में ही वह पुनः हृष्ट-पुष्ट यवक दिखाई देने लगा, उसके चेहरे पर ललाई छा गई तथा पागलपन का कोई चिन्ह उसके मन तथा मस्तिष्क पर नहीं रहा।

ऐसी ही एक घटना मेरे मित्र गोपाल जी ने सुनाई थी, उन्होंने बताया कि मैं सुवह पुजा में बैठा हुआ था, मेरे सामने बड़े पुत्र ने कहा 'कि मैं तालाब में स्नान करने जा रहा हूँ, गेरे कुछ मित्र भी हैं, पता नहीं कियो उसका यह बाल्य सुनते ही मेरा मन किसी अज्ञात आशका से कोप गया, मैं उसे मना भी नहीं कर सकता था पर रह-रह कर, मेरे मन में कई प्रकार के तरंग-वित्तके उबलने लगे, वह अपने मित्रों के साथ स्नान करने लगा गया।

वर्षा छहतु थी, तालाब नबालब पानों से भरा हुआ था, मेरे घर से तालाब मुरिकल में २ फर्लांग दूर होगा, मैं अपने पुजा कक्ष में बराबर बैठा रहा और नारायण कवच का पाठ करता रहा, यद्यपि नित्य मैं इस कवच का एक ही पाठ करता हूँ पर इस दिन किसी अज्ञात प्रेरणा में मैं लगातार इसी के पाठ करता रहा, लगभग

२०-२५ मितट ही बीते होगे कि एक लड़का दौड़ता हुआ आया और जोर से चिल्लाया रमेश बाबू डूब रहे हैं। रमेश मेरे पुत्र का नाम था, मैं हड्डवाकर उठ खड़ा हुआ, मेरे होठों से अभी तक नारायण कवच का पाठ चल रहा था, मैं तालाब की तरफ दौड़ा तब तक उसके तीन-चार मिन्ट उसे अपने हाथों में उठाये मेरे घर की तरफ आ रहे थे, मैं तुरन्त रमेश को उसके मित्रों की सहायता से घर लाया, उल्टा करके उसके पेट का पानी निकाला तब उसके पास बैठकर नारायण कवच का पाठ करता रहा।

हींश में आने पर उसने मुझे बताया कि मैं तालाब में अचानक किसल गया और मेरे मुंह में जहरत से ज्यादा पानी भर गया, मैं एक प्रकार से डूब ही गया था क्योंकि इस समय मैं तालाब के मध्य में था, परन्तु न मालूम किसी ने अपने हाथ से मुँब जोरों से घबका दिया और मैं किनारे पर अपने आपको गिरते हुए प्रनुभव किया, मित्रों ने यह भी बताया कि यह डूबते हुए अपने आप किनारे की तरफ आया था।

मैं प्रभु को महान कृपा पर गदगद हो गया, प्रभु अपने भक्तों की किस प्रकार से रक्षा करते हैं, प्रभु के अलावा ऐसा कौन अन्य हो सकता है जिसने डूबते हुए बालक को सहारा देकर किनारे पर लाकर पटका और उसको जान बचाई।

उस दिन के बाद से इस नारायण कवच पर मेरी अनन्य अद्दा हो गई है प्रीर जब भी मैं किसी परेशानी का अनुभव करता हूँ तो नारायण कवच का पाठ प्रारम्भ कर लेता हूँ इससे मुझे अपने काम में शीघ्र ही सफलता मिल जाती है।

स्तोत्र-शक्ति

चला गया, धारा बेगवती थी और मैं प्रत्यन्त तीव्रता से धारा के साथ वह रहा था, मेरे मुंह में कसेला पानी पूँग रहा था, और-और मैं बेहोश सा होता जा रहा था, पर मेरे पिताजी ने मूँझ सारायण कवच सिखाया था और नित्य पाठ करने की उनकी आज्ञा थी, इस समय भी मेरे मुंह से अनायास नारायण कवच का पाठ प्रारम्भ हो गया, एक प्रकार से मैंने मृत्यु की निकट समझ लिया था, साथी दूर किनारे पर खड़े चिल्ला रहे थे पर धारा में धूसने का उनमें से किसी को साहस नहीं था। अपने आपको मैं प्रभु के हवाले कर नारायण कवच का पाठ कर रहा था और और-और संज्ञा शून्य होता जा रहा था, अचानक ऐसा लगा कि जैसे किसी ने मुझे अवश्य दिया हो, और मैं किसी वस्तु से जा टकराया, आखे खोली तो मैंने देखा कि मैं किनारे पर पड़ा हुआ हूँ।

दो-तीन मिनट किनारे की रेती पर उल्टा पेट के बल पड़ा रहा, मेरे अन्दर का बानी बाहर निकल आया, तो मेरी सौस में सौस आई, उठकर खड़ा हो गया और प्रभु की अनेक धन्यवाद दिये, वस्तुतः उस दिन यदि मेरे पास यह नारायण कवच न होता तो मेरी मृत्यु अवश्यभावी थी और दुनिया की कोई ताकत मुझे बचा नहीं सकती थी।

विहार के रमेशचन्द्र जी मेरे लिये हैं, सद्गहस्थ हैं उनके दो पुत्र और एक पुत्री हैं। पति-पत्नी दोनों ईश्वर परायण हैं और वर्ष में एक बार मुझसे मिलने के लिये अवश्य आ जाते हैं।

कुछ समय पहले मैंने रमेश जी को नारायण कवच को प्रति दो श्री प्रांग यह कहा था कि जब भी तुम्हें किसी प्रकार की अनुष्ठिता हो, पा कोई परेशानी अनुभव हो तो तुम ईश्वर को स्मरण कर इस कवच का पाठ प्रारम्भ कर देना, अवश्य ही तुम उस समस्या से मुक्ति पाने में सफल हो सकोगे उन्होंने मेरी आज्ञा स्वीकार कर ली।

इसके तीन-चार महोंने बाद की ही बात है वे अपने गांव में शाम के समय अपने पुत्र-पुत्री तथा पत्नी के साथ भोजन करने स्तोत्र-शक्ति

६३

बैठे थे कि इतने में जोर का अन्धड़ और दृक्षान आया, और उनके उठते-उठते ही पीछे की कच्ची दोवार भहरा कर उन पर गिर पड़ी, रमेश जी लगभग बत्त से गए, परत्तु पत्ती तथा पुत्रों को क्या स्थिति हुई होगी। इस आशंका मात्र से वे घबरा उठे। पांधों का तृकान बैग से चल रहा था, उन्हे और कुछ दिखाई नहीं दिया और उन्होंने उच्च स्वर से नारायण कवच का पाठ प्रारम्भ कर दिया।

लगभग तीन-चार मिनट ही बीते होंगे कि कुछ प्रामीण धर के पास से गजर रहे थे, वे दीवार गिरी देख अन्दर आए, और सबने मिलकर इंटे हटाई, तो रमेश जी को यह देखकर सुखद प्राप्तवं हुआ कि पत्तों तथा तीनों ही सन्तान सकुशल हैं, और दीवार गिरने के बावजूद भी उन चारों के कहीं जरोंत तक नहीं आई थी, वे प्रेम से गदगद हो गये, और उसी समय घुटनों के बल बैठकर प्रभु को अनेक धन्यवाद देने लगे, महीनों तक उस गाँव में इस घटना की चर्चा होती रही, कि दीवार गिरने के बाद भी वह कौन-सी जल्ति थी, जिसके कारण बालकों को जरोंत तक नहीं आई थी, और सभी सकुशल थे।

उनके जीवन में नारायण कवच एक अनिष्ट अंग बन गया और जब भी वे किसी प्रकार की मसीहत अनुभव करते हैं तो नारायण कवच ही उनके लिये सहायक रहता है। इसका उन्होंने कई बार अनुभव किया है।

वस्तुतः नारायण कवच अपने आप में एक अद्भुत स्तुति अथवा कवच है, यदि मैं इससे संबंधित घटनाएँ लिखूँ तो एक पूरा ग्रन्थ से अधिक बन सकता है संकड़ों लोगों ने संकड़ों घटनाएँ मुझ नुनाई और बताया कि नारायण कवच के प्रभाव से ही वे अपनी लम्फस्पाय्सों से मुक्ति पा सके हैं।

प्रतिदिन स्वामी सेवानन्दजी से मुझे जब मिलने का अवसर प्राप्त हुआ तो मैंने उनसे पूछा था कि वह कौन-सी जल्ति या आराधना आपके पास है, जिसके बल से आप अत्यन्त समर्थ एवं योग्य बन सके हैं, तो उन्होंने अत्यन्त ही रहस्य भरी वाणी में मुझसे बोले,

स्तोत्र-शक्ति

६४

इस सबके पीछे केवल नारायण कवच ही है, यदि मैं यह कहूँ कि नारायण कवच प्रत्येक प्रकार के कार्य में सहायक है, प्रत्येक प्रकार की समस्याओं को सुलझाने में सहाय है, तो कोई प्रत्युक्ति नहीं होगी। जीवन में यदि साधना के बल पर ऊंचा उठना है तो उसे सबसे पहले नारायण कवच का लूदयस्य करना ही होगा और जब इस नारायण कवच पर अविकार हो जाता है, तो उसे जीवन में दैहिक, दैविक तथा भौतिक ताप नहीं ब्याप्त होते।

मेरा स्वयं का अनुभव है कि यही नारायण कवच अपने आप अत्यन्त सदाचार है, और प्रत्येक व्यक्ति को अपने पूजा जम में इस कवच को स्थान देना चाहिए।

अथं शीतारायणकवचम्

राजोवाच

यथा गृहः सहस्रासः सक्वाहान् रिपुसंनिकान् ।
कौडिप्रिव विनिवित्य जिलोव्या वृभृजे चिष्यम् ॥१॥
भगवंस्तन्ममाल्याहि वर्म नारायणात्मकम् ।
यथा तत्तायिनः शब्दन् वेन गृष्णो जपन्मूर्खे ॥२॥

श्री शुक उवाच

यतः पुरोहितस्त्वाद्वा महेन्द्रायानुपूच्छते ।
नारायणालयं वर्मांह तदिहकमना : चृणु ॥३॥
योताद्विप्रिवाणिराज्ञ्य सपवित्र उद्देश्यः ।
हृतस्वांगकरन्यासो मन्त्राभ्यां वायतः शुचिः ॥४॥
नारायणमयं वर्म संनह्येद भय जागत ।
पादयोर्जननोकर्वोद्दरे हृच्छयोरति ॥५॥
मखे शिरस्यानुपूर्व्यादो कारादीमि विम्यसेत् ।
ओम नमो नारायणावेति विपर्वंष्मयापि वा ॥६॥

स्तोत्र-शक्ति

५

६५

करन्पासं ततः कुर्याद् दादशाक्षरविशया ।
 प्रणवादिपकारान्तमगत्यंछपर्यंसु ॥१॥
 न्वसेद्यदय ओकारं विकारन्त् मूषांनि ।
 वकारं त् ख्वोमध्ये णकारं शिलया दिशेत् ॥८॥
 वेकारं न ब्रयोप्यज्याम्नकारं सर्वं संघिषु ।
 मकारमस्त्रम् हिश्व मन्त्रम् तिभवेद् बृथः ॥९॥
 सविसागं फडन्तं तत् सर्वं दिभु विनिदिशेत् ।
 ओम विष्णवे नम इति ॥१०॥
 जात्मानं परमं ध्यावेह ध्येयं वट्शवितभिर्युतम् ।
 विद्यातेजस्तपोम् तिभिमं मन्त्रमुदाहरेत् ॥११॥
 ओम हरिविद्वध्यान्मम सर्वं रसान् । न्यस्तो विष्पदमः पतगंद्व पृष्ठे ।
 दरारिचर्मासिंगदं ध्युचाप पाशान् दधानो षट्गृणो षट्वाहः ॥१२॥
 जलेषु मां रक्षतु मत्स्यं मूर्तियदीगणेभ्यां वहणस्य पाशात् ।
 स्थलेषु मायावट्वामनो व्यात् त्रिविक्रमः खे वतु विष्वरूपः ॥१३॥
 दुर्गवट्वध्यानिमुखादिषु प्रभुः पायान्नृतिहो सुररूपपारिः ।
 विमुचतो यस्य महाट्टहासं दिशां विनंदुन्यं पतश्च गम्भीः ॥१४॥
 रक्षस्वसौ माघवनि यज्ञकल्पः स्वदंष्ट्रयोग्नीतिघरो वराहः ।
 रामो द्रिक्षेद्वय विप्रवासे सलकमणो व्याद् भरतापर्जो स्मान् ॥१५॥
 मामप्रधर्मादिलात् प्रमादात्रारायणः पातु नरश्च हातान् ।
 दत्तोत्तंजयोगादय योगनायाः । पायादगृणेशः कपिलः कमबन्धात् ॥१६॥
 सनकुमारो बतु कामदेवाद्यवरीषीर्वा मां पर्वि देवहंलनात् ।
 देवविवर्यः पुरुषाच्चनान्तरात् कूर्मा हरिर्भा निरयादशांपात् ॥१७॥
 धन्वन्तरिमंगवान् पात्वपृथ्याद् द्वन्द्वाद् भयादृष्टभो निजितात्मा ।
 यज्ञद्य लोकादवताजान्ताव् बलां गणात् क्रोधवशाद्वहीनः ॥१८॥
 दुर्पायनो भगवानप्रबोधाद् बुद्धस्तु पाषण्डगणात् प्रमादात् ।
 कहिं कले: कालमलात् प्रपातु धर्मविनायोर्कृतावतारः ॥१९॥
 मां केशवो गदया प्रारब्धात् गोविन्द आसंगमात्तवेणः ।
 नारायणः प्राहू उदात्तशक्तिमध्यं दिने विष्णुररीन्द्रपर्याणः ॥२०॥
 देवो पराहणे मधुहोरधन्वा सार्यं त्रिधामावतु माघवो माम् ।
 दोये हृषीकेश उताधंरात्रे निशीष एका वतु पदमनाभः ॥२१॥
 श्रीवत्सधामापरतात्र ईशः प्रत्येष ईजो सिधरो जनादेनः ।
 दामोदरो व्यादनुसंध्यं प्रभाते, विश्वेशवरो भगवान् कालमूर्तिः ॥२२॥

स्तोत्र-शक्ति

६६

चक्र यगान्तानलतिगमनेमि, भ्रमत् समन्ताद् भगवत्प्रयुक्तम् ।
 दं दिग्ध दं दग्धपरिसंवामाश कक्षे पथा वातसलां हृताशः ॥२३॥
 गदे शनिस्पशं नविस्फुलिंगं निषिष्ठिष्ठ निषिष्ठृजिताप्रियासि ।
 कृष्णाङ्गवेनायकवक्तरलोन्तप्यहांश्वर्णं चूर्णयारीन् ॥२४॥
 त्वं पातुधानप्रथमप्रेतमातृपिताचविप्रप्रहयोरवृष्टीन् ॥२५॥
 देवेद विद्रावय हृष्णापूरितो भीमस्वनो रेहदयानि कम्पयन् ॥२५॥
 त्वं तिमवारासिवरारिसंन्यमीदप्रयुक्तो मम छिन्धि छिन्धि ।
 चक्षंषि चर्मञ्जलवन्द छादय हिष्वमधोना हर पापचक्षुषाम् ॥२६॥
 यज्ञोभयं प्रहेष्यो भूत केतुष्यो नूष्य एव च ।
 सरोसंपन्नो देविष्यो भूतेष्यं होन्य एव च ॥२७॥
 सर्वार्थेतानि भगवद्वामरपालकीतंनात् ।
 प्रयान्तु संक्षयं सद्यो ये नः ध्येय प्रतीपकाः ॥२८॥
 गरुदो भगवान् स्तोत्रस्तोभद्रद्वन्द्वोमयः प्रभुः ।
 रक्षत्वशेषहृष्टेभ्यो विद्रवसेनः स्वतान्मभिः ॥२९॥
 सवपिद्यो हेनमहृपयानामृधानि नः ।
 वृद्धीनिदियमन प्राणान् पान्तु पर्वदभ्युषणः ॥३०॥
 यथा हि भगवानेव वस्तुतः सदसच्च यत् ।
 सत्येनानेन त संवयान्तु नाशमपद्वाः ॥३१॥
 यथेकौस्त्र्यान्नभावनानां विकल्परहितः स्वयम् ।
 भवेण्युवलिगालया घते शक्तिः स्वमायया ॥३२॥
 तेनेव सत्यमानेन सर्वज्ञो भगवान् हृषिः ।
 पातु सर्वं स्वलूपेनः सदा सर्वं सर्वगः ॥३३॥
 विदिक्षु विलूप्वन्धः समन्तावन्तर्बहिर्भंगवान् नारात्तिह ।
 प्रहापयलोकमयं स्वतेन स्वतेजसा प्रस्तुतमस्तेजाः ॥३४॥
 मधवविदमाल्यातं चर्म नारायणात्वकम् ।
 विजैव्यस्यंजता पेन दं वितो तुरयुपयान् ॥३५॥
 एतद् धारयमाणस्तु यं यं पदवति चत्रवा ।
 पदा वा संस्पृशेत् तत्यः साधवसात् त विमच्यते ॥३६॥
 त कुतिविद भयं तस्य विद्यो धारयतो भवेत् ।
 राजदस्युप्रहादिष्यो व्याघ्रादिम्यश्च रुहिचित् ॥३७॥
 इतो विद्यां पुरा कविचत् कौशिको धारयन्त द्विजः ॥
 योगधारणया स्वांग जहोस मदधन्वनि ॥३८॥

स्तोत्र-शक्ति

६७

तस्योपरि विमानेन गम्यवंतिरेकदा ।
 पयो जित्ररथः स्त्रीभिष्टो पत्र दिजक्षयः ॥३९॥
 गणनान्यपतत् सद्यः सर्विमानो हृष्वाक्षिराः ।
 स बालशित्यवचनादस्थिग्यादापि विस्मितः ।
 प्रास्य प्राचीसारस्वत्यां स्नात्वा धाम स्वमन्वगतत् ॥४०॥

श्रीशुक उवाच

य हृष्णं भृण्यात् काले यो धारयति चावृतः ।
 त नमस्यन्ति भूतानि मध्येत सवंतो भयात् ॥४१॥
 एतां विद्यामधिगतो विद्यवहपाच्छतक्तुः ।
 ब्रंलोक्यलक्ष्मीं बुभूजे विनिजित्य मूर्खे सुरान् ॥४२॥

सुदर्शन कवच

सुदर्शन कवच, रक्षा ऐ सम्बन्धित कारणों में अत्यधिक कलप्रद
 माना गया है, मनस्य भौतिक अथवा आत्मात्मिक रूप से कैसी
 भी परेशानी से प्रस्त हो यदि वह सुदर्शन कवच का पाठ करता
 है तो उसे जीवन में किसी भी प्रकार को समस्या देनानी नहीं पड़ती।
 मैंने स्वयं सुदर्शन कवच का कई बार पाठ किया है और जब-जब
 भी मैं मानसिक परेशानियों से बुझा हूँ उन्हीं क्षणों में इसने ढाल
 की तरह मेरी रक्षा की है, और मैं उन यत्नाओं से प्रोत्त्राति-
 शीघ्र मुक्त हो सका हूँ।

पूरे भारत और विदेशों में फैले मेरे मित्रों, परिचितों एवं
 भक्तों के पास जाते रहने का मौका मझे मिलता ही रहता है, कई
 स्थानों पर मैंने इस कवच की प्रशंसा सुनी, और जिन-जिन लोगों
 ने इस कवच से लाभ उठाया है उनको सल्ला अत्यधिक है। मैंने
 जब भी किसी व्यक्ति या परिचित को परेशान या दुखी देखा है,
 उसे सुदर्शन कवच के पाठ करने की सलाह दी है और कुछ
 ही दिनों के बाद उसने राहत का धन भव किया है। सुदर्शन कवच
 की प्रशंसा के बारे में जितना भी लिखा जाय वह कम है। मैं नीचे
 के पृष्ठों में कुछ ऐसी सत्य पटनाएँ दे रहा हूँ जिन्हे विश्वस्त
 व्यक्तियों ने धनभव किया है और मूँझे सुनाई है—

पटना के मेरे परिचित बन्धु हरीराम जी ने अपने पुत्र का
 किसी सुनाते हुए बताया था, कि मेरे पुत्र लगभग सोलह-सतरह
 साल का है वह और तो कुछ पूजा या विविध विधान नहीं करता
 पर सुदर्शन कवच का पाठ नित्य एक बार अवश्य कर लेता है,
 इससे धीरे-धीरे कुछ अन्यास ऐसा बन गया है कि जब भी वह
 किसी भी परेशानी में होता है या किसी प्रकार की बाधा अनुभव
 करता है तो उसके मूँह से स्वतः ही सुदर्शन कवच का पाठ आरम्भ
 हो जाता है।

८ तोत्र-शक्ति

करते हैं, और इससे वे अत्यधिक लोकप्रिय हो गए हैं।

एमी ही एक घटना मूँजे मेरे भक्त महेश कुमार ने बताई थी, उसने बताया कि एक बार मैं कदमीर गया था, केगरबाही से होता हुआ मैं ज्ञेयियर की तरफ जा रहा था। प्रातःकाल का समय था उस समय ज्ञेयियर का बहाव कम होता है प्रतः सुविधा से उस पानी के बहाव की पार किया जा सकता है, पर्याप्त सूख की किरणें खड़कने लग गई थीं और पानी का बहाव भी बढ़ गया था पर इतना अधिक बहाव नहीं था कि उस पार न किया जा सके, अतः मैंने ईश्वर का नाम लेकर उसको पार करने का निश्चय कर किया, पर्याप्त मूँज मना करते रहे, मैं उस बहाव के साथ-साथ बहने लगा, तेज बहाव और उस पर ठड़ा बक्क का पानी, मेरे सारे शरीर को सुख किये जा रहा था, अचार्यहट में मूँजे कुछ भी नहीं थुका और मैं हम से अनायास ही सुदृश्यन कवच का पाठ प्रारम्भ हो गया। लगभग ३-४ मिनट के बाद मैं संज्ञा गूँन्य सा हो गया था, जब होश में आया तो मैंने देखा कि मैं अपने मित्रों से घिरा हुआ हूँ और मेरे मित्र मेरे सिर की तथा सीने की मालिस कर रहे हैं, पूछने पर उन्होंने बताया कि तुम्हें बहाव में बहते हुए देखकर हमारे तो हाथ-पांव फल गये थे, और यह विश्वास हो गया था कि अब महेश किसी भी प्रकार से बच नहीं सकता, परन्तु कुछ ही गज बहाव में बहने के बाद तुम एक छट्टान से टकरा गए थे और तुम्हारा शरीर उस छट्टान पर टिक गया था, बड़ी कठिनता से उस छट्टान से तुम्हे किनारे तक ना सके हैं, और भगवाम को लाल-लाल धन्यवाद है कि उसने तुम्हारी जान बचा ली। वे भगवान को धन्यवाद दे रहे थे और मैं सुदृश्यन कवच की धन्यवाद दे रहा था जिसकी बजह से मैंने एक बार पुनः नया जन्म पाया था।

इसके बाद मैं जब-जब भी इस प्रकार की परेशानियों या समस्याओं से उलझा हूँ तो मेरा एकमात्र सहारा सुदृश्यन कवच ही रहा है और मैं बाल-बाल उन सकटों से बचता रहा हूँ।

स्तोत्र-शक्ति

एक दिन वह आम के पेड़ की ऊंची डाल पर बैठा हुआ था, आम पके हुए थे और वह आम को तोड़ने के लिये और ऊँचा चढ़ रहा था कि हठात् उसका पैर फिसला और घड़ाम से नीचे आ गिरा, पर्याप्त वह कमर के बल गिरा था परन्तु गिरते ही एक प्रकार से बेहोश सा हो गया था, मुँज जात होते ही गे दोढ़ा हुआ गया और उसे तुरन्त प्रस्पताल पहुँचाया, मेरी बुद्धि उस समय कुछ काम नहीं कर रही थी, मेरे मृह से केवल सुदृश्यन कवच का पाठ हो रहा था और मुँजे कुछ भी राह दिखाई नहीं दे रही थी। नगर के प्रसिद्ध डाक्टर श्रीवास्तव ने देखा और निण्यं सुनाया कि बच्चे के सिर में गहरी चोट लगी है, अतः अड़तालीस घटों से पहले होश में नहीं आ सकता, यह सुनते ही मेरी हालत कटे पक्षी की तरह हो गई। उसे ग्लूकोज चढ़ाया जा रहा था, पर मेरा अन्तर-मन कह रहा था कि यदि मैं इसके पास बैठकर सुदृश्यन कवच का पाठ करूँ तो अवश्य ही इसके प्राण बच सकते हैं, और यह श्री धार्तिशीघ्र होश में आ सकता है, मैं प्रस्पताल के बाहर में उसके पास ही बैठ गया और धीरे-धीरे सुदृश्यन कवच का पाठ प्रारम्भ कर दिया।

हरीराम जी ने यह अनुभव सुनाते हुए मुँजसे कहा पंडित जी ! आप शायद विश्वास नहीं कर, मैंने केवल उसके पास बैठकर ११ बार सुदृश्यन कवच का पाठ ही किया था कि उसने आंखें खोली और मुँज अच्छी तरह से पहचाना तुरन्त डा० श्रीवास्तव को टेलीफोन किया गया, वे आए, और उन्होंने जब बच्चे को होश में आया हुआ देखा तो आश्चर्य लकित रह गए, उन्हे विश्वास नहीं हो रहा था कि सिर में इतनी सांघातिक चोट लगने के बाद भी बालक इतनी जल्दी होश में कैसे आ गया जब उन्हे बताया गया कि मैंने इसके पास बैठकर सुदृश्यन कवच का पाठ किया था, तो एक बार तो डाक्टर साहब को विश्वास नहीं हुआ, पर जब उन्होंने इसी प्रकार के प्रयोग और भी कई रोगियों पर किये तो उन्होंने पाया कि बस्तुतः यह कवच इस प्रकार के मामलों में अद्भुत है और प्रत्येक बार इसका परिणाम अनुकूल ही रहता है, आज भी डाक्टर इस कवच के अनन्य भवत है और पूर्ण वैज्ञानिक होते हुए भी इस प्रकार के कार्यों में रोगियों पर वे इस कवच का प्रयोग

मेरे गाँव की ही घटना है किसी लाल कुम्हार अत्यन्त धर्म-परायण व्यक्ति है उसने मुझसे कोई एक स्तोत्र सीखने की जिद् को तो मैंने कुछ दिनों के प्रयत्न से उसे सुदर्शन कवच माँखिक याद करवा दिया वह कुछ पढ़ा लिला भी था और यिका क्रम में संस्कृत भी एक चिप्य रहा था, अतः आसानी से वह सीख गया।

पिछली गमियों की ही बात है उसने मुझे अपना संस्मरण मूलते हुए बताया, कि एक दिन वर्षा में जब दिन भर के अकेमादे बैलों की जरने के लिये रात को छोड़ दिया था, तो एक बैल अधेरे की बजह से एक खड़दे में गिर गया और वह खड़दे में कुछ इस प्रकार गिरा कि प्रयत्न करने के बावजूद भी उसको निकालना आसान न रहा।

जब चरवाहे ने मुझे यह सुनना दी तो मैं ध्वरा गया। मेरी खेती का एक भाग आधार ही मेरे बैल थे। उनमें से भी यदि एक बैल टट जाता है तो मेरी दुनिया निश्चय ही अधकारमय हो जायगी, मैंने हाथ में लालटेन ली, प्रभ से प्रार्थना की कि उस मुक पशु की रक्षा करना, ऐसा न हो कि गोदड़ उसको खा जाएँ और इस प्रकार मैं इस वर्ष अपनी खेती से बचित हो जाऊँ। उस समय मूँझे आप द्वारा बताई गई स्तुति याद आ गई, मैं लालटेन लिये मांग पर बढ़ रहा था, और मेरे होठों से सुदर्शन कवच का पाठ चल रहा था।

जगल में मैं काफी धूमा पर मुझे वह बैल कहीं दिखाई नहीं दिया। वर्षा करनु होने से रास्ता भी भल नहीं, तो न-बार घट्ट भटकने के बाद जब मुझे बैल नहीं मिला तो मैं घर लौट आया, और सारी रात सुदर्शन कवच का पाठ करता रहा। मुझहं जब मैं गोशाला गया तो वहाँ पर भी मेरा बैल नहीं था, पर उस समय मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा, जब मैं वापिस घर लौटा तो मेरे पर के दरवाजे पर वही बैल खड़ा था, उसके शरीर पर किसी भी प्रकार के चोट के निशान नहीं थे, भयानक वर्षा की अधेरी रात जगल में खड़दे में गिर जाने के बाद भी वह बैल उस कीचड़ भरे खड़दे से कैसे निकल आया, और खड़दे में गिरने के बावजूद भी उसे किसी प्रकार की चोट नहीं लगी, यह परमात्मा की असीम हृषि यी या सुदर्शन कवच का ही प्रभाव था कि जिसने उस दिन

मेरे बैल की रक्षा कर ली, और इस प्रकार मैं एक गंभीर हानि से बच गया, उसके बाद कुम्हार का यह पवना नियम बत गया कि वह तब तक भोजन नहीं करता था जब तक कि वह एक बार सुदर्शन कवच का पाठ नहीं कर लेता।

इसी प्रकार की एक घटना ठाकुर बलभद्र तिहं जी ने मुझे मूलाई थी, उसका भेरा परिचय बापों बयों का रहा है, एक बार भाइपद की अवधी रात में मूलावार बर्बाद हो रही थी, बिजनों जोरों से बड़क रही थी, और ठाकुर साहब याने दो बच्चों तथा पत्नी को लेकर अपनी पुरानी हवेलों में सो रहे थे, याचानक उन्हें कुछ झटका सा महसूल हुआ और ऐसा अनुभव हुआ जैसे यह पुरानी हवेली इस भयानक तुकान का सामना नहीं कर सकेगी, रात के लगभग दो बजे होंगे कि उन्हें विचार आया कि मझे अपनी पत्नी तथा बच्चों को लेकर पूजा गृह में जाकर बैठ जाना चाहिए, वे उठे उनके मुंह से सुदर्शन कवच का पाठ चल रहा था, और ज्योही वे अपनी पत्नी तथा पुत्र को लेकर कपरे से बाहर निकाले कि वह कमरा तुकान के जोरों से भहरा कर गिर पड़ा, यदि एक थण्डी भी विलम्ब होता तो ठाकुर माहब या पूरा परिवार उसी में दब कर 'हमेशा-हमेशा' के लिये समाप्त हो जाता।

इसके बाद वे सारी रात पूजा गृह में बैठे रहे जो कि उसे कमरे से सटा हुआ था। पर इसका बाल भी बाकी नहीं हुआ था। जैसा आज भी इस बात पर यास्चर्य प्रकट कर रहे हैं, कि वह कौन नी शक्ति थी जिसने मुझे रात की दो बजे उठने के लिए बाह्य किया और पली तथा बच्चों के साथ कमरे से बाहर निकालने को प्रेरणा दी? यदि मैं पौत्र मिनट और उस कमरे में विताता तो आज मैं पह अनुभव मुनासे के लिये जीवित नहीं रहता।

ठाकुर साहब की पूजा में केवल सुदर्शन कवच का पाठ ही है, इसके अलावा वे किसी प्रकार की काई पूजा या विविध विज्ञान नहीं रखते, उन्होंने इस कवच से सम्बन्धित सेकड़ों पटनाएँ मुझे बताईं, उन्होंने कहा कि आज मैं यदि जीवित हूँ तो केवल इस स्तोत्र-शक्ति

कवच के प्रभाव से ही। उन्होंने अपने जीवन की एक और घटना मुझे सुनाई थी।

एक बार ठाकुर साहब अपनी पत्नी, माता जी तथा बहिन को लेकर अपने समुराल जा रहे थे, उस समय बैलगाड़ियों से आवागमन जादा होता था। और बैलगाड़ियों भी रात के ठंडे पहर में चलने में मुश्विया अनुभव करती थी।

ठाकुर साहब ने किसी बताते हुए कहा कि मेरी पत्नी तथा बहिन के शरीर पर काफी गहने थे, जब बैलगाड़ी मेरे गाँव से लगभग ८-१० मील दूर निकल गई तो मार्ग में सुस्ताने के लिये हमने पांच-सात मिनट रुकने का निष्पत्य किया, अभी हम भली-प्रकार से ठहर हो नहीं पाये थे कि चार-पांच लट्ठधारी न मालूम किधर से आये और हम लोगों को चारों प्रोटर से घेर लिया, निष्पत्य ही उनका विचार हमें लटने का था और पदि हम जोर जबरदस्ती करते तो प्राण भी ले लेने की उनकी नीयत थी। गाड़ी बाला प्रलग लड़ा थर-थर कोप रहा था। मेरे पास तलबार के ग्रलावा कोई ऐसा वास्त्र नहीं था कि जिससे उन पांच-छः लाठीधारियों से मकाबला कर सकूँ। मैंने अपने आपको भगवान के भरोसे छोड़ दिया और मैंह से मुदर्शन कवच स्वतः ही प्रारम्भ हो गया।

पड़ित जी! आपको आश्चर्य होगा कि इस प्रकार दो-तीन मिनट भी नहीं बीते होंगे कि सामने बाले रास्ते से तेजी से दौड़ते हुए दो चुड़सवार आए, और उन्होंने उन चार-पांच लाठी-धारियों से बिना कुछ कहे सुने ही मुकाबला करना शुरू कर दिया, मामूली से प्रतिरोध के बाद लट्ठधारी भाग खड़े हुए।

चुड़सवार बोले ठाकुर साहब आपको रात में बिना पूरी रक्षा के नहीं निकलना चाहिए था, आप तो हमें जायद नहीं पहचानते पर हम आपको जानते हैं, अब आप जाइये आपको मार्ग में किसी प्रकार से कोई तकलीफ नहीं होगी।

उस दिन से याज तक उन चुड़सवारों के वापिस दर्शन नहीं हुए और न मैं उन्हें पहचान सका कि वे कौन थे और वे मेरी मदद करके किधर चले गए? उस दिन इस मुदर्शन कवच ने ही मेरी दृजन्त जन तथा प्राणों की रक्षा की थी।

धावू राम सहाय ने भी इसी प्रकार की एक घटना मुझे बताई थी, एक बार बाबू राम सहाय व्यापार के बाबे से बीबीस हजार हपये लेकर बम्बई गये उन्हें पांगेश्वरी दिनी बायं से जाना था। नेन्टुल स्टेशन पर उत्तर कर उन्होंने टैक्सी निराये पर की ओर अपने गन्तव्य स्थल की ओर बढ़ गए।

पर ऐसा प्रतीत हो रहा था कि टैक्सी ड्राइवर को कुछ ऐसा अनुभाव हो गया था कि इस धासामी के पास भारी रकम है, अतः मार्ग में एक स्थान पर जान दूँफकर उसने टैक्सी रोक दी और बताया कि टैक्सी में कुछ लराबी हो गई है। मैं अभी दूर किये देता हूँ। उस समय रायि के लगभग साढ़े-दस ब्यारह बज था। एक मिनट के बाद ड्राइवर ने मैंह से सीटी बजाई कि एक दूसरा व्यक्ति तहमद बांधे मेरे नामने पालडा हड्डा और एक लम्बा ला चाकू दिलाते हुए मालये बोला तुरन्त यात्रा में जो रक्षा-पैसा है वह निकाल कर दें दो, अन्यथा यह पूरा का पूरा चाकू भी मेरे पूरे जाएगा। मेरे हाथ में घटेचोंपी और उस घटेचों में बीबीस हजार हपये के नोट थे। मैंने उस घटेचों को कम कर पकड़ ली। प्रभु को सहायता के लिये पुकारा और मैंह से स्वतः ही मुदर्शन यावच का पाठ प्रारम्भ हो गया।

अचानक मेरे हाथ को छटका लगा और मैंने देखा कि तहमद बाला व्यक्ति मेरे हाथ से घटेचों छीनकर भाग रहा है, ममवतः टैक्सी ड्राइवर तथा उस व्यक्ति का कोई यूत समझीता था पर उस समय टैक्सी ड्राइवर को ऐसा लगा कि वह अकेले ही लारा-हपया लेकर भाग रहा है, अतः वह भी उसके पीछे भागा और आठ-दस कदम पर ही उसे दबोच लिया। दोनों आपस में गृहम-गृह्या हो गये, घटेचों हाथ से छिटक कर एक तरफ जा गिरी, और मैंने देखा कि दोनों ने चाकू निकाल लिये हैं। मैं सौंप रोके इस घटना को भयानुर होकर देख रहा था, अचानक मैंने देखा कि ड्राइवर के हाथ का चाकू उस तहमद बाले व्यक्ति के सीने में पूरा का पूरा पूरा गया है पर इन चाँच तहमद बाले व्यक्ति का चाकू भी ड्राइवर के पैट में दो-तीन बार घक्क चुका था, दोनों अवक्त होकर पास-पास पड़े हुए थे जून बह रहा था, और कुछ ही मिनटों में तड़फ कर दीनों वहीं जान्त हो गये।

स्तोत्र-याति

इसी समय एक पुनिस-मैन वहाँ आ गया, मैंने उसे सारी बात बताई, वह भला व्यक्ति था उसने अटेंचो उठाकर कृपचाप चले जाने को कहा, नहीं तो व्यवं में और कई समस्याएँ पैदा हो सकती हैं। भगवान का लाख-खाल वन्यवाद दिया और तुरन्त वहाँ से अटेंचो लेकर रवाना हो गया, उस दिन सुदशंन कवच के प्रभाव से ही मैं अपने प्राण और धन की रक्षा कर सका।

वस्तुतः सुदशंन कवच अपने धार में अद्भुत प्रभावकारी स्तुति है, मैंने संकड़ी व्यक्तियों को इसके पाठ करने को सलाह दी है, और इन लोगों ने यह अनुभव किया है कि विपत्ति के समय इस कवच की कुछ पंक्तियों का हो पाठ हो जाता है तो वह तुरन्त प्रभाव देने लग जाता है। आवश्यकता इस बात की है कि इस कवच का पाठ नित्य एक बार अवश्य हो जिससे कि विपत्ति पहुँचे पर यह कवच उसके लिये स्वतः सिद्ध हो, और इसका लाभ मिल सके।

वस्तुतः इस कवच का नित्य पाठ करना शाज के द्युग में प्रत्येक व्यक्ति के लिये अनुकूल एवं श्रेष्ठकर ही माना जाना चाहिए।

सुदशंन कवच

ओम अस्य श्री सुदशंनकवचमालामन्त्रस्य । श्रीलक्ष्मीनृसिंहः परमात्मा देवता । सम सर्वकार्यसिद्धये जये विनियोगः । ओम लाङं अंगुष्ठान्यां नमः ओम हृषीं तज्ज्ञीभ्यां नमः । ओम श्री भृष्मान्यां नमः । ओम सहस्रार अनामिकान्यां नमः । ओम हुं कट्टकनिष्ठिकान्यां नमः । ओम स्वाहा करतल-कर पृष्ठा-भ्यां नमः एवं हृदयाति ।

ध्यानम् उपास्महे नृसिंहावयं ब्रह्मवेदाम्तगोचरम् । भूयो लालित-संसार छठेदहेत् जगद्गग्नम् ॥

मानस-पूजा: ल पूर्विद्यात्मक गन्य समर्पयामि आकाशात्मकं पुरुषं समर्पयामि । यं वाय्वात्मकं धूरं समर्पयामि । रं वहन्यात्मकं

स्तोत्र-शक्ति

७६

द्वौपं समर्पयामि । वं अमृतात्मकं नेवेत्तु निवेदयामि । सं सर्वात्मकं ताम्बलं समर्पयामि । नमस्करोमि ।

ओम सुदशंनाय नमः । ओम जां हृषीक्षो नमो भगवते प्रलयकालमहाज्वालाधीर-बौर-सुदशंन-नाराजिहाय ओम महावक्षराजाय महावलाय सहस्रकोटिसुव्रकाशाय सहस्रदीवर्णाय सहस्राक्षाय सहस्रपादाय संकरणात्मने सहस्रदिव्याम-सहस्रहस्ताय सर्वतोमध्युच्चलन-ज्वालामालावृताया विस्कुलिंगस्कोटपरिस्कोटित ब्रह्माण्ड भाण्डाय महापराक्रमाय महायज्ञस्त्राय महाविराय महाविष्णु-हपिणे व्यतीतकालान्तकाय महान्द्रवौद्रोद्वावताराय सत्यस्वरूपाय किरीटहार-केषुर-पैदेय-कटकांगस्त्रीय-कटिसुप्त-मंजोरादिकनकमणि-सचित विष्वभूषणाय महान्मोक्षाय महान्मोक्षाय व्याहततेजोऽप-निषेय रवतचण्डान्तक मणितमदोरुष्टादुनिरोक्षमाण प्रत्यवाय ब्रह्मचक्र विष्णुचक्र-कालचक्र-भूमिचक्र-ज्ञानयाय जाग्रितरक्षाय ।

ओम सुदशंनाय विद्महे महाज्वालाय शीमहि । तप्रश्चकः प्रचोदयात् इति स्वाहा स्वाहा (दो बार) भो भो सुदशंन नारासिंह मां रक्षय रक्षय ।

ओम सुदशंनाय विद्महे महाज्वालाय शीमहि । तप्रश्चकः प्रचोदयात् ॥ (दो बार)

सम शत्रुघ्नाशय नाशय । ओम सुदशंनाय विद्महे महाज्वालाय शीमहि । तप्रश्चकः प्रचोदयात् ॥ (दो बार)

ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल चंद्र चंद्र प्रचंद्र प्रचंद्र स्फुर स्फुर प्रस्फुर घोर घोर घोरतर घोरतर चट चटं प्रचंट प्रचंट प्रस्फुट दह कहर नग भिंषि हृषि छटट प्रचट कट जहि जहि पय सस प्रलयवा पुरुषाय रं रं नोर्मिलपाय । ओम सुदशंनाय विद्महे महाज्वालाय शीमहि । तप्रश्चकः प्रचोदयात् (दो बार)

भो भो सुदशंन नारासिंह यो रक्षय रक्षय । ओम सुदशंनाय विद्महे महाज्वालाय योमहि । तप्रश्चकः प्रचोदयात् ॥ (दो बार)

एहि एहि आगच्छ आगच्छ भूतप्रह प्रेतप्रह-पित्राचप्रह-दानवप्रह कृतिमप्रह-प्रपौष्टिमप्रह-जावेशप्रह-आगतप्रह-जनागतप्रहान बहनप्रह-कृपह-प्राप्तात्म-निराकारप्रह-आचारअनाचरप्रह-नानजातिप्रह-भूकरप्रह-खेचरप्रह-बृक्षचरप्रह-योजित्तरप्रह-गिरिधरप्रह-शमशानचरप्रह-जल-चरप्रह-कृपचरप्रह-देवारचलप्रह-गृण्याचारचरप्रह-स्वप्नप्रह-दिवामनो

स्तोत्र-शक्ति

७७

ओम सुवर्णन विष्महे महान्वालाय धीमहि । तप्तवृक्षः प्रचो-
दयात् ॥ (दीप द्वारा)

जोम वां वीं लं लं भी अः जो भी घं घो अः हो ही हूं हूं
हो हूं हः यो व्ही घं घे प्रो प्रः वी वी व वे व्हो अः ।

ओम शुद्धनाय विद्महे महाक्षात्य धोमहि । तत्प्रवचः
प्रथोषपात् ॥ (दी बाट)

एहि एहि सालवं संहारय दारने चांदय विद्वावय विद्वावय भेरवं
भीषय भीषय प्रत्यंगिर् पर्वय मर्वय चिदम्बरं दण्डय धन्दय विदम्बरं
प्रातय प्रातय दाम्भेष्वा निवतंय निवतंय काली दह दह मवित्तुरी
चेदय छेदय कुष्टशक्ति निर्मलय निर्मलय कृ ह हू मृदु यद परम्पर-
परयंत्र-परतत्र कटपर याहुपर वेष्पुर अप पर होमपर तदवदोप-
कोटिपूजा भेदय भेदय मारय मारय लंडय लंडय परकातक विव-
निविष्ट कुरु कुरु वस्तिमत्र प्रकाश नामाविष्ट-कृत्य-वनवत्त-
प्रहान् चूलय चूलय मारी विद्वारय विद्वारय कथा द वनापह पारी-
चगण, न भेदय भेदय मंजापरस्माकं विमोदय विमोदय जतिशत-
कुवित्ताल-गुलबाल-नाईवाल-यादशत्त-स्वर्वादाचा निवारय विद्वारय
पाहुरोग संहारय संहारय विषमन्तर वातय प्रातय एकाहिंक द्वाहिंक
प्रवाहिंक चातुर्पिंक पंचाहिंक षट्क्षयर लक्ष्मनवत्तरं लक्ष्मनवत्तरं
नमध्यवत्तरं प्रेतवत्तरं भूतवत्तरं विद्वावय वासेवत्तरं भूताकालवत्तरं
कुर्माकवरं बहुविष्णवत्तरं बोद्धवत्तरवरं चतुर्वादीपीयिनी विव-
र्गधर्ववत्तरं वेतालवत्तरं एतान् जागराद्वादाय नाशय दीपय मध्यय मध्यय
कुर्दितं हह द्वादशवत्तवामुकि लक्षक कालीय पद्म लुकिल कालोदक
दात्र प्राताध्यनामाकुलानामि लिख हन हन लं लं धं धं प्रातापत्त नाशय
नाशय लिलिङ्ग लंदय लंदय लंदय लंदय लंदय लंदय लंदय
लंदय लंदय लंदय लंदय लंदय लंदय लंदय लंदय लंदय लंदय
भासय भासय नामानारायनामाय वंचासाद्वच्चकाय लत लत

स्वीकृत-ग्रन्थ

शारधागतरक्षणाय हृषि गं वं गं शं शं अपवर्मनये तन्यं नमः ।
जो मुहूर्मनय विद्यते महाक्षणाय वीर्याहि । तत्त्वाद्यः
प्रत्योदयत ॥ (दो भार)

भी जो मुद्रांग सार्वतित था उत्तम रक्षय । जोम सुदृढ़संवाद
विद्महे महाकवाणाप धीरहि । तपश्चक प्रश्नोदयात् ॥ सम सर्वा-
तिद्वायाति कुष कुष तांत्रितो इति रक्ष जोम हीं हृष्ट रक्षाहा । जोम
ली हुय वी सहस्राहा हृष्ट रक्षाहा ।

四百一

बगला मुखी कवच

बगला मुखी कवच अपने आप में विश्व-विरुद्धात है, क्योंकि इसकी उपासना और साधना कोई व्यक्ति करते हैं, और इसका कल उठाते हैं। बगला मुखी कवच की बड़ी भारी विशेषता यह है कि यह कवच मरुष्यतः शत्रु-हन्ता है। शत्रुओं को दमन करने, शत्रुओं को परास्त करने तथा मुकदमे आदि में विजय प्राप्त के लिये इससे बढ़कर कोई कवच नहीं है, यदि कोई किसी पड़यन्त्र का शिकार हो गया हो तो उसे अवश्य ही बगला मुखी कवच का पाठ करना चाहिए। यों भी मेरी धारणा तो यह है कि शत्रु चाहे वह व्यक्ति के रूप में हो, चाहे रोग के रूप में और चाहे मानसिक परेशानियों के रूप में हो, उनको शास्त करने एवं परास्त करने के लिये इससे बढ़कर कोई उपाय नहीं है, सामान्यतः कोई न कोई शत्रु हमारे जीवन में बना ही रहता है, चाहे वह शत्रु-देहिक, देविक अथवा भौतिक हो, भ्रतः हमारे लिये यह जहरी है कि हम नित्य एक बार बगला मुखी कवच का पाठ अवश्य करें।

नीचे मैं कुछ उदाहरण दे रहा हूँ जिनको बगला मुखी कवच से लाभ हुआ है और उनके जीवन में बगला मुखी कवच ने महत्व-पूर्ण हिस्सा ग्रहा किया है।

दिल्ली के एक प्रसिद्ध बैंक के मैनेजर ऐसे ही एक पड़यन्त्र के शिकार हो गये थे और उनकी कोई गलती न होने पर भी वे उस पड़यन्त्र में उलझ गये थे, इसका तुरन्त प्रभाव यह हुआ कि उन्हें नोकरी से निकाल दिया गया, उन दिनों उनकी प्रतिष्ठा तथा सामाजिक स्थिति डाढ़ाडोल हो रही थी। ऐसी ही दिनों में उनका टेलिफोन मेरे पास आया और उन्होंने बताया कि मैं व्यर्थ में ही उलझ गया हूँ जबकि इस प्रकार कोई बात मेरे जीवन में नहीं रही है, न तो मैंने किसी प्रकार का गवन किया है और न इस पड़यन्त्र में किसी रूप में शामिल हूँ। पर पता नहीं ऐसी कौन-सी

स्तोत्र-शक्ति

६०

यह स्थिति मेरे जीवन में था। गई है कि जिससे मैं इस बकल्यूह में उलझ गया हूँ। यह आप ही मेरे रक्षक है कोई ऐसा उपाय मुझे बताइये जिससे कि मैं इस बकल्यूह से छुटकारा पा सकूँ।

मैंने उसी समय टेलीफोन पर सुन्नित किया कि तुम्हें बगला मुखी कवच का पाठ नित्य से प्रारम्भ कर लेना चाहिए। इस कवच का ज्यादा प्रभाव तब होता है जबकि पाठ करते समय हम पीले वस्त्र ही धारण करे? ज्यादा अच्छा यही रहता है कि धोती तथा प्रगोचा पीले रंग में रगे हूए हों? जिस समय बगला मुखी कवच का पाठ करे उस समय यही वस्त्र पहने तो ज्यादा अच्छा रहता है।

इससे ही दिन से उसने मेरी आज्ञा को मानते हुए मेरे निदेशों के अनुसार बगला मुखी कवच का पाठ धारम्भ कर दिया और उनको तथा उनके मित्रों को यह देखकर अत्यन्त आश्चर्य में हुआ कि उसी दिन से उनकी स्थिति में सुधार होना प्रारम्भ हो गया, तथा मात्र एक महीने के भीतर-भीतर उनके ऊपर जितने चाहें थे, वे दूर हो गए तथा सम्मान उन्हें पुनः नोकरी में ले लिया गया।

उस दिन से वे बगला मुखी कवच के अनन्य भक्त बन गये हैं और जब भी वे अपने किसी मित्र को किसी भी प्रकार की मसीहत में देखते हैं तो उन्हें इसी कवच के पाठ करने की सलाह देते हैं, इस प्रकार उन्होंने अपने संकड़ों मित्रों की सहायता की है, तथा इस कवच के माध्यम से उनकी मनस्याओं को दूर करने में सहायक हुए हैं।

‘इन्दौर के रामसहायजी मेरे अच्छे परिचितों में से है। एक बार उनके ही एक रिश्तेदार ने उन पर लूटा मुकदमा दायर कर दिया और धीरे-धीरे स्थिति इतनी बिकट हो गई कि ऐसा जात होने लगा कि इसका परिणाम राम सहाय जी के विरुद्ध ही जापगा थोर उन्हें अवश्य ही जेल हो जायगी।

जब वे इस प्रकार को गम्भीर मानसिक घन्घाणाओं से यस्थ थे तो वे जोधपुर मेरे पास आए और उन्होंने मझे अपनी लारी स्थिति से अवगत कराया। साथ ही मुझे कहा कि यदि मैं इस मुकदमे स्तोत्र-शक्ति

६

में सफल नहीं हुआ तो मूँझे जेल घ्रवश्य हो जायगी और जेल जाने की अपेक्षा मैं आत्म-हत्या को ज्यादा अत्यस्कर समझता हूँ, ऐसा कहते-कहते उनकी गाँधीजी से टप-टप आशु बहने लगे।

मैंने उन्हें सान्तवना दी और विश्वास दिलाया कि यदि आप सही रास्ते पर हैं तो आपका बाल भी बाँका नहीं हो सकता, पच्छा हो आप बगला मुखी कवच का एक पाठ नित्य करने लग जाय। मैंने उन्हें बगला मुखी कवच की एक प्रति दी और किस प्रकार से पाठ किया जाना चाहिए इसकी विधि भी समझाई।

लगभग महीने भर बाद उनका पत्र आया कि पठित जी! आपने जो मूँझे प्रदर्शन कवच दिया था उसी का यह प्रभाव है कि आज मैं मुकदमे में पूर्णतः सफल हो गया हूँ और एक बार पुनः मन्त्र में जीतने की उमग बढ़ गई है, बस्तुतः यह कवच आपने आप में अद्भुत है। इस मुकदमे में जीतने का एक प्रतिशत चान्स भेरा नहीं था। परन्तु जिस दिन से मैंने इस कवच का पाठ प्रारम्भ किया उस दिन से स्थिति भेरे अनुकूल होती चली गई और एक महीने के अन्दर ही अन्दर इसने मूँझे चमत्कार दिखा दिया है और मैं आपने कार्य में पूर्णतः सफल हो गया हूँ।

इसके बाद उन्होंने आपने कई मित्रों एवं परिचितों को इस स्तोत्र के बारे में बताया है और अन्य लोगों ने भी इस स्तोत्र से पूरा-पूरा लाभ उठाया है।

जैसलमेर के खींची हरोसिंह ने भी इस स्तोत्र के बारे में एक आश्वयजनक किसान बताया था।

एक बार वे आपने भानजे की बारात से लौट रहे थे। वैलगाड़ियों में उनके परिवार की हित्रियाँ तथा समान लदा हुआ था। जैसलमेर की तरफ लुटंगे धमते ही रहते हैं। अतः प्रत्येक व्यक्ति गाथ में दास्त्र रखता ही है, खींची जी के पास में एक बन्दूक थी, जब वे बीच मार्ग में थे तो लगभग १४-१५ बाकुओं ने उन्हें घेर लिया और चारों तरफ से उन्होंने बन्दूक उठा ली, पह सब इतने अप्रत्याधित हाथ में हुआ कि उन्हें तथा

स्तोत्र-शक्ति

४२

गाँधीवालों को आपने दास्त्र उठाने का घ्रवश्य ही नहीं मिल सका।

खींची जी के पास और कोई साधन तो नहीं था उन्होंने उस समय प्रभ की स्मरण करना ही उचित नमझा, और अनवरत रूप से बगला मुखी कवच का पाठ करना प्रारम्भ कर दिया, गाँड़ी बाल तथा खींची जी ने लगभग पाँच बात मिनट के बाद ही देखा कि वे डाक एक स्थान पर एकत्रित होकर कुछ विचार-विमर्श कर रहे हैं, और दो तीन मिनट बाद ही वे वहाँ से भाग लड़े हुए, तो उन्होंने खींची जी को लखकारा और न किसी प्रकार को मार-काट ही ली। खालीम को बात तो यह है कि उस समय विद्यों के गहने प्राप्ति करके एक लाल से ज्यादा का सामान वाडियों में लदा हुआ था, यदि मारकाट भी होती तो डाक सरूपा में ज्यादा था। अतः उस दिन खींची का बचना नमव नहीं था, पर यह इन कवच का ही प्रभाव था कि वे सकुशल बाकुओं से बच सके और आपनो इजवत को कायम रखते हुए आपने घर पहुँच लके।

बस्तुतः बगला मुखी कवच आपने आप में अत्यन्त विनश्यण है। यदि इसमें सर्वप्रित पटनाएँ लिये तो काफी पृष्ठ भरे जा सकते हैं, पर मैंने यह अनुभव किया है कि यह कवच पूर्ण क्षेत्र शत्रुहन्ता है और जश्वरों ने निपटने के लिये इससे बढ़कर कोई उपाय नहीं है।

अर्थ बगला मुखी कवच प्रारम्भते

धूत्वा च बगलाप्नां स्तोत्रं चापि महेश्वर ॥ इदानो श्रोतुमि-
च्छामि कवचं वद मे प्रभो ॥ १॥ वैरिनाशकं दिव्यं सर्वा शूभ्र-
विनाशनम् ॥ शुभ्रं स्मरणात्पुण्यं जाहि मां दुःखनाशनम् ॥ २॥
पठित्वा धारपित्वा तु ब्रह्मोक्त्य विजयो भवेत् ॥ ३॥

स्तोत्र-शक्ति

४३

ओम अस्य श्री बगलामुखीकवचस्य नारद ऋषिः । गुण्ठ-
ठन्दः । श्रोबगलामुखी देवता । लं बीजम् । एं कीलकम् ।
पुरुषापूर्णचतुष्टयसिद्धये जपे विनियोगः ॥ ओम शिरो मे बगला
पातु हृदयं काष्ठरी परा । ओम हर्लीं ओम मे ललटे च बगला
चं रिनाशिनी ॥१॥ गदाहस्ता सदा पातु मूलं मे मोक्षदायिनी ॥
वेरिजिह्वाधरा पातु कण्ठं मे बगलामुखी ॥२॥ उदरं नाभिदेशो
च पातु नित्यं परात्परा ॥ परात्परतरा पातु मम गुह्यं नुरेश्वरी
॥३॥ हस्तो चं चं तथा पादो पावंती परिपातु मे ॥ विवाद विषमे
संप्रामे रिपुसकेटे ॥४॥ पीताम्बरधरा पातु सर्वांग शिवतंको ।
श्रीविद्या समयं पातु मातंगी पूरिता शिवा ॥५॥ पातु पुत्रं मुत्रांश्चं व
कलत्रं कालिका मम ॥ पातु नित्यं भातरं मे पितरं शिलिनी
शिवा ॥६॥ रश्मेह बगलादेव्याः कवचं मन्मुखो दितम् ॥ न चै देवम्-
मूल्याय तर्वसिद्धिप्रदायकम् ॥७॥ पठनाह्वारणादस्य पूजनाह्वालितं
लभेत् ॥ इवं कवचमशास्त्रं यो जपेद् बगलामुखीम् ॥८॥
पिवन्ति शोणितं तस्य योगिन्यः प्राप्य सादरा: ॥ वस्ये चाकर्षणं
चं चं मारणे मोहने तथा ॥९॥ महाभये विपत्ती च पठेहा पाठपत्तु
यः ॥ तस्य सर्वांश्चिद्दिः स्यादभिक्तयुक्तस्य पार्वति ॥१०॥

॥अथं बगला मुखी स्तोत्रम् ॥

श्री गणेशायनमः ॥ श्रीबगलामुखीदेव्यं नमः ॥ ओम अस्य
श्रीबगलामुखीस्तोत्रस्य भगवान् नारद ऋषिः । बगलामुखी देवता ।
मम तत्रिहितानां दुष्टानां विरोधिनां बाढमुखपदजिह्वावृद्धिनां
स्तम्भनाये श्रीबगलामुखीबरप्रसादसिद्धये जपे विनियोगः ॥
ओम हर्लीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॥ ओम बगलामुखी तज्ज्ञीभ्यो
स्वाहा ॥ ओम सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां वद्द ॥ ओम वाचं मूलं
पदं स्तम्भय अनासिकाभ्यां हुम् ॥ ओम जिह्वां कीलय कनिष्ठ-
काभ्यां वोषट् ॥ ओम यृद्धि नाशय ओम हर्लीं स्वाहा करतलकर-
पृष्ठाभ्यां फट् ॥ एवं हृदयादिष्य ॥

अथ ध्यानम् ॥ सोवर्णासनसंस्थितां त्रिनयनां पीताङ्कोल्ला-
सिनीं हेमाभागरचं शशांकमकुटां स्वक्षम्यकलांगुह्याम् ॥ हस्त-
मूदगरपात्रावृद्धरक्षानां संविभ्रतीं भूषणेऽव्याप्तांगी बगलामुखी

स्तोत्र-गति

त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तये ॥१॥

अथ मन्त्रः ॥ ओम हर्लीं बगलामुखीं सर्वदुष्टानां बाचं मूलं
पदं स्तम्भय जिह्वा कीलय वृद्धि नाशय हर्लीं ओम स्वाहा ॥
अथ स्तोत्रम् ॥ ओम मध्ये मुखाद्विमाणिमाडपरत्तवेशो
सिहसनांपरिगतां परिपीतवणांम् ॥ पीताम्बराम्बरगमाल्यविभूषित-
तांगो देवीं भजामि वृतमदगरवर्वजिह्वाम् ॥१॥ जिह्वाप्रमादाय
करेण देवीं वासेन शशु परिपोड्यन्तीम् ॥ गदानि यातेन च दक्षिणेन
पीताम्बराल्यां द्विभजां भजामि ॥२॥ ओम चलत्कनककुण्डलोल-
सितचारगण्यस्यलो लसत्कनकचम्पकचतिमदिन्दुविन्द्वाननाम् गदा-
हतविपक्षिकांकलितलोलीजिह्वांचलां स्मरामि बगलामुखी-
विमुखवाढमूलस्तम्भिनीम् ॥३॥ पीताम्बराद्विमध्यचारु विलसदक्षतो-
त्पले मण्डये ॥ तस्तिंहासनमोलिपातितरिष्यं प्रेतासनाध्यासिनीम् ॥
त्वर्णाभां करपीडितारिसनां भ्राम्यदगदां विभ्रतोमित्यं ध्यायति
यान्ति तस्य विलयं सहो य चर्वापदः ॥४॥ देवि त्वच्चरणाम्बजाद-
चन्कते यः पीतपुष्पांबलिम् भर्तया वामकारे निधाय च पुनरमन्त्रं
मनोजाकरम् ॥ पीठध्यानपरो य कुम्भकवशाद् वीजं स्मरेत्यायिवं
तस्यानित्रमखस्य वाचिहृदये जाग्रयं भवेत् तत्कणात् ॥५॥ वादी
मृकति रक्तिं कितिपतिवेशवनरः शीताति शोषी शाम्यति दुक्खनः
सुजनति किप्रानुगः लंजति ॥ गदीं लंजति सर्वविच्छ जडति त्वचन्त्र-
यायन्तिः श्रीनित्ये बगलामुखी प्रतिदिनं कल्पाणि तुम्यं नमः ॥६॥
मन्त्रस्त्यात्मवलं विपक्षदलने स्तोत्रं पवित्रं च ते यन्त्रं वादिनियन्त्रणं
त्रिजगतां जेत्रं च चित्रं च ते ॥ मातः श्रीबगलेति नाम ललितं
पस्यास्ति जन्तोमुखे त्वज्ञामप्प्रहणेन संतहि मखस्तम्भो भवेद्वा-
ह्निनाम् ॥७॥ दृष्टस्तम्भनमुप्रवेशमनं दारिद्र्यविद्वावणं भृद्भ-
भीशमनं चलम्भगदूशां चते त्वज्ञाकरणम् ॥ सौभाग्येकिनिकैतनं
पमदृशः कारणप्रूपामृतं मृत्योमारणमाविरस्तु पुरतो मातस्त्वयेषं
वृशुः ॥८॥ मातमंजय मे विपक्षदलने जिह्वां च संकोलय बाह्मी
मृद्य मृदयाशु धिषणामृपां गति स्तम्भय ॥ शशंचूर्णं देवि तीक्ष-
णदया गोरांगि पीताम्बरेविज्ञीष बगले हर प्रणमतां कारणपृष्ठ-
धणे ॥९॥ मातमंरवि-भद्रकालि विजये वाराहि विद्वान्वये श्रीविद्ये
समये महेशि बगले कामाक्षिवामे रमे ॥ मातंगि त्रिपुरे परात्परतरे
स्वर्णपवर्णप्रदे वासा हैं शरणगतः करणया विश्वेश्वरि श्राहि
स्तोत्र-गति

माम ॥१०॥ संरभे चोरसधे प्रहरणसमये बन्धने वारिमध्ये
 विद्यावादे विवादे प्रकुपितनृपतो विव्यकाले निशायाम ॥ वशयत्वे
 स्तम्भने वा रिपुवधसमये दुविवादे रणेवा गच्छस्तिष्ठ स्त्रिकालं
 यदि पठति शिवं ग्रान्तयादशु धीरः ॥११॥ नित्यं स्तोत्रमिदं
 पवित्रमिह् यो देव्याः पठत्यादरात् धूत्वान्यत्र हवं तथेव समरे
 वाहो करे वा गले ॥ राजानो प्यरयो मदान्वकरिणः सपां मूर्गन्दावि-
 कास्ते वे यान्ति विमोहिता रिपुगणा लक्ष्मीः स्थिरा सर्वतः ॥१२॥
 त्वं विद्या परमा त्रिलोकजननी विघ्नोघसंश्लेदिनी योषाकर्धकारिणी
 त्रिविगतामानन्दसंबहिनी ॥ दुष्टोच्चटनकारिणी जनमनः
 संमोहसंदायिनी जिह्वां कीलय भैरवी विजयते बहमात्मविद्या
 परा ॥१३॥ विद्या लक्ष्मीः सर्वसौभाग्यमायुः पुञ्च पौञ्चः सर्वं-
 साक्षात्यसिद्धिः ॥ मातं भागो वश्यभाराग्यसोऽयं प्राप्ते तत्तद्-
 भूत्वे स्त्मन्त्ररेण ॥१४॥ पत्कृतं जपसन्नाहं गदितं परमेश्वरि ॥
 दुष्टानां निप्रहार्याद्यत्र तदगृहण नमो स्तुते ॥१५॥ ब्रह्मास्त्रमिति
 विश्यातं त्रिषु लोकेषु विश्वतम् ॥ गुह्यमताय वातव्यं न देयं यस्य
 कस्यचित् ॥१६॥ पीतास्त्ररात्रं द्विभुजां त्रिनेत्रां गावकोज्जवलाम् ॥
 शिलामुद्गरहस्तां च स्मेरतां बगलामुखीम् ॥१७॥

—○—

: सौभाग्याष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रम् :

सौभाग्याष्टोत्तरशतनामस्तीत्र मूल्य रूप से स्त्रियों के लिये
 है । इसके बारे में शास्त्रों में वर्णित है कि जो स्त्री अपने सौभाग्य
 को अक्षण देखना चाहती है या जिसे अपना पति प्रिय है, या जो
 पूर्णं गृहस्थ मुख देखना चाहती है उसे इस स्तोत्र का पाठ अवश्य
 ही करना चाहिए, क्योंकि यह स्तोत्र उसके मुख-सौभाग्य की रक्षा
 के लिए तथा पति के स्वास्थ्य के लिये पूण्यतः प्रभावकारी है ।
 जब भी कोई महिला अपने पति को परेणानी में देखे या किसी
 समस्या से शह्व देखे तो उसे इस स्तोत्र का पाठ नियमित रूप से
 प्रारम्भ कर देना चाहिए । निष्वय ही कुछ समय बाद ही वह
 देखेगी कि उसके पति तत्कालिक समस्या से मुक्त हो गए हैं और
 काफी जाभदायक स्थिति में हैं ।

इससे सम्बन्धित सैकड़ों घटनाएँ भेरे मानस में धूम रही
 हैं यद्यपि मैं उन सभी घटनाओं को यहाँ लिपिबद्ध नहीं कर सकता
 परन्तु उनमें से कुछ घटनाएँ पाठकों के सामने रखना आवश्यक
 समझता है ।

इलाहावाद की तरफ में यात्रा पर या उन्हीं दिनों एक
 महिला मुझे मिली और उसने कहा भेरे स्वर में मृजे बताया कि
 मैं सासार में सबसे अधिक दुखी महिला हूँ क्योंकि मैंने अपने पति
 का सुख नहीं के बराबर मिल रहा है, इस समय भेरे तीन बच्चे
 हैं लिकर भी भेरे पति किसी अन्य स्त्री के सम्पर्क में है जिसके कारण
 वे न तो समय पर घर आते हैं और न मृजसे बातचीत ही करते
 हैं, लगभग एक साल बीत गया है मैं सब तरीकों से उन्हें समझा
 कर हार चुकी हूँ भेरे पीहर की तरफ से भी दबाव डाला गया है ।
 भेरे समुराल बालों ने भी उन्हें कई तरीकों से समझाने का चेष्टा
 की है पर उन पर किसी प्रकार का कोई प्रभाव नहीं पहता । अब
 तो वे मुझे मारने-पाने भी लग गये हैं ।

वस्तुतः उस महिला का सौभाग्य खतरे में पड़ गया था वह
 स्त्रोत-शक्ति

माम् ॥१०॥ संरस्मे चोरसधे प्रहरणसमये बन्धने वारिमध्ये
विद्यावादे विवादे प्रकुपितनपतो दिव्यकाले निशायाम् ॥ वशयत्वे
स्तम्भने वा रिपुवधसमये दुविवादे इषेवा गच्छस्तिष्ठ हित्रकालं
घवि पठति जिवं प्राज्ञयादगु धीरः ॥११॥ नित्यं स्तोत्रमिदं
पवित्रमिह यो देव्याः पठत्यादराद् धृवान्यत्र इदं तथेव समरे
वाहो करे वा गले ॥ राजानो प्यरयो मदान्धकरिणः सपां मृगेन्द्रादि-
कास्ते वै यान्ति विमोहिता रिपुगणा लक्ष्मीः स्थिरा सर्वतः ॥१२॥
त्वं विद्या परमा त्रिलोकजननी विघ्नोधसश्छेदिनी योगाकर्षकरिणी
त्रिजगतामानन्दसंबद्धिनी ॥ दुष्टोच्चटनकारिणी जनमनः
संभोहसंदायिनी जिहवां कीलय भैरवी विजयते बहमात्रविद्या
परा ॥१३॥ विद्या लक्ष्मीः सर्वसौभाग्यमायुः पुत्रं पौत्रं सर्व-
साक्षात्यसिद्धिः ॥ मानं भागो वशयमारायसायं प्राप्ते तत्तद-
भूतने स्मित्रणे ॥१४॥ यत्कृतं जपसन्नाहं गदितं परमेश्वरि ॥
दुष्टानां निप्रहार्थास्त्र तदगृहण नमो स्तुते ॥१५॥ बहमात्रमिति
विल्यतं त्रियु लोकेषु विश्वतम् ॥ गुह्यक्षताय दातव्यं न देय पस्य
कस्यचित् ॥१६॥ पीताम्बरांच द्विभुजां जिनेत्रां गावकोजजवलाम् ॥
शिलामूदगरहस्तां च स्मेरतां वगलामुखीम् ॥१७॥

—○—

स्तोत्र-शक्ति

सौभाग्याष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रम् :

सौभाग्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्र मूल्यं हृष्ट से स्त्रियों के लिये
है । इसके बारे में शास्त्रों में वर्णित है कि जो स्त्री अपने सौभाग्य-
को अक्षुण्ण देखना चाहती है या जिसे अपना पति श्रिय है, या जो
पूर्णं गृहस्थं सुख देखना चाहती है उसे इस स्तोत्र का पाठ अवश्य
ही करना चाहिए, क्योंकि यह स्तोत्र उसके सुख-सौभाग्य को रक्षा
के लिए तथा पति के स्वास्थ्य के लिये पूर्णतः प्रभावकारी है ।
जब भी कोई महिला अपने पति को परेजानो में देते या किसी
समस्या से इस्त देखते तो उसे इस स्तोत्र का पाठ नियमित हृष्ट से
प्रारम्भ कर देना चाहिए । नित्यव ही कुछ समय बाद ही वह
देखगी कि उसके पति तत्कालिक समस्या से मुक्त हो गए हैं प्रौढ़
काफी लाभदायक स्थिति में हैं ।

इसमें सम्बन्धित सैकड़ों घटनाएँ भेरे मानस में धूम रही
हैं पद्मपि मैं उन सभी घटनाओं को यहाँ लिपिबद्ध नहीं कर सकता
परन्तु उनमें से कुछ घटनाएँ पाठकों के सामने रखना आवश्यक
समझता है ।

इलाहावाद की तरफ में याचा पर था उन्हीं दिनों एक
‘महिला मूँझे मिली और उसने कहना भेरे स्वर में मूँझे बताया कि
मैं ससार में सबसे अधिक दुखों महिला हूँ क्योंकि मूँझे अपने पति
का मुख नहीं के बराबर मिल रहा है, इस समय भेरे तीन बच्चे
हैं किर भी मेरे पति किसी भूम्य स्त्री के सम्पर्क में हैं जिसके कारण
वे न तो समय पर घर आते हैं और न मुझसे बातचीत हो करते
हैं, लगभग एक साल बीत गया है मैं सब तरीकों से उन्हें समझा
कर हार चूकी हूँ भेरे पीहर को तरफ से भी दबाव डाला गया है ।
मेरे समुरान बालों ने भी उन्हें कई तरीकों से समझाने को चेता
की है पर उन पर किसी प्रकार का कोई प्रभाव नहीं पड़ता । अब
तो वे मूँझे मारने-पीटने भी लग गये हैं ।

बस्तुतः उस महिला का सौभाग्य खतरे में पड़ गया था वह
स्तोत्र-शक्ति

यह अनुभव कर रही थी कि उसके बच्चे इस प्रकार की घटनाओं को देखकर क्या सोचते होंगे ? उनके कोमल हृदय पर इसका क्या प्रभाव पड़ता होगा ? इसके साथ ही जब वह देखती कि मुझे पति का मुख नहीं के बराबर है तो उसकी आत्मा का कन्दन क्या स्वाभाविक नहीं था ?

मैंने उसकी सारी करुणगाथा को सुनकर सलाह दी कि इसके लिये तांत्रिकों अथवा साधुओं के चक्कर में पड़ने से कोई फायदा नहीं है ? अच्छा तो यह हो कि आप सौभाग्याटोत्तरशतनाम स्तोत्र का एक पाठ नित्य करें। मैंने बाजार से लाकर एक प्रति भी उन्हें भेट दी। साथ ही किस प्रकार से पाठ किया जाना चाहिए इसको विधि भी समझाई। पाठकों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि वह जिन समस्याओं से जूझ रही थी उनसे वह मात्र एक महीने में मुक्त हो गई। उसके पति ने जिस अन्य स्त्री से सम्पर्क किया हुआ था, किसी कारण वश उन दोनों में भयकर लड़ाई हो गई, और हमेशा-हमेशा के लिये उनका सम्पर्क टूट गया, जब उससे सम्पर्क समाप्त हो गये तो उनका रुक्षान अपनी पत्नी की तरफ बढ़ा, वह अपनी पत्नी में रुचि लेने लगा और गृहस्थ की तरफ ध्यान देने लगा और महीने भर के अन्दर-अन्दर उसका बोया हुआ सौभाग्य उसे बापस मिल गया।

वह आज भी इस स्तोत्र को सारांश के सबसे अच्छे स्तोत्रों में मनाती है। इस स्तोत्र के माध्यम से कई दुखी वहिनों की उसने सहायता की है।

अहमदावाद की घटना है। जब मैं अहमदावाद में था तो एक दिन एक ग जराती महिला मृद्गसे मिलने के लिए आई, वह करीब पाँच दिनों तक मृद्गसे मिलने आती रही पर मूँह से कुछ भी नहीं कहती, तो एक दिन मैंने पूछा कि आप क्या पूछने आई हैं ? क्या कोई आपको तकलीफ है ? तुम्हारे पति का स्वास्थ्य तो अच्छा है न ? अपने पति का नाम सुनते ही उसके शोकों से धज्जस जलधारा बरसते लगी। थोड़ी देर बाद उसकी हिचकियां बंध गईं और

स्तोत्र-शक्ति

८८

बताया कि वस्तुतः मेरे पति एक ग्रसाध्य रोग से प्रस्त है। मेरे विवाह हुए थभी तोन ही वर्ष बीते हैं, विवाह से पूर्व वे पूर्णतः स्वस्थ थे, और उसके बाद न जाने वयों बीमार पड़ गए और आज तोन साल से खाट में पड़े हुए हैं। मेरे समुदाय बालों ने और बन्धु लोगों ने मुझे बदनाम करना शुरू कर दिया है कि मैं जिस दिन से इस घर में आई हूँ उसी दिन से मेरे पति बीमार है और यह बीमारी ऐर ही कारण है। मैंने एक दिन भी अपने पति का सुख नहीं भोगा। दुखी होकर आज से छः महीने पहले मैंने आत्म-हत्या करने की भी सोची पर उसमें भी मैं लक्ष्य नहीं हो सकी। इस बीच में कई तांत्रिकों के पास तथा लाखों स्त्रीों के पास भटक चुकी हूँ और लगभग सभी ने मझसे शासा ही पठाया अच्छा समझा, मेरी मदद किसी ने नहीं की। अब मैं अन्तिम रूप से आपके पास आई हूँ वयोंकि आपका नाम काफी सुना है अब मैं परिमें लिये कुछ अनुकूल नहीं हो सका तो मैं निश्चय ही अपने प्राणों को समाप्त कर दूँगी।

मैंने उसका हाथ देखा, उसके पति को आशु काफी थी, मैंने उसे इसी स्तोत्र के पाठ करने की सलाह दी और बताया कि शीघ्र ही आपको इस सम्बन्ध में लाभ मिलेगा और आज से ही आप यह अनुभव करेंगी कि आपके पति पहले की अपेक्षा स्वस्थ होते जा रहे हैं।

उसने उसी दिन से इस स्तोत्र का पाठ-आरम्भ कर दिया। लगभग मैं इस घटना को भूल ही चुका था कि छः-महीनों के बाद एक दिन मुवह वे दोनों पति-पत्नी जोबपुर में मेरे घर विना किसी पूर्व सूचना के आ गये। मैंने उन्हें तुरन्त पहचान लिया और पूछा कि अब कैसी स्थिति है, उन्होंने बताया कि इनके इलाज पर मैं लगभग पचास हजार रुपये व्यय कर चुकी पर उससे किसी प्रकार का कोई फायदा नहीं हुआ था, आपने मुझे स्तोत्र दिया था वह अपने आप में अद्भुत था और उस स्तोत्र का पाठ मैंने उसी दिन से प्रारम्भ कर दिया था जिस दिन आपने मुझे दिया था, आज लगभग छः महीने बीते हैं मेरे पति पूर्णतः स्वस्थ हैं और इसका उदाहरण आपके सामने है कि मैं और मेरे पति आपकी सेवा में प्रस्तुत हैं।

स्तोत्र-शक्ति

८९

मैंने उन्हें आधीरादि दिधा और सलाह दी कि इस स्तोत्र का नित्य एक पाठ अपने जीवन में करती रहें आपके जीवन में गृहस्थ से सम्बन्धित कोई परेशानी नहीं आ पाएगी।

बस्तुतः स्त्रियों के लिए इससे बढ़कर कोई स्तोत्र या पाठ अधिक विभान नहीं है, परिका का स्वास्थ्य ठीक नहीं हो, उनकी उम्रति में बाधा आ रही हो, आधिक दृष्टि से परेशान हो, स्वभाव में चिढ़-चिढ़ापन आ गया हो, पत्नी से प्रेम न रहा हो, किसी दूसरी स्त्री के सम्पर्क में हो, या अन्य किसी प्रकार की बीमारी या बुरी आदत हो अधिक उसके गृहस्थ मुख में कोई बहुत बड़ी बाधा आ रही हो, तो उस महिला को मेरा परामर्श है कि इस स्तोत्र का पाठ प्रारम्भ कर दें और तब तक नित्य एक पाठ करती रहे जब तक कि उसे मनोवाञ्छित अवसर न मिल जाये या जैसा वह चाहती है वैसा न हो जाय। प्रत्येक सौभाग्यवती स्त्री के लिये इस स्तोत्र का पाठ आवश्यक ही नहीं अनिवार्य समझना चाहिए।

अथ सौभाग्याष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रम्

निशम्येतज्जामदन्यो माहात्म्यं सर्वतो धिकम् ।
स्तोत्रस्य भूयः प्रपञ्च दत्तात्रेयं गृहतमम् ॥१॥
भगवन्स्त्वन्मुखाम्भोजनिगंगमदाक्षुधारसम् ।
पिवतः ओतमुखतो वर्षते नुक्षणं तृष्णा ॥२॥
अष्टोत्तरशत नामनां धोदेव्या यत्प्रसादतः ।
कामः सम्प्राप्तवर्णलोके सौभाग्यं सर्वमोहनम् ॥३॥
सौभाग्यविद्वावर्णनामद्वारो यत्र संस्थितः ।
तत्समाचश्व भगवन् हृपया तथि सेवके ॥४॥
निशम्येवं भागंवोक्ति दत्तात्रेयो दयानिधिः ।
प्रावाच भागंवं रामं मधुराक्षरशुब्रकम् ॥५॥
अण भागंवं यत्युष्टं नामनामष्टोत्तर शतम् ।
धौविद्यावर्णरत्नानां निषानमिव संस्थितम् ॥६॥

स्तोत्र-शक्ति

श्री देव्या बहुधा सन्ति नामानि वृणु भागंव ।
सहस्रशतसंल्पार्णि पुराणेवागमेष्व च ॥७॥
तेषु सारतरं हेयतत् सौभाग्याष्टोत्तरात्मकम् ।
पदुचाच गिवः पूर्वं भवान्येव बहुधाधितः ॥८॥
सौभाग्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रस्य भागंव ।
व्याप्तिरक्षतः शिवद्वन्द्वो नुष्टुप् धोललितान्विका ॥९॥
देवता विन्योत् कृत्रयोणावत्यं सर्वतः ।
व्यात्वा सम्पूर्णं मनसा स्तोत्रमेतदुदीरयत् ॥१०॥

अथ नाममन्त्रा :

ओम कामेश्वरी कामशति: कामसौभाग्यदाधिनो ।
कामहण्या कामकला कामिनो कमलासना ॥११॥
कमला कल्पनाहीना कमनीयकलावती ।
कमलाभारतीसंव्या कल्पिताशेष संस्कृतिः ॥१२॥
अन तरानधानन्ताद भुतह्यानलोदभवा ।
अतिलोकचरित्रातिमुद्दयतिशुभ्रद्विमितप्रभा ॥१३॥
अघहन्तयतिविस्ताराचन्तुवृद्धमितप्रभा ।
एकलयंकवीरेकनायं कान्ताचन्तनप्रिया ॥१४॥
एक कमाभावतुष्टकरसकान्तजनप्रिया ।
एवमानप्रभावधन्यतपातकनाधिनो ॥१५॥
एलामोदमधेनो दिशकापुष्टसमस्तिः ।
इहाशून्येऽप्सितेशादिसंव्येशानवरांगना ॥१६॥
इश्वराजपिकेकारभाव्येप्सितफलप्रदा ।
ईशानेतिशुरेषेष्वदशाक्षीर्वदेवरी ॥१७॥
ललिता ललनाश्वा लयहीना लक्ष्मतनः ।
लयसर्वा लयसागिलंयकत्रो लयात्मिका ॥१८॥
लयिमा लयुमध्याइया लक्ष्माना लघुदृता ।
हृपाक्षा हतामित्रा हरकान्ता हरिस्तुता ॥१९॥
हृपीवेष्टवा हृलप्रिया हृवसमदता ।
हृषणा हृलाकामाइयी हृस्यन्तेश्वरंद्वाधिनो ॥२०॥

स्तोत्र-शक्ति

८१

हलहस्तार्चितपदा हर्विदीनप्रसादिनी ।
 रामा रामाचिता राजी रम्या रवमयो रतः ॥२१॥
 रक्षिणी रमणी राका रमणीमण्डलप्रिया ।
 रक्षिता खिल्लोकेशारकोगणनिष्ठिदिनी ॥२२॥
 अभ्यान्तकारिष्यभोजप्रियान्तकभयंकरी ।
 अभ्युरूपाभ्युजकराभ्युजनातवरप्रदा ॥२३॥
 अन्तः पूजाप्रियान्तः स्थलपिण्यन्तवचोभयो ।
 अन्तकारातिवामांकस्थितान्तस्मुखरूपिणी ॥२४॥
 सर्वंजा सर्वंगा सारा समा समसुखा सती ।
 संततिः संतता सोमा सर्वा संख्या सनातनी ओम ॥२५॥

मुदासिनीर्हमणान् बा भोजद्ये यस्तु नामभिः ।
 यश्च पूर्व्यः फले वर्णपूजयेत् प्रतिनामभिः ॥३५॥
 चक्रराजे चवान्यत्र स वसेच्छीपुरे चिरम् ।
 यः सदा यतंयग्रास्ते नामाण्टशतम् तमम् ॥३६॥
 तस्य श्रीलक्ष्मिता राजी प्रसंगा वर्णिष्ठतप्रदा ।
 एतते कथितं राम धूषु त्वंप्रकृतं चुये ॥३७॥

इति श्रीब्रिपुरारहस्ये श्रीसीनाग्याष्टोत्रशतनामस्तोत्रं
 समूर्णम् ॥

फलश्रुतिः

एतते कथितं राम नामाण्टोत्तरं शतम् ।
 अतिगोप्यमिदं नामः सर्वंतः सारमुद्घृतम् ॥२६॥
 एतस्य तदृग्ं स्तोत्रं त्रियु लोकेषु दुलभम् ।
 अप्रकाश्यमभवतानां पुरुतो देवताद्विष्याम् ॥२७॥
 एतत् सदाशिवो नित्यं पठन्त्यन्ये हरादयः ।
 एतत्प्रभावात् कन्दपंस्त्रेलोक्यंजयति अणात् ॥२८॥
 सौभाग्याष्टोत्रशतनामस्तोत्रं मनोहरम् ।
 यस्त्रिसंघं पठेत्रित्यं न तस्य भुविषु दुलभम् ॥२९॥
 श्रीविष्णोपासनवतामेतदावश्यकं मतम् ।
 सहृतेतत् प्रयठतां नान्यत् कर्म विलप्यते ॥३०॥
 अपठित्वा स्तोत्रमिदं नित्यं नंमितिकं हृतव् ।
 व्यर्थोभवति नमेत इतं कर्मं पया तवा ॥३१॥
 सहृतनामपाठादावशक्तंस्त्वेतदोरयेत् ॥
 सहृतनामपाठस्य फलं शतगां भवेत् ॥३२॥
 सहृतवा कठित्वा तु बोक्षणाग्राजायेऽप्नु ।
 करबोरवतपुष्येहत्वा लोकान् बद्वा नयेत् ॥३३॥
 स्तम्भयेत् शीतकुमुखंनीतेरच्चाटयेद रिप्तु ।
 भरिच्चेविकृष्णाय लक्ष्मोर्हर्षिताक्षमे ॥३४॥

स्तोत्र-शक्ति

स्तोत्र-शक्ति

सुन्दर काण्ड

रामचरित मानस भक्ति का अन्यतम ग्रंथ है। वास्तव में देखा जाय तो इबती हुई हिन्दू जाति को बचाने में रामचरित मानस ने जितना सहयोग दिया है उतना अन्य किसी भी धार्मिक ग्रंथ ने नहीं। रामचरित मानस हिन्दू जाति का सम्बल बना, इसमें उसे अपनी उबती हुई स्थिति से पार पाने का उपाय सूखा इसके साथ ही उसे इसके माध्यम से सर्वशक्तिमान राम के हारा एक ऐसा नायक मिला जो सभी दृष्टियों से पापियों का सहार करने वाले तथा विपत्ति में भक्ति की लाज रखने वाले सिद्ध हुए। सुन्दर काण्ड इसी रामचरित मानस का एक भाग है।

अधिकांश व्यक्तित्व नित्य सुन्दर काण्ड का पाठ करते हैं, उनके शब्दों में यह एक ऐसा स्तोत्र है जो सभी तरह की विपत्तियों को मिटाने में सक्षम एवं सहायक है। उत्तरी भारत में जब भी किसी परिवार पर कोई कष्ट आता है या वह किसी प्रकार की परेशानी को अनुभव करता है तो वह सुन्दर काण्ड का पाठ करता है। सुन्दर काण्ड रामचरित मानस का मात्र एक भाग ही नहीं है अपितु अपने आप में एक पूर्ण मन्त्र-राज है, जिसके कारण से हम आने वाली विपत्तियों से छुटकारा पा सकते हैं तथा अपने जीवन में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

मैंने कई बार भारत-भ्रमण किया है और लाखों करोड़ों व्यक्तियों से मिलता रहा हूँ। अधिकांश व्यक्तियों को मैंने सुन्दर काण्ड का पाठ करते हुए देखा है और उनके हृदय में इसके प्रति अपूर्व अद्वा, विश्वास एवं भक्ति पाई है, उन्होंने ऐसे कई अनुभव मुझे मुनाए हैं जिनसे यह प्रतीत होता है कि सुन्दर काण्ड का नित्य पाठ करने से हम आने वाली कई मुसीबतों से छुटकारा पा सकते हैं।

मैं अपने कुछ अनुभव जो कि अपने पाठकों एवं परिचितों

स्तोत्र-शक्ति

६४

से सुने हैं नीचे की पक्षियों में देखा हैः

जोघपुर-बीकानेर रेलवे लाइन पर काम करने वाले एक गाड़ ने मुझे अपना अनुभव सुनाते हुए बताया कि एक बार मैं कठिन मुसीबत में उलझ गया, मैं मालागाड़ी लेकर बीकानेर जा रहा था उस समय मेरे चांज में अत्यन्त बहुमत्य सामग्री थी और कुछ सोने चांदी की सिल्वियां भी पासेल में थी, मार्ग में इतने जोर का अन्धड़ आया और तृफान का वेग इतना तेज अनुभव हीने लगा कि किसी भी समय गाड़ी उलट सकती थी इसके साथ ही मैंने विवाहान जंगल में गाड़ी को रोकना भी उचित न समझा, मेरे एक दो मित्रों ने मुझे सलाह दी कि गाड़ी को किसी सुरक्षित स्थान पर ठहरा दी जाय। परन्तु सुरक्षित स्थान तक पहुँचना भी अपने आप में अत्यन्त कठिन हो गया था, मैंने डाइवर से परामर्श किया तो उसने बताया कि यदि गाड़ी इस जंगल में रोकी जाती है तो किसी भी समय दुष्टना घटित हो सकती है या लुटेरे लूट सकते हैं, इसके साथ ही यदि आप मुझ गाड़ी को आग बढ़ाने की आज्ञा देते हैं तो अन्धड़ के इस वेग में गाड़ी उलट भी सकती है, मैंने उस समय एक निरंय लिया और गाड़ी को जंगल में रोक दी, तृफान ५०० मील प्रति घण्टे की रफतार से चल रहा था और पूरी गाड़ी अपने आप में डगमगा रही थी, मैंने अपने गाड़ यान में आखेर बन्द कर ली और सुन्दर काण्ड का पाठ करने लगा। मृशे पाठ करते हुए लगभग १०-१२ मिनट ही बीते होंगे कि मैंने अनुभव किया कि जैसे तृफान रुक गया हो। कुछ मिनटों पहले जो तृफान का भयंकर वेग था वह अपने आप में शान्त हो गया था। मामूली सी हवा चल रही थी, तृफान का कहीं नाम-निशान तक नहीं। मैंने प्रभु को धन्यवाद दिया और गाड़ी को आगे बढ़ाने की आज्ञा दी। लगभग दो घण्टे लेट गाड़ी अगले स्टेशन पर पहुँची। उस दिन केवल सुन्दर काण्ड ने ही ही मेरी तथा मेरी प्रतिष्ठा की रक्षा की। इस बात को मैं कभी भी नहीं भूल सकता।

जैसलमेर को घटना है जहाँ मीलों तक पानी का नाम निशान
स्तोत्र-शक्ति

६५

नहीं होता। ऐसे स्थान पर मेरे एक परिचित व्यक्ति के पुत्र की नियकित हई थी, अनुभवहीन वह १८-१९ वर्ष का बालक जैसलमेर से बस पर चढ़ने वाला था, परन्तु किसी कारण से वह बस छूट गई, वहाँ से उसका गन्तव्य स्थल २८ मील दूर था और दूसरे दिन से पहले जाने का कोई साधन नहीं था, इसके साथ ही एक बात और थी कि उसे उसी दिन डचूटी जवाइन करनी थी, यदि उस दिन वह डचूटी जवाइन नहीं करता तो उसके प्रादेश स्वतः ही निरस्त हो जाते, और कोई चारा न देख उसने पैदल ही रास्ता पार करने को मन में ठान ली और रास्ता पूछकर आगे बढ़ गया।

करीब १०-१२ मील तक तो वह चला गया परन्तु अनुभवहीन होने के कारण उसने अपने साथ पानी की कोई व्यवस्था नहीं की, उसे जोरों से प्यास लग आई, परन्तु चारों तरफ पानी का कोई साधन नहीं था और न कोई व्यक्ति आता जाता दिखाई दे रहा था, किसी प्रकार वह एक दो मील और आगे बढ़ा, उसे कुछ बकरियाँ चरती हुई दिखाई दी परन्तु उसके साथ न तो कोई चाला नजर आया और न पानी का स्थान ही, प्यास के कारण उसके कठ सूख रहे थे, एक-एक पैर चलना भारी हो रहा था, उसने वहीं बैठ जाना उचित समझा, चारों तरफ नजर दौड़ाई। परन्तु उसे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था, प्यास के मारे हल्क सूख रहा था और बाहर निकल रही थी और मृत्यु उसके सिरहाने खड़ी नजर आ रही थी।

उसे अपने बचपन के संस्कार याद आए, पिता ने अपने सभी पुत्रों को सुन्दरकाण्ड कठस्थ करवा दिया था, उसने प्रभु का नाम लेकर उसी सुन्दर काण्ड का पाठ आरम्भ कर दिया, घंटे-घंटे उसकी आंखें बन्द होने लगी मैंह से अस्फूट सुन्दर काण्ड का पाठ चल रहा था कि उसे अपने हल्क में पानी की बूंदें गिरती अनुभव हुई। उसने आंखें खोली तो देखा कि एक चाला उसके सिरहाने खड़ा अपनी दीवड़ी में से पानी की बूंदें उसके गले में टपका रहा है। ५-७ मिनट बाद उसे होग आया और उसने उस चाले से दीवड़ी लेकर जी भर कर पानी पिया और इस प्रकार उसने मृत्यु को टालकर अपने प्राण बचाये, उसका कहना है कि उसके जीवन में यह पहली बार नहीं ऐसे कई अवसर उपस्थिति

हुए हैं जब मृत्यु के बल दो चार-गज दूर रह गई थी, और मात्र सुन्दर काण्ड के पाठ से वह उससे बच सका है।

चित्तोड़ में चिड़लाजी का सीमेन्ट का बहुत बड़ा कारखाना है। वहाँ से एक सीमेन्ट स्टार्किस्ट की एक घटना उनके ही शब्दों में पाठकों के सामने रख रहा है। एक दिन सीमेन्ट का बैगन भराना था और यदि उस दिन वह बैगन नहीं भरता तो काफी बड़ा हर्जाना रेलवे को देना पड़ता। मैंने जैसे-तैसे एक ट्रक को व्यवस्था की जो कि सीमेन्ट लेकर रेलवे स्टेशन पर पहुँचा देता पर मयोग की बात यह कि उसी दिन तेज मूसलाधार वर्षा होने लग गई, वर्षा कुछ इस प्रकार से गिर रही थी कि रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी, मैंने मन ही मन सोच लिया कि इस बरसात में यदि ट्रक भरकर रेलवे तक ले गया तो सारा सीमेन्ट भी ग जायगा और यदि नहीं ले जाता है तो रेलवे का बहुत बड़ा हर्जाना देना पड़ेगा और फिर बैगन न मालूम कब मिले। ऐसी स्थिति में मैंने मन ही मन प्रभु को स्मरण किया और सुन्दरकाण्ड का पाठ आरम्भ कर दिया। मैं सुन्दर काण्ड के पाठ को लगभग शाम के ५ बजे समाप्त कर सका और ज्योंही मैंने पाठ समाप्त किया त्योही वर्षा बन्द हो गई, मैंने ट्रक से सीमेन्ट ढोकर रेलवे का बैगन भरा इस काम में मझे लगभग ४ घण्टे लग गये। रात के ६ बजे के लगभग मैं पूरे बैगन को भरा सका, ज्योंही मैंने अंतिम सीमेन्ट का कटा बैगन में रखा त्योही वर्षा प्रारम्भ हो गई और इसके बाद सारी रात मूसलाधार वर्षा होती रही, यह सुन्दर काण्ड का ही चमत्कार था कि शाम के ५ बजे से ६ बजे के बीच बिलकुल वर्षा बन्द रही और मैं सकट से बच सका।

कोटा के पास चम्बल नदी बहती है, वर्षा छतु में यह भयकर रूप धारण कर लेती है। गत सितम्बर में उसमें भयकर बाढ़ आ गई ऐसा अनुभव होने लगा कि पूरा शहर जलमग्न हो जायगा।

स्तोत्र शक्ति

५

६७

नदी का वेग क्षण-प्रतिक्षण बढ़ता ही जा रहा था और खतरे के निशान से काफी ऊपर पानी वह रहा था । उस समय कुछ दाढ़ीयों को सलाह से नदी के तट पर अनवरत मुन्दर काण्ड का पाठ प्रारम्भ कराया गया और लोगों ने देखा कि जैसे ही मुन्दर काण्ड के ११ पाठ पूर्ण हुए, नदी का वेग धीमे पड़ने लगा और वह धीरे-धीरे खतरे के निशान से भी नीचे उतरने लगा, इस प्रकार उस बाढ़ से संकड़ों हजारों लोगों को बचाने का उपाय और माध्यम मुन्दरकाण्ड ही रहा । इस घटना के हजारों लोग साक्षी हैं ।

वस्तुतः मुन्दर काण्ड अपने आप में अन्यतम सुन्ति है । प्रत्येक व्यक्ति की नियमित रूप से इसका पाठ करना ही चाहिए । जो व्यक्ति राम भक्त है या जिसको हनुमानजी में साम्पा है उन्हें नियमित रूप से मुन्दरकाण्ड का पाठ आवश्यक ही करना चाहिए । जब भी परिवार पर कोई संकट आए या कोई सामूहिक समस्या सामने लड़ी हो जाए तो मुन्दर काण्ड ही एक मात्र उस विपत्ति से बचाने का साधन है । मेरी व्यक्तिगत राय में संकट से उत्तरने का इससे बड़ा कोई माध्यम नहीं है ।

मुन्दरकाण्ड—मूल

दलोक

शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्बाणशान्तिप्रदं
ब्रह्मप्राप्तभक्तिं निर्देश्यमनिशं वेदान्तवेदं विभुम् ।
रामालयं जगदीश्वरं सुरगुरं मायामनृष्य शृणि
वन्दे हृकरणाकरं रथवरं भूपालचूडामणिम् ॥१॥
नाम्या स्पृहा रथ्यते हृदयेऽस्मदीप्य
सत्यं वदामि च भवानविलान्तरात्मा ।
भक्तिं प्रयच्छ रथ्यंगव निभेरो मे
कामाद्वीप रहितं कुम मानसं च ॥२॥

स्तोत्र शक्ति

अतुलितबलवामं हेमदालाभवेहं
दनुजवनहृतानं जानिनामपगच्यम् ।

सकलगुणनिधानं बानराणमधीरं
रथुपतिप्रियभवतं वातजातं नमामि ॥३॥

जामवंत के बचन सुहाए । सुनि हनुमत हृदय अति भाए ॥
तब लगि मोहि परिखेह तुम्ह भाई । सहि दुख कंद मूल कल खाई ॥
जब लगि जावी सोतहि देखो । होइहि काज मोहि हृदय विसेधो ॥
यह कहि नाह सबन्हि कहु माया । चलेझ हृदयि हिय घरि रघुनाथा ॥
सिधु तोर एक भूधर मुन्दर । कौतुक कूदि चढ़ेउ ता ऊपर ॥
बार बार रथुबीर संभारी । तरकेउ पवनतनय बल भारी ॥
जैहि गिरि चरन देह हनुमंता । चलेझ सो गा पाताल तुरन्ता ॥
जिमि अमोध रथुपति कर बाना । एही भाँति चलेझ हनुमाना ॥
जलनिधि रथुपति दूत बिचारी । ते मैनाक होहि धमहारी ॥

दो० हनुमान तेहि परसा कर पुनि कीन्ह प्रनाम ।

राम काज कीन्हे बिन मोहि कहां विश्वाम ॥१॥
जात पवन सुत देवनह देखा । जाने कहु बल बहिं विसेधा ॥
सुरसा नाम अहिन्त के माता । पठइन्हि आइ कहों तेहि बाता ॥
आजु सुरन्ह मोहि बोन्ह अहारा । सुनत बचन कह पवन कुमारा ॥
राम काजु करि फिरि मे आवीं । सोता कै द सुधि प्रभुहि सुनावो ॥
तब तब बदन पंठिहउं आई । सत्य कहउ मोहि जान दे माई ॥
कवनेहुं जतन देह नहि जाना । प्रससि न मोहि कहेउ हनुमाना ॥
जोजन भरि तेहि बदन पसारा । कपि तनु कीन्ह दुगन विस्तारा ॥
सोरह जोजन मूल तेहि लयक । तुरत पवनसुत बत्तिस भयक ॥
जस जस सुरसा बदनु बड़ावा । तामु द्रून कपि रूप वेलावा ॥
सत जोजन तेहि आनन कीन्हा । अति लय रूप पवनसुत लोन्हा ॥
बदन पहाड़ि पुनि बाहेर आवा । माया विदा ताहि सिरु नावा ॥
मोहि सुरन्ह जैहि लागि पठावा । बूधि बल मरमु तोर मे पावा ॥

दो० राम काजु सबु करिहतु तुम्ह बल बूधि निधान ।

आसिष देह गई सो हृदयि चलेझ हनुमान ॥२॥
निसिचरि एक सिधु महुं रहई । करि माया नभु के खग गहई ॥
जोव जतु जे गगन उड़ाहो । जल विलोकि तिन्ह के परिछाहो ॥
गहई छाहं सक सो न उड़ाई । एहि विधि सदा गगनचर खाई ॥

स्तोत्र-शक्ति

सोइ छल हनुमान कहं कोन्हा । तसु कपटु कपि तुरतहि चोन्हा ॥
ताहि मारि मास्तमुत बोरा । वारिधि पार गयउ नतिधीरा ॥
तहां जाह देखी बन सोभा । गुंजत चंचरीक मधु लोभा ॥
नाना तरु कल फूल सुहाए । खग मृग बंद देखि मन भाए ॥
संल विसाल देखि एक आगे । ता पर घाई चढ़े भय त्यागे ॥
उमा न कुछु कपि कं अधिकाई । प्रभु प्रताप जो कालहि थाई ॥
गिरि पर चाहु लंका तेहि देखी । कहि न जाह अति दुर्ग विसेषो ॥
अति उतंग जलनिधि चहु पासा । कनक कोट कर परम प्रकासा ॥

छ० कनक कोट विचित्र मनि कृत सदं रायतना घना ।
चउ हटट सुवटट बीयो चाह पुर बहु विधि बना ॥
गज वाजि खच्चर निकर पद चर रथ बहणिहि को गने ।
बहुरूप नितिचर जय अतिवल सेन वरनत नहि बने ॥१॥
बन वाग उपबन वाटिका सर कप बापों सौहही ।
नर नाग मुर गंधर्व कन्या व्य मनि मन मोहही ।
कहुं माल देह विसाल संल समान अतिवल गजहों ।
नाना अखारेन्ह भिरहि वहुविधि एक एकन्ह तज्हंही ॥२॥
करिजतन भट कोटिन्ह विकट तन नगर चहुं दिसि रचहों ।
कहुं महिव मानय धेनु खर अज खल निसाचर भच्छहों ।
एहि लागि तुलसोदास इन्ह की कथा कछु एक है कही ।
रघुवीर सर तीरथ सरोरन्ह त्यागि गति पैहहि सही ॥३॥

दो० पुर रखबारे देखि बहु कपि मन कीन्ह विचार ।
अति लघु रूप धरी निति नगर करी पईसार ॥३॥
मसक समान रूप कपि धरी । लंकहि चलेउ सुमिरि नरहरी ॥
नाम लंकिनी एक निसीचरी । सो कह चलेसि मोहि निदरी ॥
जानेहि नहो मरमु सट मोरा । भोर अहार जहां लगि चोरा ॥
मठिका एक महा कपि हनी । हविर बमत धरनों ढनमनी ॥
पुनि संभारि उठो सो लंका । जोरि पानि कर विनय संसंका ॥
जब राबनहि बहम बर दीन्हा । चलत विरचि कहा मोहि चोन्हा ॥
विकल होसि ते कपि को मारे । तब जानेसु नितिचर संयारे ॥
तात मोर अति पुन्य बहता । देखउ नयन राम कर द्रुता ॥

दो० तात स्वगं अपबगं मुख धरिम तुला एक अंग ।
तूल न ताहि सकल मिल जो मुख लव सतसंग ॥४॥

प्रविसि नगर कीजं सब काजा । हृदयं राखि कोसलपुर राजा ॥
गरल सुधा रिपु करहि मिताई । गोपद सिव अनल सितलाई ॥
गलड सुमेन रेन सम ताही । राम हृपा करि वितवा जाही ॥
अति लघु रूप धरैउ हनुमाना । पंडा नगर सुमिरि भगवाना ॥
मंदिर मंदिर प्रति करि तोधा । देखे जहं तह अगनित गोधा ॥
गयउ दसालन मंदिर माही । अति विचित्र कहि जात तो नाही ॥
सपन किए देखा कपि तेहो । मंदिर महं न दोखि बेदेही ॥
भवन एक पुनि दील सुहावा । हरि मंदिर तह भिन्न बनावा ।
दो० रामायुध अकित गृह सोभा बरनि न जाई ।

तव तुलसिका बंद तह देखि हरय कपिराई ॥५॥

लंका नितिचर निकर निकासा । इहों कहां सञ्जन कर बासा ॥
मन महुं तरक करे कपि लागा । तेहों समय विमीषन् जागा ॥
राम राम तेहि सुमिरन कीन्हा । हृदयं हरय कपि सञ्जन चोन्हा ॥
एहि सन हठि करिहडं पहिचानो । साचु ते होइ न कारज हानो ॥
विप्र रूप धरि बचन सुनाए । सुनत विभोषन उठि तह आए ॥
करि प्रनाम पूँछो कुसलाई । विप्र कहुं निज कथा बुझाई ॥
की तुम्ह हरि दातन्ह महं कोई । मोरे हृदय प्रोति अति होई ॥
की तुम्ह राम दीन अनरागी । आपहु मोहि करन बढ़भागी ॥

दो०—तब हनुमत कहौं सब राम कथा निज नाम ।

सुनत जूगल तन पुलक मन बगन सुमिरि शुन प्राम ॥६॥
सुनहु पबनसुत रहति हमारी । जिनि दसनन्हि महुं जीभ विचारी ॥
तसि कबहु मोहि जानि अनाया । करिहहि हृपा भानुकुल नाया ॥
तामस तनु कडु साधन नाहों । प्रोति न पद सरोज मन माहों ॥
अब मोहि मा भरोस हनुमता । बिनु हरि हृपा मिलहि नहिं संता ॥
जो रघुवीर अनुप्रह कीन्हा । तौ तुम्ह मोहि वरनु हठि दोन्हा ॥
सुनहु विभोषन प्रभु की रोती । करिहि सदा सेवक पर प्रीती ॥
कहुं कवन ने परम कुलोना । कपि चंचल सबहों विधि हीना ॥
प्रात लेइ जो नाम हमारा । तेहि दिन ताहि न मिले अहारा ॥

दो०—जस से अद्यम सखा तुनु मोहु पर रघुवीर ।

कीन्हों हृपा सुमिरि गन भरे विलोचन नीर ॥७॥
जानत हैं अस स्वामि विसारो । फिरहि ते काहे न होहि दुखारी ॥
एहि विधि कहूत राम गुन प्रामा । पावा अनिवार्य विश्वामा ॥

स्तोत्र-शक्ति

१०१

पुनि सब कथा विभीषण कही । जेहि विधि जनकमुता तहं रही ॥
तब हनुमंत कहा सुन् भ्राता । देखो चहऊं जानकी माता ॥
जूपति विभीषण सकल सुनाई । चलेउ पवनसुत बिदा कराई ॥
करि सौ रूप गयउ पुनि तहवाँ । बन असोक सीता रह जहवाँ ॥
देखि मनहि महुं कीन्ह प्रतामा । देठेहि बीति जात निसि जामा ॥
कृत तनु सोत जटा एक बेनी । जपति हृदयं रघुपति गुन श्रेनी ॥

दो०—निज पद नयन दिएं मन राम पद कमल लीन ।

परम दुखी भा पवनमुत देखि जानकी दीन ॥४॥
तह पलब महुं रहा लुकाई । करइ विचार करौं का भाई ॥
तेहि अबसर रावनु तह आवा । संग नारि वह किएं बनावा ॥
वहु विधि खल सीतहि समझावा । साम दाम भय भेद देखावा ॥
कह रावन सुनु सुमुखिसयानी । मंदोदरी आदि सब रानी ॥
तब अनचरौ करउ पन मोरा । एक बार विलोकु मम ओरा ॥
तून घर ओट कहति बेदेहि । मुमिरि अवधपति परम सनेही ॥
सुनु इसमुख खद्योत प्रकासा । कबहुं कि नलिनी करइ विकासा ॥
अस मन समझ कहति जानकी । खल मुषि नहि रघुवीर जानकी ॥
सठ सुने हरि जानेहि मोहि । अधम निलज्ज लाज नहि तोही ॥

दो०—आयुहि सुनि खद्योत सम रामहि भानु समान ॥५॥
सीता ते मम कृत अपमाना । कटिहरुं तब सिर कठिन कृपाना ॥
नाहि त सर्पदि मानु मम बानी । सुमुखि हेति न त जीवन हानी ॥
स्थाम सरोज दाम सम सुन्दर । प्रभु भुज करि कर सम दसकंधर ॥
सो भुज कंठ कि तब असि धोरा । सुनु तठ अस प्रवान पन मोरा ॥
चन्द्रहास हरु मम परितापं । रघुपति विरह अनल संजातं ॥
सीतल निसित बहसि बर धारा । कह सीता हरु मम दुख भारा ॥
सुनत बचन पुनि मारन धावा । मयतनयां कहि नीति बुझावा ॥
कहेसि सकल निसिचरिन्ह बोलाई । सीतहिवहु विधि त्रासहजाई ॥
मास दिवस महुं कहन न माना । तो में माराबि काढि कृपाना ॥

दो०—भवन गयउ दसकंधर इहो पिसाचिनि वंद ।
सीतहि त्रास देखावहि धराहि रूप वहु मद ॥६॥
चिजटा नाम रावनसी एका । राम चरन रति निपुन विवेका ॥
सबन्ही बोलि सुनाएसि सपना । सीतहि सेह करहु हित अपना ॥

सपने बातर लंका जारी । जात धान सेना सब भारी ॥
खर आळड नगन दससीता । मृदित सिर खंडित भुज बोसा ॥
एहि विधि सो दच्छन दिसि जाई । लंका मनहुं विभीषण पाई ॥
नगर फिरी रघुवीर दोहाई । तब प्रभु सौता बोलि पठाई ॥
यह सपना मे कहउ पुकारी । होइहि सत्य गए दिन चारी ॥
तासु बचन सुनि ते सब डरी । जनक मुता के चरनहिं परी ॥

दो०—जहं तहं गई सकल तब सीता कर मन सोच ।

मास दिवस बोते भोहि मारिहि निसिचर पोच ॥७॥
विजटा सन बोली कर जोरी । मात विपति संगिनि ते मोरी ॥
तजे देह कह बेगि उपाई । दुसह विरहु अब नहि सहि जाई ॥
आनि काठ रच चिता बनाई । मात अनल पुनि देहि लगाई ॥
सत्य करिह मम प्रीति सयानो । सुनं को अवन सूल सम बानो ॥
सुनत बचन पद गहि समझाएसि । प्रभु प्रताप बलसुजसु सुनाएसि ॥
निसि न अनल विल सुनु सुकुमारी । असकहि सोनिज भवन सिधारी ॥
कह सीता विधि भा प्रतिकला । मिलहि न पावक मिटिहि न सूला ॥
देखिअत प्रगट गगन अंगारा । अवति न आवत एकउ तारा ॥
पावकमय सति व्यवत न आपो । मानहुं भोहि जानि हतभागी ॥
सुनहि बिनय मम बिटप असोका । सत्य नाम कहहरु मम सोका ॥
नतन किसलय अनल समाना । देहि अगिनि जनि करहि निदाना ॥

देखि परम विरहाकुल सीता । सो छन कपिहि कल्प सम बीता ॥

दो०—कपि करि हृदयं विचार दोन्हि मृदिका डारि तब ।

जन असोक अंगार दोन्हि हरायि उठि कर गहेज ॥८॥
तब देखो मृदिका मनोहर । राम नाम अंकित अति सुन्दर ॥
चकित चितब मुदरो पहिचानो । हरय विषाव हृदयं अकुलानी ॥
जोति को मकह जजय रघुशाई । माया ते असि रच नहि जाई ॥
सीता मन विचार कर नाना । यथुर बचन बोले हनुमाना ॥
रामचन गन बरने लागा । सुनतहि सीता कर दुख भागा ॥
लामो सुने अवन मन लाई । आदिहु ते सब कथा सुनाई ॥
अवनामृत जेहि कथा सुहाई । वही सो प्रगट होति किन भाई ॥
तब हनुमंत निकट चलि गयऊ । फिर बेटी मन चिसमय भयऊ ॥
राम दूत में मातु जानकी । सत्य सपथ करनानिधान की ॥
यह मृदिका भानु में आनो । दोन्हि राम तुम्ह कहुं सहिवानी ॥

स्तोत्र-शक्ति

नर यानरहि संग कहु केसे । कही कथा भई संगति जैसे ॥
दो०—कपि के बचन सप्रेम मुनि उपजा मन विस्वास ।

जाना मन कम बचन यह कृपा सिधु कर दास ॥१३॥
हरिजन जानि प्रीति अति गाढ़ी । सजल नयन पुलकावल दाढ़ी ॥
बूढ़ विरह जलधि हनुमाना । भयहु तात भो कहु जलजाना ॥
अब कहु कुसल जाउ बलिहारी । अनुज सहित सुख भवन करारी ॥
कोमल चित्र कृपाल रघुराई । कपि केहि हेतु परो निठराई ॥
सहज बानि सेवक सुख दावक । कबहुक सुरति करत रघुनाथक ॥
कबहु नयन मन सीतल ताता । होइहहि निराजि स्पाम भूदु गाता ॥
बचन न आब नयन भरे बारी । अहड़ नाय ही निपट बिसारी ॥
देलि परम विरहाकुल सीता । बोला कपि भूदु बचन बिनीता ॥
मातु कुसल प्रभु अनुज समेता । तब दुख दुखी सुकृपा निकेता ॥
जानि जननी मानहु जियं ऊना । तुम्ह ते प्रेम राम के दूना ॥
दो०—रघुपति कर संदेशु अब सुनु जननी घरि धीर ।

अस कहि कपि गदगद भयउ भरे विलोचन नौर ॥१४॥
कहेउ राम वियोग तब सीता । भो कहु सकल भए विपरीता ॥
नव तरु कितलय मनहु कृसान । कालनिसा सम निसि तसि भानु ॥
कुबलय विपिन कुंत बन सरिसा । वारिद तपत तेल जनु चरिसा ॥
जे हित रहे करत तेई पीरा । उगर खास सम विविध तसीरा ॥
कहेउ ते कछु दुख धटि होई । काहि कही यह जान न कोई ॥
तत्व प्रेम कर मम अरु तोरा । जानत प्रिय एकु मन मोरा ॥
सो मनु सदा रहत तोहि पाही । जानु प्रीति रतु एतनेहि माही ॥
प्रभु सदेशु सुनत बंदेही । मगन प्रेम तन सुधि नहि तेहि ॥
कहि कपि हृदय धीर धरु माता । सुमिरि राम सेवक सुखदाता ॥
उर अनहु रघुपति प्रभुताई । मुनि मम बचन तजहु कबराई ॥
दो०—निसिचर निकर पंतग सब रघुपति बान हृतानु ।

जननी हृदय धीर धर जरे निसाचर जानु ॥१५॥
जो रघुबीर होति सुधि पाई । करते नहि विलंबु रघुराई ॥
राम बान रवि उए जानकी । तम बलय कहु जानुधान की ॥
जबहि मातु मे जाकं लवाई । प्रभु आयनु नहि राम दोहाई ॥
कछुक दिवत जननी धर धोरा । कपिन्ह सहित अहहि रघुबीरा ॥
निसिचर मारी तोहि ले जेहि । तिहु पर नारदाई जनु गेहहि ॥

१०४

स्तोत्र-शक्ति

है सुत कपि सब तुम्हहि समाना । जानु धान अति भट बलवाना ॥
मोरे हृदय परम संदेहा । मुनि कपि प्रगट कीन्हि निज देहा ॥
कनक धूधराकार सरीरा । समर भयंकर अतिशाल बीरा ॥
सीता मन भरोस तब भयङ । पुनि लघु लघु पद्मनसुल लघङ ॥
दो०—सुनु माता सालाम्बा नहि बल बृद्धि विसाल ।

प्रभु प्रताप ते गदडहि छाइ परम लघु द्याल ॥१६॥
मन संतोष सुनत कपि बानी । भगति प्रताप तेज बल सानी ॥
आतिथ दीन्हि राम प्रिय जाना । होहु तात बलसील निधाना ॥
अजर अमर गुननिच तुल होह । कहु बहुत रघुनाथक छोह ॥
करहु कृपा प्रभु जस सुनि काना । निर्भर प्रेम मगन हनुमाना ॥
बार बार नाएति पव सीसा । बोला बचन जोरि कर कोसा ॥
अब कृत कृत्य भयउ मे माता । आसिय तब अमोघ विह्वाता ॥
सुनहु मातु भोहि अतिसय भाषा । लागि देलि तुन्दर फल द्वाषा ॥
सुनु सुत करहि विपिन रघुबारी । परम सुभट रजनीचर भारी ॥
तिन्ह कर भय माता भोहि नाही । जो तुम्ह सुख मानहु मन माही ॥
दो०—देल बल बृद्धि निपुन कपि कहेउ जानकी जाहु ।

रघुपति चरन हृदयं धरि तात मधुर फल लाहु ॥१७॥
बलेउ नाइ सिर पंठे उ बागा । फल बाएति तह तोरे लागा ॥
रहे तही वह भट रखवारे । कछु मारेति कछु जाह पुकारे ॥
नाय एक आवा कपि भारी । तेहि असोक बाटिका उजारी ॥
खाएति फल अरु विटप उपारे । रचछक नदि नदि महि डारे ॥
मुनि रावन पठे भट नाना । तिन्हहि देलि गजेउ हनुमाना ॥
सब रजनी चर कपि संवारे । गए पुकारत कछु जघमारे ॥
पुनि पठयउ नेहि अच्छु कुमारा । बला संग ले सुभट अपारा ॥
आवत देलि विटप गहि तजां । ताहि निपाति महावुनि गर्जा ॥
दो०—कछु मारेति कछु नदेति कछु मिलएति धरि धरि ।

कछु पुन जाइ पुकारे प्रभु नकंद बल भूरि ॥१८॥
मुनि सुत बध लकेत रिसाना । पठएति बेघनाद बलवाना ॥
मारसि जनि सुत बाधसु ताहि । देलिज कपिहि कहो कर आही ॥
बला इडजित जतुलित जोया । बंधु निधन मुनि उपजा कोधा ॥
कपि देला दाळन भट बावा । कटकटाई गर्जा अरु धावा ॥
अति विसाल तह एक उपारा । विरच कोहि लकेत कुमारा ॥

स्तोत्र-शक्ति

१०५

रहे महाभट तके संगा । गहि गहि कपि मद्दइ निज अंगा ॥
तिन्हाहि निपाति ताहि सन बाजा । भिरे ज़गल मानहुं गजराजा ॥
मठिका मारि चढ़ा तह जाई । ताहि एक छन मुरुछा आई ॥
उठि बहोरि कोन्हिसि बहु माया । जीति न जाइ प्रभजन जाया ॥

दो०—बहुम अस्त्र तेहि सांधा कपि मन कीन्ह विचार ।

जो न बहुमसर मानउ महिम मिट्ठई अपार ॥११॥

बहुमवान कपि कहु तेहि नारा । परतिहुं बार कटकु संधारा ।
तेहि देखा कपि मुहुचित भयऊ । नागपास बाघेसि लै गयऊ ॥
जामु नाम जपि सुनहु भवानी । भाव बंधन काटहि नर ग्यानी ॥
तामु द्रुत कि बंध तह आवा । प्रभु कारज लगि कपिहं बंधावा ॥
कपि बंधन सुनि निसिचर धाए । कीरुक लागि सभा सब आए ॥
दसमुख सभा दीखि कपि जाई । कहि न जाइ कछु अति प्रभताई ॥
कर जोरे सुर दिसिप बिनीता । भूकुटि बिलोकत सकल सभोता ॥
देखि प्रताप न कपि मन संका । जिमि अहिगन महुं गरुड़ असंका ॥

दो०—कपिहि विलोकि दसानन बिहसा कहि दुवाद ।

सुत घघ सुरति कीन्ह पुनि उपजा हृवयं विषाद ॥२०॥

कहु लंकेस कबन तें कोसा । केहि के बल धालेहि बन खोसा ॥
को धैं श्वेन सुनेहि मोहि । देखउं अति असंक सठ तोही ॥
मारे निसिचर केहि अपराधा । कहु सठ तोहि न प्रान कई बाधा ॥
सुनु राबन बहुमांड निकाया । पाढ जामु बल विरचित माया ॥
जाके बल विरचि हरि ईसा । पालत सूजत हरत दससीसा ॥
जा बल सीत धरत सहसानन । अंडकोस समेत गिरि कानन ॥
धरई जो विविध देह सुरत्राता । तुम्ह से सठन्ह सिखावनु बाता ॥
हर कोदंड कठिन जीहं भंजा । तेहि समेत नृप दल मद गंजा ॥
खर दृष्टन त्रिसिरा अरु बालो । बधे सकल अनुलित बलसाली ॥

दो०—जाके बल लबलेस तें जितेहि चराचर ज्ञारि ।

तामु द्रुत में जा करि हरि आनेहु प्रिय नारि ॥२१॥

जानउं में तुम्हारि प्रभुताई । सहसवाहु सन परी लराई ॥
समर बालि तन करि जसु पाचा । सुनि कपि बचन बिहसि बिहराचा ॥
खायउं फल प्रभु लागी भूल्ला । कपि सुभाव तें तोरेउं लखा ॥
सब के वह परम प्रिय लानी । माराह मोहि कुमारग गामी ॥
जिन्ह मोहि मारा ते में मारे । तेहि पर बाधउं तनयं तुम्हरे ॥

मोहि न कछु धांधे कई लाजा । कीन्ह चहउं निज प्रभु कर काजा ॥
विनती करउं जोरि कर राबन मुनहु मान तजि मोर तिलावन ॥
देखहु तुम्ह निज कुलहि विचारी । भ्रमतजि भनहु भगत भय हारी ॥
जाक डर अति काल डेराई । जो सुर अमुर चराचर जाई ॥
तासों वयक कबहु नहि कीजे । मोरे कहु जानकी दीजे ॥

दो०—प्रनतपाल रथुनायक करुना सिधु ज्ञारि ।

गए सरन प्रभु राखिहै तब अपराध विसारि ॥२२॥

राम चरन पंकज उर धरहु । लंका अचल राजु तुम्ह करह ॥
रिखि पुलस्ति जसु विमल मध्यंका । तेहि ससि महु जनि हाहु कलंका ॥
राम नाम बिनु गिरा न सोहा । देखु विचारि त्यागि मद मोहा ॥
बसन हीत नहि सोहु सुरारो । सब भूपन भूषित बर नारो ॥
राम विमल सपति प्रभुताई । जाइ रही पाई बिनु पाई ॥
सजल मल जिन्ह सिरितन्ह नाहो । बरवि गए पुनि तबहि सुखाही ॥
सुनु दसकांड कहउं पन रोपी । विमल राम ब्राता नहि कोपी ॥

दो०—सोहमूल बहु सुल प्रद रथगहु तन अभिमान ।

भजहु राम रथुनायक कृपा सिधु भगवान ॥२३॥

जदपि कही कपि अति हित बानी । भागति विवेक विरति नय सानी ॥
बोला विहसि महा अभिमानी । भिला हमहि कपि गुर बड़ा ग्यानी ॥
मृत्यु निकट आई खल तोही । लागेसि अधम सिखावन मोही ॥
उलटा होइहि कहु हनमाना । भतिभ्रम तोर प्रगट में जाना ॥
सुनि कपि बचन बहुत लिखिआना । देखि न हरहु मूह कर प्राना ॥
सुनत निसाचर भारन धाए । सचिवन्ह सहित विभीषण आए ॥
नाइ सीमु करि विनय बहता । नीति विरोध न मारिब दृता ॥
आन दंड कछु करिब गोसाई । सबहो कहा मंत्र भल भाई ॥
सुनत बिहसि बोला दुसकंधर । अंग भंग करि पठइस बन्दर ॥

दो०—कपि के ममता पंछ पर सबहि कहउं समझाई ।

तेल बोरि पट बांधि पुनि पाबक देहु लगाई ॥२४॥

पूछहीन बानर तह जाइहि । तब सठ निज नायहि लइ आइहि ॥
जिन्ह कोन्हिसि बहुत बड़ाई । देखउं में तिन्ह के प्रभुताई ॥
बचन सुनत कपि मन मुसुकाना । भह सहाय सारद में जाना ॥
जातुधान सुनि राबन बचना । लागे रचे मूढ़ सोइ रचना ।

रहा न नगर वसन धूत तेला । बाढ़ी पूँछ कीन्ह कपि खेला ॥
कौतुक कहं जाए पुरवासी । मार्गांह चरत कराहं वह हांसी ॥
बाजहि दोल देहि सब तारी । नगर फेरि पुनि पूँछ प्रजारी ॥
पावक जरत देखि हनुमंता । भयउ परम लघु फैप दुरंता ॥
निवृकि चढ़ेउ कपि कनक अटारी । भई सभीत निसाचर नारी ॥

दो०—हरि प्रेरित तेहि अवसर चले मचत उनचास ।

अद्वास करि गर्जा कपि बड़ि लाग अकास ॥२५॥
बेह विताल परम हरु आई । मंदिर ते मंदिर चह थाई ॥
जरइ नगर भा लोग विहाला । इषट लपट बहु कोटि कराला ॥
तात मातु हा सुनिअ पुकारा । एहि अवसर को हनहि उबारा ॥
हम जो कहा वह कपि नहि होई । बानर रूप घरे सुर कोई ॥
साथु अवग्या कर फलु एसा । जरइ नगर जनाथ कर जैसा ॥
जारा नगरु निमिष एक माही । एक विभीषण कर गूह नाही ॥
ता कर दूत अनल जोहि सिरिजा । जरा न सो तेहि कारन गिरिजा ॥
उलटि पलटि लंका सब जारी । कदि परा पुनि तिथु मसारी ॥

दो०—पूँछ बुझाइ ज्ञाइ श्रम धरि लघु रूप बहोरि ।

जनकमुता के आगे ठाड़ भयउ कर जोरि ॥२६॥
मातु मोहि दीज कछु चोन्हा । जैसे रघुनाथक मोहि दीन्हा ॥
बूँडामनि उताररि तब दयऊ । हरय समत पवनमुत लयऊ ॥
कहेहु तात अस मोर प्रनामा । सब प्रकार प्रभु पुरनकामा ॥
दीन दयाल विरिदु संभारी । हरहु नाथ गव संकट भारी ॥
तात सक्तुत कथा सुनाएहु । बान प्रताप प्रभुहि समझाएहु ॥
मात दिवस महु नाथु न आवा । तो पुनि मोहि जिअत नाह पावा ॥
कहु कपि केहि विधि राखी प्राना । तुम्हु तात कहत अब जाना ॥
तोहि देखि सीतालि भई छाती । पुनि मोहु साइ दिन सो राती ॥

दो०—जनक मुतहि समझाइ करि वहुविधि धीरज दीन्हा ।

चरन कमल सिरु नाइ कपि गवतु राम पहि कोन्ह ॥२७॥
चलत महाधनि गर्जसि भारी । गर्भ लवर्हि सुनि निसिचर नारी ॥
नाथि तिथु एहि पारिह आवा । सबद किलिकिला कपिन्ह सुनावा ॥
हरये तब विलोकि हनुमाना । नैन जन्म कपिन्ह तब जाना ॥
मख प्रसन्न तन तेज विराजा । कोन्हेसि रामचन्द्र कर काजा ॥
मिले सकल जीत भए मुखारी । तलकत मीन पाव जिमि बारी ॥

१०८

स्तोत्र-शक्ति

चले हरावि रघुनाथक पासा । छंत कहत नदल इतिहासा ॥
तब मध्यबन भीतर सब आए । ब्रंगद समत मधु फल खाए ॥
रखबारे जब बरजन लागे । मुठि प्रहार हनत सब भागे ॥

दो०—जाह पुकारे ते सब बन उजार जबराज ।

पुनि सुप्रोव हरय कपि करि आए प्रभु काज ॥२८॥

जो न होति सीता सुषिं पाई । मधुबन के फल सकहि कि खाई ॥
एहि विधि मन विचार कर राजा । आइ गए कपि तहित समाजा ॥
आइ सबान्ह नावा पद सीता । मिलेउ सबन्हि अति प्रभ कपीता ॥
पूँछी कुसल कुसल पद देखो । राम हृषा भा काजु विसेधी ॥
नाथ काजु कोन्हेहु हनुमाना । रोख सकल कपिन्ह के प्राना ॥
सुनि सुप्रोव वहुरि तेहि मिलेझ । कपिन्ह सहित रघुपति पहि चलेझ ॥
राम कपिन्ह जब आवत देखा । किएं काजु मन हरय दिसेधा ॥
फटिक सिला बंठे हौ भाई । परे सकल कपि चरनहि जाई ॥

दो०—ग्रीति सहित सब भेटे रघुपति करना पंज ।

पूँछी कुसल नाथ अब कुसल देखि पद कंज ॥२९॥

जामबंत कह मुनु रघुरापा । जो पर नाथ करहु तुम्ह दाया ॥
ताहि सदा सुम कुसल निरंतर । सुर नर मुनि प्रसन्न ता ऊपर ॥
सोह विजई विनई गुन सागर । तानु सुजसु ब्रह्मोक उजागर ॥
प्रभु की हृषा भाउ सबु काजु । जन्म हमार सुफल भा बाजु ॥
नाथ पवनमुत कोन्ह जो करनी । सहस्रु मधु न जाइ सो वरनी ॥
पवनतनय के चरित सुहाए । जामबंत रघुपतिहि सुनाए ॥
सुनत कपानिधि मन अति भाए । पुनि हनुमान हरयि हिए लाए ॥
कहु तात केहि भाँति जानकी । राहित करति रच्छा खप्रान की ॥

दो०—नाम पाहु दिवत निति ध्यान तुम्हार क्षाप ।

लोचन निज पद जंत्रित जाहि प्रान कोहि बाट ॥३०॥

चलत मोहि चाजामनि दीन्ही । रघुपति हृदयं लाइ सोहि लोन्ही ॥
नाथ जूगल लीचन भरि बारी । बचन कहे कछु जनक कुमारी ॥
अनुज समेत गहेहु प्रभु चरना । दीन बंधु प्रनतारति हृतना ॥
मन कम बचन चरन अनरामी । केहि अपराध नाथ ही त्यागी ॥
अवगून एक मोर मे माना । विच्छरत प्रान न कीम्ह पवाना ॥
नाथ सो नयनन्हि को अपराधा । निसरत प्रान करहि हठि बाधा ॥
विरह अतिनि तन तल समीरा । खास जरइ छन माहि तरोरा ॥

स्तोत्र-शक्ति

१०९

नयन लवहि जलु निज हित लागी । जहु न पांच देह विरहागी ॥
सोता के अति चिपति बिसाला । बिनहि कहे मलि बीनदयाला ॥

३०—निमिष निमिष करनानिधि जाहि कल्प सम बीति ।

बेगि चलिअ प्रभु आनिभ भजबल खल दल जीति ॥ ३१ ॥

मुनि सोता दुख प्रभु सुख अपना । भरि आए जल राजिब नयना ॥
बचन कायं मन मम गति जाही । सपेन्हु बृहिअ चिपति कि ताहो ॥
कह हनुमंत चिपति प्रभु सोई । जब तब सुमिरन भजन न होई ॥
कैंटिक बात प्रभु जातुधान की । रियुहि जीति आनिदो जानकी ॥
मुनि कपि तोहि समान उपकारी । नहि कोउ सुरनर मुनि तनुधारी ॥
प्रति उपकार करों का तोरा । सनमुख होइ न सकत मन मोरा ॥
मुनि मुत तोहि उरित मं नाहों । देखेउं करि विचार मन माहो ॥

३०—मुनि प्रभु बचन बिलोकि मख गात हरयि हनुमंत ।

चरन परेउ प्रेमाकुल ब्राह्मि ब्राह्मि भगवत् ॥ ३२ ॥

बार बार प्रभु चहड उठावा । प्रेम मगन तेहि उठब न भावा ॥
प्रभु कर पंकज कपि के सीसी । मुमिर सो दसा मगन गौरीसा ॥
सावधान मन करि पुनि संकर । लागे कहन कथा अति सुन्दर ॥
कपि उठाइ प्रभु हृदयं लगावा । कर गहि परम निकट बैठावा ॥
कहु कपि रावन पालित लका । केहि चिधि दहेउ दुगं अति बंका ॥
प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना । बोला बचन विगत अभिमाना ॥
साझामग के बड़ि मनुसाई । साखा ते साखा पर जाई ॥

नाथ सिंधु हाटकपुर जारा । निसिचर गन बधि चिपिन उजारा ॥

सो सब तब प्रताप रथुराई । नाथ न कछु मोरि प्रभुताई ॥

३०—ता कहुं प्रभु कछु अगम नहि जा पर तुम्ह अनुकूल ।

तब प्रभाव बड़वानलहि जारि सकइ खलु तल ॥ ३३ ॥

नाथ भगति अति मुखदायनी । देहु कृपा करि अनपायनी ॥
मुनि प्रभु परम सरल कपि बानो । एवमस्तु तब कहेउ भवानी ॥
उमा राम मुझाउ जेहि जाना । ताहि भजनु तजि भावन जाना ॥
यह संचार जासु उर जाया । रथुपति चरन भगति सोइ पावा ॥
मुनि प्रभु बचन कहहि कपिबन्दा । जय जय जय कृपाल मुखकंदा ॥
तब रथुपति कपि पतिहि बोलावा । कहा खले कर करहु बनावा ॥
अब चिलंदु जेहि कारन कीओं । तुरत कपिन्ह कहु आयमु दोओ ॥

११०

स्तोत्र-गति

कौतुक देलि मुघन बहु बरबो । नम ते भवन खले मुर हरयो ॥
३०—कपिपति बेगि बोलाए आए जयय जय ।

नाना बरन अतुल बल बानर भालु बहय ॥ ३४ ॥

प्रभु पद कज नावहि सोसा । गर्जहि भालु महाबल कोसा ॥
देखों राम सकल कपि सेना । चितहु कृपा करि राजिब नेना ॥
राम कृपा बल पाइ कपिदा । भए पच्छानुत मनहु गिरिदा ॥
हरयि राम तब कीन्ह पयाना । सगुन भए सुन्दर सुभ नाना ॥
जासु सकल भगलधय कीसी । तानु पद्मन सगुन यह नीती ॥
प्रभु पयान जाना बंदेहो । फरकि बाम जंय जनु कहि देहो ॥
चला कटकु को बरने पारा । गर्जहि बानर भालु अपारा ॥
नख आयय गिरि पादपशारी । खले गगन महि इच्छाचारी ॥
केहरिनाद भालु कपि करहो । इगमगाहि दिग्मज चिक्करहो ॥

३० चिक्करहि दिग्मज डोल महि गिरि लोल सागर लारभरे ॥

मन हरय तम गंधर्व मुनि नाग किनर दुख टरे ॥

कटकटहि मकंट चिकट भट बहु कोटि कोटिन्ह आवहो ॥

जय राम प्रबल प्रताप कोसलनाय गन गन गावहो ॥ १ ॥

सहि सक न भार उदार अहिपति बार बारहि मोहर्हि ॥

गह दसन पुनि पुनि कमठ पुष्ट कठोर सो किमि सोहर्हि ॥

रथुबोर रहिर प्रधान प्रस्त्वित जानि परम सुहावनी ॥

जनु कमठ लापर सर्पराज सो लिलत अविचल पावनी ॥ २ ॥

३०—एहि चिधि जाइ कृपा निधि उतरे सागर तीर ।

जहं जहं लागे खान फल भालु चिपुल कपि बीर ॥ ३५ ॥

उहो निसाचर रहहि संसका । जब ते जारि गथउ कपि लंका ॥

निज निज गृहं सब करहि चिचारा । नहि निसिचर कुल केर उधारा ॥

जासु दूत बल बरनि न जाई । तेहि आएं पुर कवन भलाई ॥

दूतिन्ह सन मुनि पुरजन जानो । मंदोदरी अधिक अकुलानो ॥

रहसि जोरि कर पति पा लागी । बोलो बचन नीति रस पागी ॥

कांत करय हरि सन परहरहर । मोर कहा अति हित हियं घरहू ॥

समसत जासु दूत कई करनि । लबहि गमं रजनीचर परनी ॥

तासु नारि निज सचिव बोलाई । पठवहु कांत जो चहु भलाई ॥

तब कुल कमल चिपिन दुखदाई । सोता सोत निजा सम जाई ॥

मुनहु नाथ सोता चिन् दीन्हे । हित न तुम्हार सम् जन कीन्हे ॥

स्तोत्र-गति

१११

दो०—राम बान अहि गन सरिस निकर निसावर भेक ।

जल लगि प्रसत न तब लगि जतनु करहू तजिटेक ॥३६॥
ध्वनि सुनी सठ ता करि बानी । बिहसा जागत चिदित अभिमानी ॥
सभय मुभाउ नारि कर साचा । मंगल महू भय मन अति काचा ॥
जो आवई मक्कंट कटकाई । चिर्भाइ चिचारे नितिचर लाई ॥
कपहि लोकप जाकी जासा । तासु नारि सभीत वहि हासा ॥
अत कहि चिहति ताहि उर लाई । चलेउ समाँ ममता अधिकाई ॥
मंडोदरि हृदय कर चिता । भयउ कात पर चिधि चिपरीता ॥
बैठउ तभा खबरि असि पाई । सिधु पार सेना तब आई ॥
चिहति सचिव उचित मत कहहू । ते सब हँसे मष्ट करि रहहू ॥
जितेहु सुरासुर तब अम नाही । नर बानर केहि लेखे माही ॥

दो०—तचिव बैद गूर तोनि जों प्रियोलहि भय आस ॥३७॥

राज धर्म तन तीनि कर होइ वेगिहों नास ॥३७॥
सोइ रावन कहु बनी सहाई । अस्तुति करहि सुनाई सुनाई ॥
अवसर जानि चिभीयनु आवा । भाता घरन सीधु तेहि नावा ॥
पुनि तिह नाई बैठ निज आसन । बोला बचन पाई अनसासन ॥
जो कृपाल पूछिह मोहि बाता । नति आङ्गप कहउ हित ताता ॥
जो अपन चाहे कल्याना । सुनसुमर्ति सुभ गति सुख नाना ॥
सो परनारि लिलोर गोसाई । तजउ चउथि के चढ कि नाई ॥
चौदह भुवन एक पति होई । भूतद्वौह तिष्ठइ नहि तोई ॥
गुन सागर नागर नर जोऊ । अलय लोभ भल कहइ न कोऊ ॥

दो०—काम कोध लद लोभ सब नाथ नरक के पथ ।

सब परिहरि रथुबीरहि भजहू भजहि जेहि संत ॥३८॥

तात राम नहि नद भूपाला । भुवनेश्वर कालहू कर काला ॥
जहहू अनाभय अज भगवंता । व्यापक अजित अनादि अनंता ॥
यो हिज धेनु देव हितकारी । हुपातिधु मानुव तनु धारी ॥
गन इजन भेजन खल बाता । देव धर्म रक्षक सुनु धाता ॥
ताहि यह तजि नाहज माया । प्रनतारिति भेजन रथुनाया ॥
देहु नाथ प्रभु कहु बेदेहि । भजहू राम विनु हेतु सनेही ॥
सरन गए प्रभु ताहु न त्यागा । चिल झोह कृत अथ जेहि लागा ॥
जातु नाम त्रय ताप नसावन । सोइ प्रभु प्रणाट समझु जियं रावन ॥

स्तोत्र-शक्ति

४१२

दो०—बार बार पद लागउ विनय करउ दससीस ।

परिहरि मान माह पद भजहू कोसलाधीस ॥३९॥(क)
मुनि पुलस्ति निज सिध्य सन कहि पठई यह बात ।

तुरत सो मै प्रभु सन कहो पाई सुजबसरु तात ॥३९॥(च)
माल्यवंत अति तचिव सथाना । तासु बचन मुनि अति सुख माना ॥
तात अनुज तब नोति चिभयन । सो उर धरहू जो कहत चिभीयन ॥
रिपु उतकरव कहत सठ दोऊ । दूरि न करहू इहौ हड़ कोऊ ॥
माल्यवंत गृह गयउ बहोरी । कहू चिभीयू पुनि कर जोरो ॥
मुमति कुमति सब कोउ रहही । नाथ पुरान निगम अस कहही ॥
जहाँ मुमति तहं संपति नाना । जहाँ कुमति तहं चपिति निदाना ॥
तब उर कुमति बसी चिपरीता । हित अनहित भानहू रिपु प्रोता ॥
कालराति नितिचर कुल केरो । तेहि लोता पर प्रोति धनेरो ॥

दो०—तात चरत गहि मानउ रालहू भोर इलार ।

सीता देहु राम कहू अहित न होइ तुम्हार ॥४०॥

बुध पुरान धृति संमत बानी । कहो चिभीयन नोति बखानी ॥
मुनत दसानन उठा रिसाई । खल तोहि निकट मृत्यु अब आई ॥
जिहासि तदा सठ मोर जिआवा । रिपु कर पच्छ मृड़ तौहि भावा ॥
कहुसि न खल अस को जग माही । भुज बल जाहि जिता मै नाही ॥
मम पुर चिति तपतिन्ह पर प्रोती । सठ चिलु जाइ तिन्हहि कहु नोती ॥
धेस कहि कोन्हेसि चरन प्रहारा । अनज गहे पद बारहि बारा ॥
उमा सत कह इहड़ बड़ाई । मंद करत जो करउ भलाई ॥
तुम्ह पितु सरिस भलेहि मोहिमारा । रामु भजे हित नाथ तुम्हारा ॥

दो०—रामु सत्यसंकल्प प्रभु सभा कालबस तोरि ।

मै रघुबीर सरन अब जाउं हहु जनि खोरि ॥४१॥

अस कहि चल । चिभीयन जबही । आयूहीन भए सब तबही ॥
साधु अवग्या तुरत भवानी । कर कल्याण अखिल कंहानी ॥
रावन जबहि चिभीयन त्यागा । भयउ चिभव चिन तवहि अभागा ॥
चलेउ हरिण रथुनायक पाही । करत मनोरप वहु मन माही ॥
वेखिहूं जाइ चरन जलजाता । अरन मुदुल सेवक सुखदाता ॥
जे पद परसि तरी रियनारी । दंडक कानन पावनकारी ॥
जे पद जनकसुता उर लाए । कपट कुरंग संग घर धाए ॥

स्तोत्र-शक्ति

५

११३

हर उस सर सरोज पद जेई । अहो भाग्य मैं देखिहउं तेई ॥

दो०—जिन्ह पायन्ह के पायुकन्ह भरतु रहे मन लाइ ।

तेपद आजु विलोकिहउं इन्ह नयनन्ह अब जाई ॥४२॥

एहि विधि करत सप्रेम विचारा । आपउ सपदि सिथु एहि पारा ॥
कपिन्ह विभीषनु आवत देखा । जाना कोउ रिपु दूत विसेपा ॥
ताहि राखि कपीस पहि आए । समाचार सब ताहि सुनाए ॥
कह सुपीव सुनह रघुराई । आवा मिलन दसानन भाई ॥
कह प्रभु सखा बूझिए काहा । कहइ कपीस सुनह नरनाहा ॥
जानि न जाइ निसाचर माया । कामरूप केहि कारन आया ॥
भेद हमार लेन सठ आवा । राखिज बांधि मोहि अस भावा ॥
सखा नीति तुम्ह नीकि विचारी । मम पन सरनागत भयहारी ॥
सुनि प्रभु बचन हरय हनमान । सरनागत बच्छल भगवाना ॥

दो०—सरनागत कहु जै तजहि निज अनहित अनुभानि ।

ते नर पावंर पापमय तिन्हहि विलोकत हानि ॥४३॥

कोटि विप्र वध लार्हि जाह । आए सरन तजउ नहि ताह ॥
सनमुख होइ जीव मोहि जबहो । जब कोटि अब नासर्ह तवहो ॥
पापवत कर सहज सुभाऊ । भजन मोर तेहि भाव न काऊ ॥
जो ऐ दुष्ट हवय सोइ होई । मोरे सनमुख आव कि सोई ॥
निमंल मन जन सो मोहि पावा । मोहि कपट छल छिड न भावा ॥
भेद लेन पठ्य दससीसा । तवहु न कछु भय हानि कपीसा ॥
जग महुं सखा निसाचर जेते । लछिमन हनहि निमिष महुं तेते ॥
जो सभीत आवा सरनाई । रखिहउं ताहि प्रान की नाई ॥

दो०—उभय भाँति तेहि आनहु हंसि कहु कृपानिकेत ॥

जप कृपाल कहि कपि चले अंगद हनु समेत ॥४४॥

तादर तेहि जागे करि बानर । चले जहाँ रघुपति करुनाकर ॥
दूरिहि ते देखे द्वी भ्राता । नयनातद दान के दाता ॥
बहुरि राम छविधाम विलोकी । रहेउ ठटुकि एकटक पल रोकी ॥
मज प्रलंब कंजाहन लोचन । श्यामल गात प्रनत भय मोचन ॥
तिथि कंच आयत उर सोहा । आनन अमित मदन मन मोहा ॥
नयन नीर पुलिकित अति गाता । मन धरि धीर कही मुदु बाता ॥
नाय दसानन कर मै भ्राता । निसिचर बंस जनम सुरवाता ॥
सहज पापप्रिय तामस वेहा । जया उलूकहि तम पर नेहा ॥

स्तोत्र-शक्ति

११४

दो०—अवन सुजमु सुनि आयउ प्रभु भंजन भव भीर ।

त्राहि त्राहि आराति हरन सरन सुलद रघुबीर ॥४५॥

अस कहि करत देवत देखा । तुरत उठे प्रभु हरय विसेपा ॥
दीन बचन सुनि प्रभु मन भावा । भज विसाल गहि हृदय लगावा ॥
अनुज सर्हित मिलि डिग बंठारी । बोले बचन भगत भयहारी ॥
कहु लंकेस सहित परिवारा । कुसल कुठाहर बास तुम्हारा ॥
चल मंडली बसह दिनु रातो । सखा धरम निवहई केहि भाँति ॥
मै जानउ तुम्हारि सब रोती । अति नय निपुन न भाव जनोती ॥
बद भल बास नरक कर ताता । दुष्ट संग जनि देई विधाता ॥
अब पद देखि कुसल रघुराया । जो तुम्ह कोन्ह जानि जन दाया ॥

दो०—तब लगि कुसल न जीव कहु तपनेहु मन विद्याम ।

जब लगि भजत न राम कहु सोक धाम तजि काम ॥४६॥

तब लगि हृदय बसत खल नाना । लोभ मोह मच्छर मद नाना ॥
जब लगि उर न बसत रघुनाया । बरे चाप सायक कटि भाया ॥
ममता तरुन तभी अंधिआरी । राम द्वेष उलूक सुखकारी ॥
तब लगि वसति जीवन मन माही । जब लगि प्रभु प्रताप रवि नाहो ॥
अब मै कुसल भिटे भय मारे । देखि राम पद कमल तुम्हारे ॥
तुम्ह कृपाल जा पर अनकला । ताहि न व्याप त्रिविधि भव सूला ॥
मै निसिचर अति अधम सुभाऊ । सुभ आचरन कोन्ह नहि काऊ ॥

दो०—अहोभाग्य मम अभित अति राम कुल पूज ।

देखेउ नपन विरचि सिव सेव्य जगल पद कज ॥४७॥

तुनहु सखा निज कहउं सुभाऊ । जान भसूडि संभु गिरिजाऊ ॥
जो नर होइ चराचर ढोही । आवं समय सरन तकि मोहि ॥
तजि मद मोह कपट छल नाना । करउ उथ तेहि साथ समाना ॥
जननी जनक बंधु सुत दारा । तनु धनु भवन सुहृदय परिवारा ॥
सब के ममता ताग बटोरी । मम पद मनहि बांध बरि ढोरी ॥
समदरसी इच्छा कछु नाही । हरय सोक भय नहि मन माही ॥
अस सज्जन मम उर बस केसे । लोभी हृदय वसई धन जेसे ॥
तुम्ह सारिखे संत प्रिय मोरे । धरउ देह नहि आन निहोरे ॥

दो०—सगुन उपासक परहित निरत नीति दृढ़ नेम ।

ते नर प्रान समान मम जिन्ह के डिज पद प्रेम ॥४८॥

स्तोत्र शक्ति

११५

मुन् लकेस सकल गुन तोरे । ताते तुम्ह अतिसय प्रिय मोरे ॥
राम बचन मुनि बानर जूथा । सकल कहिं जय कृपा बहुथा ॥
मुनत विभीषण प्रभु कं बानो । नहि अधात अवनामृत जानो ॥
पद अंबज गहि बाराहि बारा । हृदय समात न प्रेम आपारा ॥
मुनहु देव सचराचर स्वामी । प्रनतपाल उर अंतरजामी ॥
उर कहु प्रथम बासना रही । प्रभु पद प्रीति सरित सो बही ॥
अव कृपाल निज भगति पावनी । देहु सदा सिव मन भावनी ॥
एवमस्तु कहि प्रभु रनधीरा । मागा तुरत सिधु कर नीरा ॥
जवापि सखा तब इच्छा नाही । मोर दरसु अमोर जग माही ॥
अस कहि राम तिलक तेहि सारा । मुनन बृष्टि नभ भई अपारा ॥

दो०—रावन कोध अनल निज स्वास समोर प्रचंड ।
जरत विभीषण राखेउ दीन्हेउ राजु अखंड ॥४९(क)॥

जो संपति सिव रावनहि दीन्हि दिए दस माय ।

सोइ संपदा विभीषणहि सकुचि दीन्हि रथुनाय ॥४९(ख)॥
अस प्रभु छाड़ि भजहि जे आना । ते नर पसु विनु पूछ विषाना ॥
निज जन जानि ताहि अपनावा । प्रभु मुभाव कपि कुछ मल भावा ॥
पुनि संवधं सर्व उर बासी । सर्वरूप सब रहित उदासी ॥
बोले बचन नीति प्रतिपालक । कारन मनुज दनुज कुल घालक ॥
मुन् कपोत लंका पति दीरा । केहि विधि तरिअ जलधि गंभीरा ॥
सकुल मकर उरग अव जाती । अति अगाध दुस्तर सब भाती ॥
कह लकेस मुनहु रथुनायक । कोटि सिधु सायक सब सायक ॥
जलपि तदपि नीति असि गाई । विनय करिअ सागर सन जाई ॥

दो०—प्रभु तुम्हार कुलगुर जलधि कहिं उपाय विचारि ॥
विनु प्रपास सागर तरिहि सकल भालु कपि धारि ॥५०॥
सला कही तुन्ह नीकि उपाई । करजि दंब जौ होइ तहाई ॥
मत्र न यह लछिमन मन भावा । राम बचन मुनि अति दुख पावा ॥
नाय देव कर कवन भरोसा । मोदिय सिधु करि मन रोसा ॥
कावर मन कहु एक अधारा । देव दंब आलसी पुकारा ॥
मुनत विहसि बोले रथुबीरा । ऐसेहि करब धरहु मन धीरा ॥
अस कहि प्रभु अनजहि समझाई । सिधु समोप गए रथुराई ॥
प्रथम प्रनाम कोन्ह सिर नाई । बंठे पुनि तट दम्भ दसाई ॥
जवाहि विभीषण प्रभु पहि आए । पाछे रावन दूत पठाए ॥

दो०—सकल चरित तिन्ह देखे धरे कपट कपि देह ।

प्रभु गुन हृदय सराहहि सरनागत पर नेह ॥५१॥
प्रगट बलानहि राम मुभाक । अति सप्रेम गा बिसरि दुराक ॥
रिपु के दूत कपिह तब जाने । सकल बाँधि कपोत पाह आने ॥
कह मुणाव मुनहु सब बानर । अंग अंग करि पठबहु निसिचर ॥
मुनि मुणीव बचन कपि बाए । बाँधि कटक चहु पास फिराइ ॥
बहु प्रकार मारन कपि लाए । दीन पुकारत तदपि न त्याए ॥
जो हमार हर नासा जाना । तेहि कोसलाधीस कं आना ॥
मुनि लछिमन सब निकट बोलाए । दया लागि हंसि तुरत छोड़ाए ॥
राव कर दीजहु यह पात । लछिमन बचन बाचु कुलधातो ॥

दो०—कहेहु मुखागर मूढ़ सन मम संदेशु उदार ॥

सीता दइ मिलहु न त आवा काल तुम्हार ॥५२॥

तुरत नाह लछिमन पढु माया । चले दूत बरनत गुन गाया ॥
कहत राम जसु लंका जाए । रावन चरन सीत तिन्ह नाए ॥
विहसि दसानन पूछो बाता । कहसि न सूक आपनि कुसलाता ॥
पुनि कहु खबरि विभीषण केरो । जाहि मृत्यु आई अति नेरो ॥
करत राज लंका सठ त्यागी । होइहि जब कर कीट अभागी ॥
पुनि कहु भालु कीस कटकाई । कठिन काल प्रेरित चलि आई ॥
जिन्ह के जीवन कर रखवारा । भवउ मृदुल चित तिधु विचारा ॥
कहु तपसिन्ह कं बात बहोरी । जिन्ह के हृदय आम अति मोरी ॥

दो०—को भई भेट कि फिरि गए अवन मुजसु मुनि मोर ।

कहसि न रिपु दल तेज बल बहुत चकित चित चोर ॥५३॥
नाय कृपा करि पूछेहु जैसे । मानहु कहा कोध तजि तैसे ॥
मिला जाइ जब अनुज तुम्हारा । जातोहि राम तिलक तेहि सारा ॥
राव दूत हमहि मुनि काना । कपिन्ह बाँधि दीन्हे दुख नाना ॥
अवन नासिका काटे लाए । राम सपथ दीन्हे हम त्याए ॥
पूछिहु नाय राम कटकाई । बनद कोटि सत बरनि न जाइ ॥
नाना बरन भालु कपि धारी । विकटानन विसाल भयकारी ॥
जहि पुर दहेउ हतेज मुत तोरा । सकल कपिन्ह महं तेहि बल थोरा ॥
अमित नाम भट कठिन कराला । अभित नाम बल विपुल विसाला ॥

दो०—हिविव मयंद नील नल अंगद गद विकटासि ।

वधिमूख केहरि निसठ सठ जामवंत बलरासि ॥५४॥

ए कपि सब मुधीव समाना । इन्ह सम कोटिन्ह गनइ को नाना ।
राम हृपा अतुलित बल तिनहीं । तून समान ब्रेलोकहि गनहीं ॥
जस मे सुना अबन इसकंधर । पदुम जठारह जूथप बन्दर ॥
नाथ कटक महं सो कपि नहीं । जो न तुम्हहि जीते रन माहीं ॥
परम ऋषि मीर्जाहि सब हाया । आयुषु एं न देहि रघुनाया ॥
सोषहि सिधु सहित ज्ञप व्याला । पुर्वाह न त भरि कुधर विसाला ॥
मदि गर्व मिलवहि इससोसा । ऐसेह बचन कहहि सब कीसा ॥
गर्वहि तज्जहि सहज असका । मानहु प्रसन चहत हहि लका ॥

दो०—सहज सूर कपि भालू तब पुनि सिर पर प्रभु राम ।
रावन काल कोटि कहु जीति सकहि संग्राम ॥५५॥
राम तेज बलि बुधि विपुलाई । सेष सहस्र सत सकहि न गाई ॥
सक सर एक सोषि सत सागर । तब भ्राताहि पूछेड तय नागर ॥
तामु बचन सुनि सागर पाहीं । भ्रागत पंथ हृपा मन माहीं ॥
सुनत बचन विहसा दससोसा । जो अति मतिसहाय कुत कीसा ॥
सहज भोए कर बचन दुडाई । सागर सन ठानी पचलाई ॥
मूँड मूँधा का करसि बडाई । रियु बल बढ़ि थाह मे पाई ॥
सचिव सभी त दिशीयन जाके । विजय विभूति कहां जग ताके ॥
सुनि खल बचन दूत रिस बाढ़ी । समय विचारि पविका काढ़ी ॥
रामानज दीनही यह पातो । नाय बलाइ जुडावहु छातो ॥
विहसि बाम कर लोन्ही रावन । सचिव बोलि सठ लाग बचावन ॥

दो०—बात्नह मनहि रियाइ सटजनि पालसि कुल खोस ।
राम विरोध न उदरसि सरन विनु अज इस ॥५६(क)॥

को तजि मान अनुज इव प्रभु पद पंकज नंग ।

होहि कि राम सरानल खल कुल सहित पतंग ॥५६(ख)॥
सुनत समय मन मूँझ मुकुराई । कहत दसानन सबहि सुनाई ॥
भूमि परा कर गहत अकासा । लघु तापस कर बाम बिलासा ॥
कह मुक नाय सत्य सब बानो । समझहु छाइ प्रकृति अभिमानो ॥
सुनहु बचन मम परिहरि कोधा । नाय राम सन तजहु विरोधा ॥
अति कोमल रघुबीर तुभान । जश्यपि अस्तिल लोक कर राक ॥
मिलत हृपा तुम्ह पर प्रभु करिहो । उर अपराध न एकउ परिही ॥
जनकसुता व्युत्तरिह दीजे । एतना कहा मोर प्रभु कीजे ॥
जब तेहि कहा देन बंबेहो । चरन अहार कोन्ह सठ तेही ॥

नाहु चरन सिर बला सो तहो । हृपा सिवु रघुनायक जहो ॥
करि प्रनामु निज कमा सुनाई । राम हृपा आपानि गति पाई ॥
रिवि अगस्ति की साव भवनो । राजस भयउ रहा मुनि इनी ॥
बंहि राम पद बारहि बारा । मुनि निज जाव्य कहु पगु धारा ॥

दो०—विनय न मानत बलधि जहु गए तीनि दिन बीति ।

बोले राम सकोप तब भय बिन होइ न ग्रीति ॥५७॥

लछिमन बान सरानल जान । सोयो बारिधि वितिल कुसान ॥
सठ सन बिनय कुटिल सत प्रोतो । सहज हृपन सन सुन्दर नीतो ॥
ममता रत सन यान कहानो । अति लोभी सन बिरति बखानो ॥
कोधिहि सम कानिहि हरि कथा । ऊसर बीज बंए फल जया ॥
जस कहि रघुपति चाप चडावा । यह नत लछिमन के मन भावा ॥
संधानेत प्रभु वितिल कराला । बठो उदधि उर अंतर ज्वाला ॥
मकर उरग सब गन अकुलाने । जरत जंतु बलनिधि जब जाने ॥
करक यार भरि भनि गन नाना । विप्र वप आयउ तजि नाना ॥

दो०—काठेहि पह कटोरी फरइ कोटि जतन कोउ लीच ।

बिनय न मान लागेस सुनु बाटेहि पह नव नीच ॥५८॥

समय सिधु गहि पद प्रभु केरे । उमह नाय सब अवगुन मेरे ॥
गगन समोर अनल जल घरनो । इन्ह कह नाय सहज जड़ करनी ॥
तब प्ररित मायो उपजाए । सुषिट हेतु सब पंथनि गाए ॥
प्रभु आपूरु जेहि कह जस जहई । सो तेहि भाँति रहे मुख लहई ॥
प्रभु भल कोन्ह मोहि तिल दीन्ही । मरजादा पुनि तुम्हरी कोन्ही ॥
डोल गवांर सुड पसु नारी । सकल ताङना के अधिकारी ॥
प्रभु प्रताप मे जाव मुखाई । उतरिहि कटक न मोरि बडाई ॥
प्रभु अग्या अपेल धृति गाए । करी सो बेगि जो तुम्हहि मोहाई ॥

दो०—सुनत विनोत बचन अति कह हृपाल मुकुराई ।

जहि विधि उतरे कपि कटक तात सो कहु उपाई ॥५९॥

नाय नोल नल कपि ढो भाइ । लरिकाइ रिवि आसिय ताई ॥
तिन्ह के परस किए गिरि मारे । उतरिहि जलधि प्रताप तुम्हारे ॥
मे पुनि उर यरि प्रभु प्रभुतई । करिहउ बल अनुमान सहाई ॥
एहि विधि नाय पयोंधि दंधाइज । जेहि पह सुनसु लोक तिन्ह गाइज ॥
एहिसर नम उत्तर तद जासो । हतहु नाय लल नर अब रासी ॥
सुनि हृपाल सागर मन पोरा । तुरतहि हरो राम इवधीय ॥

स्तोत्र-गति

वैति राम बल पौरुष भारी । हरषि पर्योनिधि भयज सुखारी॥
सकल चरित कहि प्रभुहि सुनावा । चरन बंदि पाथोधि सिवावा ॥

४० निज भवन गवनेउ तिथु श्री रघुपतिहि यह मत भायऊ ।
यह चरित कल महलर जथा मृति दास तुलसी गायऊ ॥

सुख भवन संसय समन दबन विवाद रघुपति गुन गाना ॥
तजि सकल आस भरोस गावहि सुनहि संतत सठ मना ॥

५० सकल मुमंगल दायक रघुनायक गुन गान ।
सादर सुनहि ते तरहि भव तिथु बिना जलजान ॥५०॥

अमोघशिवकवचम् :

अस्य श्रीशिवकवचस्तोत्रमन्तरस्य बस्त्रा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्री सदाशिवरुद्ग्रो देवता, हीं शक्तिः व कीलकम् श्री हूं, कलों बीजम्, सदाशिव प्रीत्यर्थे शिवकवचस्तोत्रजपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः:

ओम ब्रह्मऋषये नमः शिरसि ।
अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे ।
श्री सदाशिव रुद्रदेवताये नमः हृदि ।
हीं शक्तये नमः पादयोः ।
व कीलकाय नमः नामो ।
श्री हूं क्लीमिति बीजाय नमः गुह्ये ।
विनियोगाद नमः सर्वांगे ।

अर्थ करन्यासः:

ओम नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ओम हूं रा संव-
शक्तिधाम्ने ईशानात्मने अंगाणाम्यां नमः ॥
ओम नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ओम न रो नित्य-
तृप्तिधाम्ने तत्पुरुषात्मने तज्जनीम्यां स्वाहा: ॥

ओम नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ओम मं हं अना-
विक्षितधाम्ने अधोरात्मने मध्यमाम्यां वषट् ।

ओम नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ओम हि रे स्वतन्त्र-
शक्तिधाम्ने वामदेवात्मने अनामिकाम्यां हृत् ।

ओम नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ओम वां रो अलुस-
शक्तिधाम्ने सद्योजातात्मने कनिष्ठिकाम्यां बौघट् ।

ओम नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ओम यं र अनादि-
शक्तिधाम्ने सर्वात्मने करतलकरपृष्ठाम्यां फट् ।

हृदयाद्यगन्यासः :

ओम नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ओम हीं रा संव-
शक्तिधाम्ने ईशानात्मने हृदयाय नमः ।

ओम नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ओम न रो नित्य-
तृप्तिधाम्ने तत्पुरुषात्मने शिरसे स्वाहा ॥

ओम नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ओम मं हं अनादि-
शक्तिधाम्ने अधोरात्मने शिराये वषट् ।

ओम नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ओम शि रे स्वतन्त्र
शक्तिधाम्ने वामदेवात्मने कवचाय हृम् ।

ओम नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ओम वां रो अलुस-
शक्तिधाम्ने सद्योजातात्मने नेत्रप्रयाप बौघट् ।

ओम नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ओम यं र अनादि-
शक्तिधाम्ने सर्वात्मने अस्त्राय फट् ।

अथ ध्यानम्

वज्ज्वरं श्रुं क्रिनयनं कालकण्ठमर्दिदम् ।
सहस्रकरमप्युचं वन्दे शम्भुमुसमापतिम् ॥

ज्ञात्म उवाच

अथापरं सर्वं पुराणगुह्यं निः शेषपापो धहरं पवित्रम्
जयप्रदं सर्वं विप्रहिमो च वलयामि शंव कवचं हिताय ते ॥

नमस्कृत्य महादेवं विश्वव्यापिनमोश्वरम् ।
 वहये शिवमयं वमं सर्वरक्षाकरं नृणाम् ॥१॥
 शब्दी वेशे समासीनो यथावत्कल्पितासनः ।
 जितेन्द्रियो जितप्राणिंचन्तये क्षितिवमव्ययम् ॥२॥
 हृत्युण्डरीकान्तसंनिविष्ट
 स्वतेनसा व्याप्तनमो वकाशम् ।
 अतीनिवयं सूक्ष्ममनन्तमाद्य
 ध्यायत्परानवदमयं महेशम् ॥३॥
 ध्यानाचधूतात्मिलकमंवन्ध-
 दिवरं चिदानन्दनिमपचेताः ।
 वडकरन्याससमाहितात्मा
 शंकेन कुर्यात् कवचेन रक्षाम् ॥४॥
 मां पातु देवो खिलदेवतात्मा
 संसारकृपे पतितं गभीरे ।
 तत्राम दिव्यं वरमन्त्रमलं
 घुनोतु मे सर्वमधं हृदिस्थम् ॥५॥
 सर्वं त्र मां रक्षत् विश्वमूर्ति-
 ज्योतिर्मयानन्दधनश्चिदात्मा ।
 अणोरणीयानुकृतिरेकः
 स ईश्वरः पात भयादशेषात् ॥६॥
 यो भूख्लवेण नृणां करोति
 संजीवनं सो वतु मां जलेन्यः ॥७॥
 कल्पावसाने भूवनानि दग्धा
 सर्वाणि यो नृत्यति भूरिलोलः ।
 स कालरुदो वतु मां दवाग्ने-
 वात्यादिभोतेरक्षिलाच्च तापात् ॥८॥
 प्रदीपत्विद्युत्कनकावमासो
 विद्यावरान्तिकृठारपर्णिः ।
 चतुर्मुखस्तत्पुरुषस्तिनेत्रः
 प्राच्यरो स्तितं रक्षतु मामजस्त्रम् ॥९॥
 कुठारवेदाङ्गुष्ठापाशयाल-
 कपालदृशकालगृणाम् वधानः ।

चतुर्मुखो नीलरुचिलिनेत्रः
 पायादयोरो दिशि दक्षिणस्थाम् ॥१०॥
 कुन्देन्दुशंखस्फटिकावभासी
 वेदाक्षमालावदोभयांकः
 व्रयक्षश्चतुर्वेत्रं उरुप्रभावः ।
 सदो विजातो वतु मां प्रतीच्याम् ॥११॥
 वराज्ञमालाभयंकहस्तः
 सरोजकिं वल्कसमानवर्णः ।
 त्रिलोचनश्चादचतुर्मुखो मा
 पायादुदीच्यां दिशि वासदेवः ॥१२॥
 वेदाभयेद्वाकुञ्जपाशांक-
 कपालदृशकालकाशलपाणिः ।
 सितचूतिः पंचमुषो वतान्तमा-
 मोद्दान ऋच्चं परमप्रकाशः ॥१३॥
 मूर्धानभव्याप्रम चन्द्रमोलि-
 मलि नमाद्यादय भासत्तेत्रः ।
 नेत्रे ममव्याद भग्नेश्चार्हात् ।
 नासां सदा रक्षतु विश्वताथः ॥१४॥
 पापाच्छुतीं मे श्रुतिरीतकौतः
 कपोलनभव्यात् भृतं कमाली ।
 वक्षं सदा रक्षतु पंचवद्वां,
 जिह्वां सदा रक्षतु वेदजिह्वः ॥१५॥
 कण्ठं गिरोद्धो वतु नोलकण्ठः
 पाणिद्वयं पातु पिताकपर्णिः ।
 दोर्मुखभव्याप्रम घर्मवाहु
 वंक्षःस्थल द धमस्त्रान्तको इयात् ॥१६॥
 ममादेवरं पातु गिरोन्दृष्टनवा
 यस्यं ममाद्याप्रमदनान्तकारी ।
 हेरम्बतासो मम पातु नाभिः
 पापात् कटी पूर्वंटिरोद्धवारो मे ॥१७॥
 ऊरुद्ययं पातु कुचेरमिक्षो
 जान्मृद्युष मे जगदोद्धरी व्यात् ।

जघायुग पृष्ठकेतुरव्यात्
 पादौ ममाव्यात् सुखन्यपादः ॥१८॥
 महेश्वरः पातु दिनादियामे
 मां भृत्यामे वतु वामदेवः ।
 त्रिपद्मकः पातु तृतीयामे
 वृथद्वजः पातु दिनान्त्ययामे ॥१९॥
 पापान्तिशादी शशिशेखरो मा
 गंगाधरो रक्षतु मां निशीसे ।
 गौरीपतिः पातु निशावसाने
 मृत्यंजयो रक्षतु सर्वकालम् ॥२०॥
 अन्तःस्थितं रक्षतु शंकरो मां
 स्थाणः सदा पातु वहिःस्थितं माम् ।
 तदन्तरे पातु पतिः पश्चूनो
 सदाशिवो रक्षतु मां समन्तात् ॥२१॥
 तिष्ठन्तमव्याद्मुवनंकनाथः
 पापाद् वजन्तं प्रमथाधिनाथः ।
 वेदान्तवेदो वतु मां निष्पण्ण
 मामव्ययः पातु शिवः शयानम् ॥२२॥
 मार्गेषु मां रक्षतु नीलकण्ठः
 शैलादिदुर्गेषु पुरत्रयारिः ।
 अरथवासादिमहाप्रवासे
 पायान्मृगव्याध उदारशक्तिः ॥२३॥
 कल्पान्तकाटोपटप्रकोपः
 स्फुटाद्वाहासोच्चलिताष्टकोशः ।
 घोरारिसेनार्णविदुनिवार-
 महामयाद् रक्षतु वीरभद्रः ॥२४॥
 पत्पश्वमातंगघटावहय-
 सहस्रलक्षायुतकोटिभीषणम् ।
 अक्षीहिणीना शतमाततायिना
 छिन्द्यान्मृढो घोरकुठारधारया ॥२५॥
 निहन्तुदस्यन् प्रलयानलाचि-
 त्वलत् त्रिशूलं त्रिपुरान्तकस्य ।

१२४

स्तोत्र-शक्ति

शार्दूलसिंह-विकारिंहित्वान् पितॄकिम् ॥२६॥
 संत्रासप्तत्वीशधनः
 दुस्पन्दुदशकुन्दुर्गंतिदामैन्सय
 दुभिक्षद्वयसनदुस्सहद्यंशासि ।
 उत्पाततापविष्वभौतिमसद्राहृति
 व्याधीश्च नाशयतु मे जगतामधोशः ॥२७॥

ओम नमो भगवते सदाशिवाय सकलतत्वात्मकाय सकल-
 तत्वविहाराय सकललोककक्षमत्रे सकललोककक्षत्रे सकललो-
 कक्षगुरवे सकललोकक्षसाक्षिणे सकलनिगमग्रहाय सकलवरप्रदाय
 सकलदुरितातिभजनाय सकलजगदभव्यकराय सकललोकक्षकं-
 कराय शशांकज्ञेखराय शाश्वतनिजाभासाय निर्गुणाय निरपभाय
 नोहपाय निराभासाय निराभयाय निष्प्रवंचाय निष्कलकाय
 निहंन्दाय निस्तंगाय निमंलाय निर्गमाय नित्यरूपविभवाय
 निरूपभविभवाय निराधाराय नित्यशुद्धद्वपरिशूलंसच्चिदानन्दाद्व-
 याय परमशान्तप्रकाशतेजोहपाय जयजय महाद भट्टारीद
 भद्रावतार दुःखद्वावदारण महाभेरव कालभेरव कल्पान्तभेरव
 कपालभालाधर खट्टवांगस्त्रैगचम्पाशकुंशद महशूलचाप वाणिगदा
 शक्तिमन्दिपालतोमरमुसलमूदगरपटिशपरजपरिधमशण्डीशतघनी-
 चकाद्यायुधमोषणकर सहखमुखवंश्टाकराल विटाद्वाहास विस्फारित-
 शम्हण्डमण्डल नागेऽ कुण्डल नागेन्द्रहारात नागेन्द्रवलय
 नागेन्द्रमन्धर मृत्युञ्जय श्रयम्बक त्रिपुरान्तक विहृपाक्ष विश्वेश्वर
 विश्वरूप वृद्धवाहन विभूषण विश्वतेमख सर्वमतो रक्ष रक्ष
 मां ज्वल ज्वल महामृत्युभय भपमृत्युभय नाशय रोगभयमुत्सादयो
 त्सादय विप सर्पभयं शमय शमय चोहेभय मारय मारय नम
 शत्रनच्चाटयोच्चाटय ज्ञालेन विदारय विदारय कुठारेण भिन्नि
 भिन्निं खडगेन छिन्नि छिन्नि खट्टवाङ्गेन विपोषय विपोषय मुसलेन
 निष्पेषय निष्पेषय खाणः संताडयसंताडय रक्षासि भोषय भोषय
 भ्रतानि विद्रावय विद्रावय कूम्भाण्डवेतालमारोगणब्रह्मराक्षसन्
 संत्रासय संत्रासय ममाभयं कुरु कुरु वित्रस्तं मामश्वासय श्वासय
 नरकभयान्भामुद्वारयोद्वारय संजीवय संजीवय क्षुत्तदम्यां मामा
 प्याप्याप्याप्याप्य दुःखातुरं मामानन्दयानन्दय शिवकवचेन मामाच्छा-
 दयाच्छादव त्र्यम्बक सदाशिव नमस्ते नमस्ते नमस्ते ।

स्तोत्र-शक्ति

१२५

: लिङ्गभ उवाच :

इत्येतत्कवचं शंखं वरदं याहृतं मया ।
सर्वं बाधाप्रशमनं रहस्यं सर्वं देहिनाम् ॥२८॥
यः सदा धारयेन्मत्यः शंखः कवचमुक्तम् ।
न तस्य जापते कवापि भयं शम्भोरनुप्रहात ॥२९॥
क्षीणायुम् त्युमापद्मो महारोगहतो पिता ।
सद्यः मुखमवाप्नोति दीर्घमायुद्द्वच विन्दति ॥३०॥
सर्वदरिदयशमनं सांमगल्यविवर्णं नमः ।
यो धत्ते कवचं शंखं स देवेरपि पूज्यते ॥३१॥
महापातकसंघातं भैरव्यते चौपाततकः ।
देहान्ते शिवमानोति शिवबमानुभावतः ॥३२॥
त्वमपि अद्युया वत्स शंखं कवचमुक्तम् ।
धारयस्व मया दत्तं सद्यः थेयो ह्यवाप्त्यसि ॥३३॥

लिङ्गाष्टकम्

श्री गणेशाय नमः ॥

ब्रह्मसुरारि सुराचितलिङ्गं निर्मलं भासित शोभित लिङ्गम् ॥
जन्मजदुत्त विनाशकलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम् ॥१॥
देव मूर्नि प्रवराचितालिङ्गं कामदहं करुणाकर लिङ्गम् ॥
रावणदर्पं विनाशनलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम् ॥२॥
सर्वमुग्धिमुलेपित लिङ्गम् बुद्धि विवर्धनं कारण लिङ्गम् ॥
सिद्धं सुरासुर बंदित लिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम् ॥३॥
कनकं महामणि भूदित लिङ्गं कणिपति वेष्टित शोभित लिङ्गम् ॥
दक्षसुयज्ञ विनाशकलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम् ॥४॥
कुंकुमं चंदनं लेपित लिङ्गं पंकजं हारं सुशोभितलिङ्गम् ॥
संचितं पापं विनाशनलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम् ॥५॥
देवगणाचितं तेवित लिङ्गम् भावेभं कित्तिभिरेव च लिङ्गम् ॥६॥
दिनकर कोटि प्रभाकर लिङ्गम् तत्प्रण मामि सदाशिव लिङ्गम् ॥७॥

स्तोत्र-शति

१२६

अष्टदलोपरि वेष्टितलिङ्गं सर्वसमन्दव कारण लिङ्गम् ॥
अष्टदरित्रिविनाशित लिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम् ॥७॥
सुरगुह्यं सुरवत् पूजित लिङ्गम् सुरवत् पुष्पसदा चरित लिङ्गम् ॥८॥
परापरं परमात्मकलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम् ॥९॥
लिंगाष्टकमिदं पुज्यं यः पठोन्निष्ठवसन्निद्वा ॥
शिवं लोकम वाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥१०॥
इति श्री लिङ्गाष्टक स्त्रोतं संपूर्णम् ॥

— चन्द्रशेखराष्ट्रकम् —

श्री गणेशाय नमः ॥

चंद्रशेखर चंद्रशेखर चंद्रशेखर पाहिमाम् ॥
चंद्रशेखर चंद्रशेखर चंद्रशेखर रक्षमाम् ॥१॥
रत्नसानुशासनं रजताद्रिश्चुंगनिकेतनं,
सिंजनीहृतपद्मगद्वरं सच्चुतायनं सायकम् ॥
सिंप्रदायपुरत्रयं चिदिवालयं रभिवन्दितं,
चंद्रशेखरमाशये मम कि करिष्यति वै यमः ॥२॥
पञ्चपात्रं पुष्पगन्धपदाम्बु जडयशोभित
भालं लोचनं जातं पावकं दायमन्मय विष्फूम् ॥
भ्रष्टविग्रहकलेवरं भ्रवनाशनं भवमव्ययं चंद्रशेखर ॥३॥
मत्तवारणमुद्यं चमंहृतोसरोयमनोहरं
पञ्चक्रासनपद्मलोचनं पूजिता श्रिसरोषहम् ॥
देवसिन्धु तरङ्गसीकर सिक्तं शुभ्रजटाधरं चंद्रशेखर ॥४॥
यशराजसां भगाशहरं भुजंगं विभयणं
शैलराजमुता परिष्कृत चारुवामकलेवरं ॥
इवेडनीलगालं परदद्वयधारिणं मृगधारिणं चंद्रशेखर ॥५॥
कुण्डलीहृत कुण्डलेश्वरं कुण्डलं वृष्ट वाहनं,
नारदादि मुनीश्वरस्तुतिवेभवं भुवनेश्वरम् ॥
अग्नं कान्धं कमाश्चित्तामरपादपं शमनान्तकं चन्द्रशेखर ॥६॥
भैशजं भवरोगिणामखिलापदामपं हारिणं
दक्षं यज्ञं विनाशनं त्रिशृणाम्बकं त्रिविलोचनम् ॥७॥
भृक्षितं मुक्तिं फलप्रदं सकलाद्यसंघनिर्वहणं चंद्रशेखर ॥८॥

स्तोत्र-शति

१२७

भक्तवत्सलमर्जितं निधिमळयं हरिदम्बरं
 सबंभूतं पतिं परात्परमप्रमेयमनन्तम् ॥
 सोम वारिदम्भुताशनं सोमपार्णि लब्धाकृति चंद्रशेखर ॥८॥
 विश्वसृष्टिविधायिनं पुनरेव पालनतत्परं
 संहस्रन्तमपि प्रपंचमक्षेत्रं लोकनिवासनम् ॥
 क्रोडयन्त महानिंगणनाययुच समन्वितं चंद्रशेखर ॥९॥
 मृत्युभीतं मृकण्डसुन्कृतस्तत्त्वं शिवसन्धिं
 यत्र कुत्र च यः पठन्न हि तस्य मृत्युभयं भवेत् ॥
 पूर्णमापुरं रोगितामविलायं सम्पदमादरं
 चंद्रशेखरं एव तस्य ददाति मुक्तिं मयलतः ॥१०॥
 -दारिद्र्यदहनशिवस्तोत्रम्—

श्री गणेशाय नमः ॥ ओ अस्य श्री महामृत्युजयस्तोत्रमन्वस्य
 श्री मार्कण्डेय ऋषिः ॥ अनुष्ठुप छन्दः । श्री मृत्युजयोदेवता । गौरी
 शक्तिः । मम सर्वारिष्टसमस्तं मृत्युशाश्वल्पर्यं सकलंशब्दं प्राप्त्यर्थं
 च जपे विनियोगः ॥ अय व्यानम् ॥
 श्री गणेशाय नमः ॥ १
 विश्वेऽवराय नरकाण्वतारणाय, कर्णामिताय शशिशेखर धारणाय ॥
 कर्परकांतिधवलाय जटाधराय दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय ॥१॥
 गारीर प्रियाय रजनीश कलाधराय कालान्तकाय भुजगाधिपकंणाय ॥
 गगांधराय गगराजविमदंनाय दारिद्र्यदुःख दहनाय नमः शिवाय ॥२॥
 भक्तप्रियाय भवरोग भयापहाय उद्धाय दुर्गमव सागर तारणाय ॥
 ज्योतिमंयाय गृणनामसुन्त्यकाय दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय ॥३॥
 वर्माम्बराय भवभस्त्रविलेपनाय भालेकणाय मणिं कुडलमंडिताय ॥
 मंजीरं पादयुगलाय जटाधराय दारिद्र्यदुःख दहनाय नमः शिवाय ॥४॥
 पञ्चाननाय कणिराज विभूषणाच हेमांशुकाय भूवनत्रय मंडिताय ॥
 आनन्दभूमि वरदाय तसोमयाय दरिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय ॥५॥
 भानुप्रियाय भवसागर तारणाय कालान्तकाय कमलासनपूजिताय ॥
 नेत्रवत्याय शभलक्षणलक्षिताय दारिद्र्यदुःख दहनाय नमः शिवाय ॥६॥
 रामप्रियाय रथुनायवरप्रदाय नागप्रियाय नरकाण्वतारणाय ॥
 पुष्पदुप्यभरिताय मुराचिताय दारिद्र्यदुःख दहनाय नमः शिवाय ॥७॥
 मृक्तेऽवराय कलदाय गणेऽवराय गोत्रप्रियाय वृषभेऽवर वाहनाय ॥
 मातङ्गचमंवसनाय महेश्वराय दारिद्र्यदुःख दहनाय नमः शिवाय ॥८॥
 वसिष्ठन कृतं स्तोतं सर्वरोगनिवारणं ॥
 सर्वसंपत्करं शीघ्रं पुत्रपौत्रादिवर्धनम् ॥
 त्रिसंघ्रं यः पठेनित्यं स हि स्वर्गमवान्तुयात् ॥९॥
 इति श्री वसिष्ठविरचितं दारिद्र्यदहनं स्तोतं सम्पूर्णम् ॥

—महामृत्युजयस्तोत्रम्—

श्री गणेशाय नमः ॥ ओ अस्य श्री महामृत्युजयस्तोत्रमन्वस्य
 श्री मार्कण्डेय ऋषिः ॥ अनुष्ठुप छन्दः । श्री मृत्युजयोदेवता । गौरी
 शक्तिः । मम सर्वारिष्टसमस्तं मृत्युशाश्वल्पर्यं सकलंशब्दं प्राप्त्यर्थं
 च जपे विनियोगः ॥ अय व्यानम् ॥

चंद्राकार्णिनविलोक्नं स्तिमत युजं पश्चद्वयान्तः स्थितं
 मृदायाशमृगाभस्त्रवं विलसत्पराणं हिमांशुप्रभम् ॥
 कोटोन्दुप्रगलतसुधाप्लततनं हरादिभवोऽजवलं,
 कान्तं विश्वविमोहनं पश्चपर्ति मृत्युजयं भावयेत् ॥
 अं एवं पश्चपर्ति स्वाणुं नीलं कण्ठं मुमापतिम् ॥
 नमामि शिरसा देवं कि नो मृत्युः करिष्यति ॥१॥
 नीलं कण्ठं कालमति कालं जालनाशनम् ॥
 नमामि शिरसा देवं कि नो मृत्युः करिष्यति ॥२॥
 नीलं कण्ठं विश्वाकं निमलं निलयप्रभम् ॥
 नमामि शिरसा देवं कि नो मृत्युः करिष्यति ॥३॥
 वामदेवं महादेवं लोकनायं जगद् गङ्गम् ॥
 नमामि शिरसा देवं कि नो मृत्युः करिष्यति ॥४॥
 देव देवं जगद्वायं देवेशं वृषभध्वजम् ॥
 नमामि शिरसा देवं कि नो मृत्युः करिष्यति ॥५॥
 गङ्गाधरं महादेवं सर्वाभरणं भूषिताम् ॥
 नमामि शिरसा देवं कि नो मृत्युः करिष्यति ॥६॥
 अनाथः परमानन्दं केवल्यपदवायिनम् ॥
 नमामि शिरसा देवं कि नो मृत्युः करिष्यति ॥७॥
 स्वर्गापिवरं दातारं सदि स्थिति विनाशकम् ॥
 नमामि शिरसा देवं कि नो मृत्युः करिष्यति ॥८॥
 उत्पत्तिस्थिति संहारकत्तरिमोऽवरं गङ्गम् ॥
 नमामि शिरसा देवं कि नो मृत्युः करिष्यति ॥९॥
 मार्कण्डेयहनं स्तोतं यः पठेच्छवसन्धिं ॥
 तस्य मृत्यु भयं नास्ति नाश्विं चौरमयं वृचित् ॥१०॥
 शतावरं प्रकर्तव्यं सकटे कण्ठं नाशनम् ॥
 शूचिर्भूत्वा पठस्तोतं सर्वासिद्धि प्रदायकम् ॥११॥

मृत्युचय महादेव त्राहिमां शरणागतम् ॥
 जन्म मृत्युं जरारोगः पीडितं कर्म वर्णनः ॥१२॥
 तावतस्तवद्गतप्राणस्त्वच्चितोऽहं सदामङ्ग ॥
 इति विजाप्य देवेशं ज्यवकारव्य भनुं जपेत् ॥१३॥
 नमः शिवाय साम्बाय हरये परमात्मने ॥
 प्रणतपलेशनाशाय योगिनां पतये नमः ॥

॥ शताङ्ग्युभ्यंत्रः ॥

के हों थों भूं हैं हः हन हन दह दह पच पच गृहाण गृहाण
 मारय मारय मरय मरय महा महा भेरव भेरव रपेण धुनुय धुनुय
 कम्यय कम्यय किञ्चय विघ्नय विघ्नय विघ्नेवर खोभय खोभय कटु कटु
 मोह्य हूं फट् स्वाहा ॥ इति भन्त्र मात्रेण लब्धा भीष्टो भवति इति
 श्री माकंण्डेय पुराणे माकंण्डेयकृतं महामृत्युञ्जयस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

—सहस्राक्षर मंत्र—

के नमो भगवते सदाशिवाय सकल तत्वात्मकाय सर्वं मन्त्र-
 स्वरूपाय सर्वंयन्त्राधिभित्ताय सर्वंतन्त्रस्वरूपाय सर्वंतत्वं विद्वराय
 वृह्मरुद्रावतार्णिनोलकण्ठाय पावंती मनोहरिप्रियाय सोमसूर्यानि
 लोचनाय भस्मोद्भूलित विप्रहाय महामणिमुकुट धारणाय माणिक्य-
 भूषणाय सृष्टिस्थिति प्रलय काल रौद्रावताराय दक्षाध्वरध्वंसकाय
 महाकाल भेदनाय मूलाधारं कनिलयाय तत्त्वातीताय गङ्गाधराय-
 सर्वंदेवाधिदेवाय षड्ाश्रयाय वेदान्तं साराय त्रिवर्गंसाधनाने ककोटि
 वृह्माण्डं नायकायानन्तं वासुकि तक्षक ककोटकशङ्कुलिक पद-
 महा पश्येष्टनाग कुलभूषणाय प्रवणस्वरूपाय चिदाकाशाया-
 काशिक त्वक्षपाय प्रहं नक्षत्र मालिने सकलाय कलङ्क रहिताय
 सकल लोकेक कत्रे सकल लोकेक संहत्रे सकल लोकेक गुरुने सकल
 लोकेक मत्रे सकल लोकेक साक्षिणे सकल निगम गृहाय सकल
 वेदान्तं पारणाय सकल लोकेक वर प्रदाय सकल लोकेक शङ्कराय
 शशाङ्क शशराय शाश्वत निजावासाय निराभासाय निरामयाय
 निमंलाय निलोभाय निम्भोहाय निमंदाय निविचन्ताय निवृद्धाराय
 निराकुलाय निकल द्वायनिर्गुणाय निष्कामाय निरप्लवाय निरवद्याय

१३०

स्तोत्र-शक्ति

निरन्तराय निष्कारणाय निरातङ्गाय निष्प्रपञ्चाय निः सङ्गाय
 निंदृन्दाय निराधाराय निरोगाय निष्कोद्धाय निरंगमाय निष्पापाय
 निर्भयाय निविकल्पाय निमंदाय निष्किक्षाय निस्तुलाय निःसंशयाय
 निरञ्जनाय निरपेम विभवाय नित्यं शुद्धवृद्धपरिपूर्णं सचिच्चदा-
 नन्दादृष्टाय परम शान्तं स्वरूपाय तेजोरूपाय तेजोभयाय जय
 जय चद्वं महारौद्र भद्रावतार महाभेरव कालभेरव कल्पान्त भेरव
 कपाल मालाधर खट्वाङ्गजडग धर्मपाशाङ्गजडगकर त्रिशूलचाप
 वाणगदाशक्ति विन्दपालतोमरमूल मदगंगाप्रातं परिष्ठ भूशुण्डी
 शब्दोचकाद्यायुष भीषण कर सहस्रमूल दंष्टा करात वदन
 विकटाहास विस्कारित वृह्माण्ड मण्डल नागेन्द्र कुण्डल नागेन्द्र
 हार नापेन्द्र वलय नागेन्द्र चमघर मृत्युञ्जय त्रयम्बक त्रिपुरान्तक
 विश्वलय विरूपाक्ष विश्वेवर वृषभवाहन विश्वतोमूल सर्वतो रक्ष
 रक्ष मां ज्वल ज्वल महामृत्युमप मृत्युभय नाशय नाशय चोर भय
 भुत्सादयोत्सादय विषसपभय शमय शमय चौरान्मारय भम
 शब्दनुच्छाटयोच्छाटय त्रिशैलेन विदारय-विदारय कुरेण मिधि
 मिन्धि खज्जेन छिन्धि छिन्धि खड वाह्ने न विपोत्तय विपोत्तय मृत्तलेन
 निष्वेषय वाणः सन्ताऽय सन्ताऽय रक्षासि भीषय भौषयाशेष भूतानि
 विदावय विदावय कृष्णाण वेताल मारीच वृह्म रक्षस तगणान्
 सन्नासय सन्त्रासय भाम भयं कुह कुह वित्रस्ते मामाश्वासलयाक्ष्वा-
 सय नरकमयान्मामुह्नरोद्धर सज्जोवय सज्जोवय क्षतुऽन्म्या मामाप्या-
 याप्याय दुःखातुरं सामान्द्र यान्द्रय शिवकवचेन मामाच्छा-
 दयोच्छादय मृत्युञ्जय त्रयम्बक सदाशिव नमस्ते नमस्ते

॥ अय श्रीसूक्त प्रारंभः ॥ .

श्री गणेशाय नमः ॥ अय श्रीमहालक्ष्म्ये नमः ॥ हिरण्यवर्ण-
 मिति पंचदशवंस्य सूक्तस्य जानवंकरंम चिवलीतेदिरामुता न्दृष्टयः ॥
 श्रीरग्निःस्वेत्यमे देवते ॥ आद्यास्तिस्त्रो नद्दुभः ॥ अंत्याभस्तार
 पक्षितः ॥ जय विनियोगः ॥

स्तोत्र-शक्ति

१३१

हरि ओम ॥
 हिरण्यवर्णहरिमों सुवर्णरजतस्त्रिम् ॥
 चट्ठाहिरण्योलमोजातवेदोम आवह ॥
 तामभावहजातवेदोलमोमनपगामिनीम् ॥
 यस्याहिरण्यविवेयंगामश्वपुरुषानहम् ॥
 अश्वपूर्वारचमध्याहस्तिनाइप्रबोधिनीम् ॥
 विवेदवोपहृये शोभदिवोमयताम् ॥
 कास्तोस्मिताहिरण्यप्राकारा भावांच्वलतोत्पत्तांतपयतीम् ॥
 पश्यत्पत्तांपवर्णता मिहोपहृयेभियम् ॥
 चंद्राप्रभासावदासाव्वलतीभिय लोकेवज्ञात्मुदाराम् ॥
 तापयनीर्मीशरणमहृये छो लद्मोमेनश्यतांत्वांपुणे ॥१॥
 आदित्यवर्णतेष्टोषिजातोवनस्पतिस्तद्वक्षोभविल्वः ॥
 स्तस्यकलानितपसानुवंतुमापातंराधाइचबाहुआत्ममोः ॥
 उपेतुमादेवतसः कांतिश्चमिनासह ॥
 प्राहुमृतोमुराङ्गेतिमनकोतिमृद्धिदवातुमे ॥
 क्षत्यिपासामलान्येष्टोषिकमोनाशयाम्यहम् ॥
 अनुत्तिमसमृद्धिचतवानिर्णद्मगहात् ॥
 गंधहुराराहुराधयोनित्यपुष्टाकरौषिणीम् ॥
 इवरीसव्नूतानांतामिहोपहृयेभियम् ॥
 मनसः काममाकृतिवाचः सत्यमशोमहि ॥
 पदानांहृष्मद्वस्यनिष्ठोः अयतांयशः ॥२॥
 कर्द्येनप्रजाभूतामयिसंभवकर्दम् ॥
 विषवासप्यमकुलमातरंपद्मालिनीम् ॥
 आपः लवनुत्तिलाघानिचिक्लोतवसमगृहे ॥
 निचेष्टोमातरंश्यंकासप्यमकुले ॥
 आद्वामुष्करिमोपुष्टिंपिगलापद्मालिनीम् ॥
 चट्ठाहिरण्योलमोजातवेदोमजावह ॥
 आद्वापः कर्णोपुष्टिंसुवर्णहिममालिनीम् ॥
 सूर्याहिरण्योलमोजातवेदोम आवह ॥
 तामभावहजातवेदोलमोमनपगामिनीम् ॥
 यस्याहिरण्यप्रभूतंगावोदास्योद्वान् विवेयपुरुषानहम् ॥३॥

यः शुचिः प्रयतोभूत्वाजुहुपादाच्यमन्वहम् ॥
 सूक्तपंचदशाच्च वधोकामः सततं जपेत् ॥

—सरस्वती स्तोत्रम्—

श्री गणेशाय नमः ॥ ऊं अस्य श्री सरस्वतीस्तोत्रमन्त्रस्य बट्टा
 ऋषिः ॥ गायत्री छंदः ॥ श्री सरस्वती देवता ॥ अर्चार्यंकाम मोक्षाय
 जपे विनियोगः ॥ आरुदा इवेतहंसे भ्रमति च गगने दिल्लिये वाक
 सूत्रं वामे हस्ते च दिल्लिम्बरकनकमये पुस्तकं जानगम्या ॥
 सा वीणां वादयन्ती स्वकर करन्ते: शास्त्रविज्ञान शब्दे: क्षीडन्तो
 विव्यह्या करकमलघरा भारती सुप्रसन्ना ॥१॥
 इवेत पापासनादेवो इवेत गन्धानुलेपना ॥
 अविता मूनिनिः सर्वैर्विभिः स्तूपये सदा ॥
 एवं व्यात्वा सदा देवीं वाञ्छितं लभते नरः ॥२॥
 शक्लां ब्रह्मविचारसार परमामादां जगहुयापिनो
 वीणापुस्तकं परिणीमभयदां जाडयान्वकारापहाम् ॥
 हस्ते स्काटिकं मालिकां विदधतों पपासने
 संस्तिता वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रां शारदाम् ॥३॥
 या कुन्देदु तुषार हार घरला या शूभ्रेवस्त्रावृता
 या बोणा वर वज्ज मणित करा या इवेत पथासना ॥
 या ब्रह्मान्व्युतंशकरं प्रभूतिभिर्देवैः सदा वनिदा
 सा मां पातु सरस्वती भगवती निःऽसेव जाडयापहा ॥४॥
 हौं हौं हृद्यंक बीजं शशिरुचि कमले कल्पविस्पष्टज्ञोभे
 भव्यं भव्यानुकूले कुमति वनदवे विदवन्यांग्रिपणे ॥
 पश्य पश्योपविष्टं प्रणत जनम नो शोदसंपादयिति
 प्रोत्कूलं ज्ञान कटे हरिनिजदयिते देवि संसार सारे ॥५॥
 ऐं ऐं ऐं दृष्टमन्त्रं कमलभव मलां भोजभते स्वरूपे
 हृपालप्रकाशे सकलं गुणमये निर्णुणे निविकारे ॥

न स्यले नेव सूष्मेऽप्यविदित विभवे नापि विज्ञान तरवे
 विश्वे विश्वांतरात्मे सुर वर ननिते निष्कले नित्यशङ्के ॥६॥
 हों हों हों जाप्य तुष्टे हिमसचिमुकुटे बल्ल कीर्ण्य प्रहस्ते
 मातमतिनेमस्ते इह वह जडता देहि बूढ़ि प्रशस्ताम् ॥
 विद्ये वेदान्त वेद्ये परिणत पठिते भोक्तवे मुक्ति मार्गे
 मार्गा तीत स्वरूप भव मम वरदा शारदा शभ्रहारे ॥७॥
 धीं धीं धीं धारणाख्ये धत्तिमतिनिभिर्नामभिः कीर्तनीये
 नित्येऽनित्ये निमित्ते मुनिगण नमिते नृतने वं पुराणे ॥
 पुण्ये पुण्यप्रवाहे हरिहर ननिते नित्यशङ्के मुवणे
 मातमात्राधंतर्लब्ध मतिनति मदिते माधव प्रीति भोवे ।
 हैं हैं हैं स्वस्वरूपे वह वह दुरितं पुस्तकव्यप्रहस्ते
 सन्तुष्टाकार चित्ते स्तित मुखि सुभगं जृमिमि स्तम्भविद्ये ॥
 मोहे माधप्रवाहे कुरुमम विमतिध्वान्त विश्वांसमीडे
 गोगों वार्गभारति तं कवि वरसना सिद्धि वे सिद्धि साध्ये ॥९॥
 स्तोमि त्वां त्वां च वन्दे मम खल रक्षनां नो कवाचित्य जेया
 मा मे बुद्धिरिलुद्धा भवतु न च मनो देवि मे यातु पापम् ॥
 मा मे दुःख कदाचित्तवचिदपि विषयेऽप्यस्तु मे नाकुलत्वं
 शास्त्रं वादे कवित्वे प्रसरतु मम धोर्महितु कृष्णा कदापि ॥१०॥
 इत्येततः इलोक मुह्ये : प्रतिदिन मूर्धसि स्तोतियो भक्ति न न्द्रो
 वाणी वाचस्पतेरर्थ्य विदित विभवो वाक्पटमुष्टकं ॥
 स स्यादिष्टार्थलाभं : सुतमिव सततं पाति तं सा च देवी
 सामाध्यं तस्य लोके प्रभवति कविता विघ्नमस्तं प्रयाति ॥११॥
 निविद्यनं तस्य विद्या प्रभवति सततं चाश्रुतं ग्रन्थं बोधः
 कीर्तिस्त्रोभोक्त्यमध्ये निवसति वदने शारदातस्य साक्षात् ॥
 दीर्घायुलोकं पूज्यः सकल गुणनिधि सततं राजमान्यो
 वावेद्याः संप्रसादात्तिजगति विजयो जायते सत्समाप्तु ॥१२॥
 वद्युत्तारी वतीमोनोपयोदस्यां निरामिषः ॥
 सारस्वतो जनः पाठात्मकुदिष्टार्थलाभवत् ॥१३॥
 पश्चद्वयं त्रयोदश्यापेक विशतिसंहृष्टा ॥
 अविच्छिन्नः पठेढीमान्यात्वा देवीं सरस्वतीम् ॥१४॥
 सर्वगापविनिर्मकतः सुभगो लोक विद्युतः ॥
 वाञ्छित फलमासनोति लोकेऽस्मिन्द्वात्र संशयः ॥१५॥

ब्रह्मोति स्वयं प्राप्तं सरस्वत्याः स्तवं शब्दम् ॥
 प्रयत्नेन पठेन्नित्यं सोऽमृतत्वाय कल्पेत ॥१६॥
 हति श्रोत्रद्वात्मा विरचित सरस्वतीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ नवग्रह स्तोत्रम् ॥

श्री गणेशाय नमः ॥

जया कुमुम संकाशं काशयेयं महाबृतिम् ॥
 तमोऽरि सर्वपापनं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ॥१॥
 दधिग्रहं तुष्णि रामं शौरीरोदार्णवं सम्भवम् ॥
 नमामि शशिनं सोमं शंभोमूर्तु भूषणम् ॥२॥
 धरणीग्रहं संभूतं विद्युत्कानितं समप्रभम् ॥
 कुमारं शक्तिं हस्तं च मङ्गलं प्रणमान्यहम् ॥३॥
 प्रियतं कलिकाश्यामं हृषेणा प्रतिमं वृथम् ॥
 सौम्यं सीम्यगुणोपेतं तं वृथं प्रणमान्यहम् ॥४॥
 देवानां च चत्वारिं च गृहं काल्पन सत्रिभम् ॥
 बृद्धिभूतं त्रिलोकेऽनं तं नमामि बृहस्पतिम् ॥५॥
 हिमकुन्दम् गालामं देत्यानो परमं गुरुम् ॥
 सर्वशास्त्रं प्रबकारं भाग्यवं प्रणमान्यहम् ॥६॥
 नीलाङ्गनसमाभूतं रविपुत्रं यमाप्रजम् ॥
 छाया मातंडं संभूतं तं नमामि शनैर्वरम् ॥७॥
 अर्थकायं महाबौद्धं चन्द्रादित्यं विमदंतम् ॥
 सिहिकाशं संभूतं तं राहुं प्रणमान्यहम् ॥८॥
 पलाशपुष्पं संकाशं तारकप्रहं मस्तकम् ॥
 रोद्रं रोद्रात्मकं धौरं त केतुं प्रणमान्यहम् ॥९॥
 इति व्यास मुखोद्वारीतं यः पठेत्युत्समाहितः ॥
 दिव्या वा यदि वा रात्रो विघ्नशान्तिर्भविष्यति ॥१०॥
 नरनारोनपाणां च भवेद्वुः स्वप्ननाशनम् ॥
 ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टि वर्धनम् ॥११॥

स्तोत्र-यक्षित

स्तोत्र-शक्ति

पह नक्षत्र जाः पीडास्तस्कराणि समूदवाः ॥
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो वृते न संशयः ॥१२॥
इति व्यासविरचित नवप्रहस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

॥ आदित्य स्तोत्रम् ॥

श्री गणेशायनमः

नवप्रहाणां सर्वेषां सूर्यदीनां पूर्थक पूर्थक ॥
पीडा च दुःसहा राजन्नजायते सततं नृणाम् ॥१॥
पीडानाशाय राजेन्द्र नामानि अण भास्वतः ॥
सूर्यदीनां च सर्वेषां पीडा नदयर्थं अृष्वतः ॥२॥
आदित्यः सविता सूर्यः पूर्याऽकः शीघ्रगो रविः ॥
भगस्त्वष्टाऽप्यमा हंसो हैलिस्तेजोनिविर्हितः ॥३॥
दिननाथो विनकरः सपूर्सपिः प्रभाकरः ॥
विभावसुबृद्धकर्ता वेदाङ्गो वेद वाहनः ॥४॥
हरिदशः कालवक्त्रः कर्म साक्षी जगत्पतिः ॥
पद्मिनीबोधको भान्नभस्तकरः कल्पाकरः ॥५॥
द्वादशात्मा विद्वकमो लोहिताङ्गस्त्र मोनुदः ॥
जगन्नाथोऽरविन्दाक्षः कालात्मा कल्पात्मज ॥६॥
भूताथ्यो ग्रहपतिः सर्वलोकनमस्तुतः ॥
जपाकुमुमसंकाशो भास्वानदितिनन्दनः ॥७॥
ध्वानेभसिहः सर्वात्मा लोकनेत्रो विकर्तनः ॥
मार्तण्डो मिहिरः सूरस्तपनो लोक तापनः ॥८॥
जगत्कर्ता जगत्साक्षी शनैश्चरपिता जयः ॥
सहस्र रविमस्तरविभंगवान्भक्तवत्सलः ॥९॥
विवस्वानादिदेवश्च देवदेवो दिवाकरः ॥
अन्वत्तरि वर्णविहर्ता दहुकुष्ठविनाशकः ॥१०॥
चराचरात्मा मंत्रेयोऽमिति विष्णुविकर्तनः ॥
कोकशोकापहर्ता च कमलाकर आत्मभः ॥११॥

नारायणो महावेदो एवः पुरुष ईश्वरः ॥
जीवात्मा परमात्मा च सूक्ष्मात्मा सर्वतो मतः ॥१२॥
इन्द्रोऽनलो यमदेव नेत्रंतो वरणोऽनिलः ॥
धीर ईशान इन्द्रुद्ध भीषः सौम्यो गुहः कविः ॥१३॥
शौरीविद्युग्नुद्वः केतुः कालः कालात्मको विमुः ॥
सर्वदेव मयोदेवः कृष्णः कामप्रदायकः ॥१४॥
य एतं नामभिमंत्यो भक्त्या स्तीति दिवाकरम् ॥
सर्वपाप विनिर्भूतः सर्वरोग विवर्जितः ॥१५॥
पुत्रवान् धनवान् श्रीमान् जायते स न संशयः ॥
रविवर्ते पठेद्यस्तु नामान्येतानि भास्वतः ॥१६॥
पीडानालितम् वेतस्य प्रहाणो च विशेषतः ॥
सत्यः सुखमवान्पोति चायर्दोषं च नीहजम् ॥१७॥
इति श्री भविष्यपुराणे आदित्यस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

॥ चन्द्राष्टाविशतिनाम स्तोत्रम् ॥

श्री गणेशाय नमः ॥

चन्द्रस्य शृणु नामानि शुभदानि महीपते ॥
पाति श्रुत्वा नरो दुःखान्मुच्यते नात्र संशयः ॥१॥
मुधाकरदेव सोमवच ग्लौरव्यु तुमुदप्रियः ॥
लोकप्रियः शृङ्खानुद्वन्द्वमा रौहिणी पति: ॥२॥
दशी हिमकरो राजा द्विजराजो निशाकरः ॥
आत्रेय इन्द्रुः शीतांशुरोषधीशः कलानिविः ॥३॥
जंथृतको रमाध्राता शीरोदावद्वसम्भवः ॥
नक्षत्र नायकः शम्भुः शिरश्चडामणिविभुः ॥४॥
तापहर्ता नभोदीपो नामान्येतानि यः पठेते ॥
प्रत्यहं भक्तिं संयक्तस्तस्य पीडा विनश्यति ॥५॥
प्रहादीनो च सर्वेषां भवेत्वन्द्रवलं सदा ॥६॥
इति श्री चन्द्राष्टाविशति नाम स्तोत्रं संपूर्णम् ॥

॥ अङ्गारकस्तोत्रम् ॥

ओ गणेशाय नमः ॥

अङ्गारकः शक्तिवरो लोहिताहूरो वरामुतः ॥
कुमारो मङ्गलो भौमो भग्नाकापो घनप्रदः ॥१॥
कृष्णहर्ता दृष्टिकर्ता रोग कृदोग्नाशनः ॥
विशुत प्रभो वृषकरः कामदो घनहृत्कुजः ॥२॥
सामगानर्पियो रक्तवृत्तो रक्तमल्लकणः ॥
लोहितो रक्त वर्णश्च सर्वं कर्माव बोधकः ॥३॥
रक्तामाल्यधरो हेमकुण्डलो प्रह्नायकः ॥
नामान्येतानि भोवस्य यः पठेत्ततं नहः ॥४॥
स्त्रूण तस्य च यौर्माण्यं दारिद्र्यं च विनिदयति ॥
घनं प्राप्नोति विशुलं स्त्रियं चे च घनोरमाम् ॥५॥
वंशोद्योत करं पुत्रं लभते नावं संशयः ॥
योज्वर्येवहिन भौमस्य मङ्गलं वहुपुलकः ॥६॥
सर्वानिश्चिति पीडाश्च तस्य प्रहृता प्रवम् ॥७॥
इति ओ स्कन्दपुराणे अङ्गारकस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ वृषभमोचक मङ्गलस्तोत्रम् ॥

ओ गणेशाय नमः ॥

मङ्गलो भूमिपुत्रश्च कृष्णहर्ता घनप्रदः ॥
स्थिरोसनो भग्नाकाय सर्वकर्म विरोधकः ॥१॥
लोहितो लोहिताक्षश्च सामगानं कृपा करः ॥
वरास्त्रजः कुञ्जो भौमो भूतिदो भूमि नन्दनः ॥२॥
अङ्गारको यमदश्च सर्वरोगापहारकः ॥
वृष्टे कर्ताप्रहृता च सर्वकाम कल प्रदः ॥३॥
एतानि कुञ्जनामानि नित्यं यः शब्दया पठेत् ॥
वृष्टं न जायते तस्य घनं शीघ्रम वानूपात् ॥४॥

घरणी गर्वं संनृतं विद्युत्कांति समप्रभम् ॥
कुमारं शक्तिहस्तं च मङ्गलं प्रणमाम्यहम् ॥५॥
इतोऽपगङ्गार कर्मावत्पठनीयं सदानुभिः ॥
न तेषां भौमजा पीडु न्वल्पार्थप भवति बद्धितः ॥६॥
अङ्गारक महाभाग वर्णवर्णनक्तपत्तस्त ॥
त्वा न भावि भया दोष मृणमाश विनाशय ॥७॥
वृषभेषणादि दारिद्र्यं च नाव्ये हृष्मन्त्यवः ॥
भयक्तेदानन्दतापा नश्यन्तु घम संवदा ॥८॥
अतिवक तुरारात्र्य भौमभूक्त वितात्मनः ॥
तुष्टो ददाति सामाज्ञयं गद्यो हरसि तत्त्वमात् ॥९॥
विरहित्वा विश्वलोकानां भूमियानां त वा कथा ॥
तेन त्वं तवं तत्त्वेन प्रहराजो महा वलः ॥१०॥
पुत्रान्वेति घनं वेति स्वानस्त्रिम वारणं गतः ॥
वृष दारिद्र्यपुङ्गवेन वायुषां च भवात्मतः ॥११॥
एभिरुद्दिशिः इतोऽप्येत्यः स्तोति च वरामुतम् ॥
महती विष्णवान्नोति हृष्मरो घनदो यथा ॥१२॥
इति ओ स्कन्दपुराणे भाग्यं प्रोक्तं वृषभमोचक मङ्गलस्तोत्रम् ॥

॥ वृषभन्विशिति नामस्तोत्रम् ॥

ओ वचेशाय नमः ॥

वधो वृद्धिमतो घंडो वृद्धिमता घनप्रदः ॥
प्रियं गुरुति कारपादः कञ्जनेष्वो मनोहरः ॥१॥
पहोपमो रोहियेषो नखभेदो दया करः ॥
विश्वद कामं हन्ता च सौम्यो वृद्धिविश्वं ॥२॥
वग्नारम्भो विश्वलभ्यो जानो लो हानि नायकः ॥
प्रहृपीडुहरो दारं पुत्रं धार्यं पश्य प्रदः ॥३॥
लोकिषः सौम्यवृत्तिमृगदो वृश्वित्सत्त्वः ॥
पञ्चविशिति नामाति वृषस्यंतानि यः पठेत् ॥४॥

स्मृत्वा वृथं सदा तस्य पीडा सर्वा चिनेत्यतः ॥
तहिने वा पठेदस्तु लभते स मनोगतम् ॥५॥
इति श्री पद्मपुराणे बृहस्पत्यविज्ञानाम स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

॥ बृहस्पति स्तोत्रम् ॥

श्री गणेशाय नमः ॥

गुरुवृहस्पतिर्जीवः सुराचार्यो विदांवरः ॥
वार्गीतांचिद्विष्णो दीर्घेभ्यः पीताम्बरो युवा ॥१॥
मुषा दृष्टिर्प्रहृष्टोद्गो प्रहृष्टोद्गोपहारकः ॥
दयाकरः ॥ दयाकरः सौम्यमृतिः सुराच्यः कुंकुमद्यतिः ॥२॥
लोकपूज्यो लोक गृहनीतिज्ञो नीतिकारकः ॥
तारापतिश्चाङ्गिरसो वेदवेद्यपितामहः ॥३॥
भक्त्या बृहस्पति स्मृत्वा नामान्येतानि यः पठेत् ॥
आरोग्योबलवान् खीमान् पुववासन भवेन्द्रः ॥४॥
जीवेहृष्टवासनं भत्यः पापं नद्यति नद्यति ॥
यः पूजयेद् गृहदिने पीतगन्धाक्षताम्बरः ॥५॥
पृष्ठदीपो पहारेश्च पूजयित्वा बृहस्पतिम् ॥
ब्राह्मणान्मोक्षित्वा च पीडाशान्तिर्भवेदगरोः ॥६॥
इति श्री स्कन्द पुराणे बृहस्पति स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ शुक्र स्तोत्रम् ॥

श्री गणेशाय नमः ॥

दाकः काच्यः शुक्रेता शुक्राम्बरवरः सुषोः ॥
हिमानः कुन्तव्यवलः शुभ्रांशुः शुक्रमध्यनः ॥१॥
नीतिज्ञो नीतिकृज्ञोति भाग्यवाचो प्रहारिषः ॥
उदाना वेदवेदाङ्गो पारमः कविरामवित् ॥२॥

१४०

स्तोत्र-शक्ति

भाग्यः कश्चातिश्चुल्लिन गम्यः सुख प्रदः ॥
शुक्रस्येतानि नामानि शुक्रस्मृत्वा तु यः पठेत् ॥३॥
आयुषं सुखं पुञ्च लक्ष्मी वसति सुतमाम् ॥
विद्या च च लघ्यं तद्यमं शक्ति सुष्ठो ददाति च ॥४॥
इति श्री स्कन्दपुराणे शुक्रस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ शुक्रस्तोत्रस्तवराजः ॥

श्री गणेशाय नमः ॥

नारद उच्चाच ॥
त्याग्या गणराति राजा पर्मराजो युधिष्ठिरः ॥
वौरोः शुक्रस्तवस्येम चकार स्तव मूल मम् ॥१॥
शिरो मे भ्रात्करिः पातु भालं शायामुतोऽवतु ॥
कोटिराजो दृशी पातु शिरिकाळं निमः धूतो ॥२॥
अग्नं मे भीषणः पातु मूलं वालं मूल्योऽवतु ॥
तक्षण्डी संवत्कः पातु भूतो मे भयदोऽवतु ॥३॥
नीरिमेह दृष्ट्यं पातु नार्जि शुक्रस्तवरोऽवतु ॥
प्रहरराजः कटि पातु संवत्को रथि नन्दनः ॥४॥
पादी मन्दगतिः पातु कृष्णः पात्रशिरं वपुः ॥
रक्षामेतां पठेनित्यं शौरेनमिकलंपूताम् ॥५॥
सुखो तु दीपो चिरापुद्वच स भवेन्नाम संशयः ॥
ऊं सीरिः शुक्रस्तवरो हृष्णो नोलाम्बलस्तिभः इनिः ॥६॥
शुष्कोदरो विद्यालाक्षो दुनिरोहयो विभीषणः ॥
शितिकाळं निभो नोलाम्बायाहृदयनन्दनः ॥७॥
कालद्विष्टः कोटिराजः स्थलरोमा वलीमूर्खः ॥
दीपोः निभित्तामावस्तु शुष्कोदरो भयानकः ॥८॥
नोलाम्बः कोषनो रोदो दीपद्वयं जंटाधरः ॥
मन्दोमन्दगतिः शून्योऽनुपः संवत्को यमः ॥९॥

स्तोत्र-शक्ति

१४१

प्रहराजः करालौ च सूर्यपुत्रो रविः शशी ॥
 कुजो वृधो गृहः काव्यो भानुजः सिहिका सुतः ॥१०॥
 केतुदेव पतिर्बहुः कृतान्तो ने ऋंवस्तया ॥
 शशी मल्लकुबे रश्व ईशानः सुर भासमः ॥११॥
 विष्णुहरो गणपतिः कुमारः काम ईश्वरः ॥
 कर्ता हर्ता पालपिता राज्य भुग् राज्यदायकः ॥१२॥
 आपासुतः इयामलाङ्गो धनहर्ता धनप्रदः ॥
 कूर कर्मविद्याता च सर्वकर्मविरोधकः ॥१३॥
 तुष्टो दृष्टः कामहपः कामदो रविनन्दनः ॥
 प्रहृष्टिहरः शान्तो नक्षत्रेशो प्रहेश्वरः ॥१४॥
 स्त्विरासनः स्त्विरगतिमहाकायो महाबलः ॥
 महाप्रभो महाकालः कालात्मा काल कालकः ॥१५॥
 आदित्य भयदाता च मूल्यरादित्य नन्दनः ॥
 शतभिदक्षदयितः त्रयोदशितिविप्रियः ॥१६॥
 तिथ्यात्मा तिथिगणो नक्षत्र गण नायकः ॥
 योगराजिर्भृततामा कर्ता दिन पतिः प्रभः ॥१७॥
 शशी पुष्पप्रियः इयामस्त्रेलोक्या भावदायकः ॥
 नील वासा किपासिन्चनौलाङ्गन चयच्छविः ॥१८॥
 सर्वं रोगहरोदेवः सिद्धोदेवगणस्तुतः ॥
 अष्टोत्तर शतं नाम्नां सौरेश्वायासुतस्य यः ॥१९॥
 पठेन्नित्यं तस्यपोडा समस्ता नशयति प्रव्रम् ॥
 कृत्वा पूजा पठेन्नमत्यो भक्तिमान् यः स्त्रवं सदा ॥२०॥
 विशेषतः शनिदिने पीडा तस्य विनशयति ॥
 जन्म लग्ने स्त्वितिवर्पि गोचरे कर राशिगे ॥२१॥
 दशामु च गते सौरेस्तदा स्त्रवभिं पठेत् ॥
 पूजयथः शनि भक्तया शम्भुपूज्याकृतान्वरं ॥२२॥
 विधाय लोहप्रतिमां नरो दुःखाहिमुच्यते ॥
 वाया त्वन्य पहाणां च यः पठेन्नस्य नशयति ॥२३॥
 भीतो भयाहिमुच्येत वहो मुच्येत वन्धनात ॥
 रोगी रोगाडिमुच्येत नरः स्त्रवभिं पठेत् ॥२४॥
 पुत्रवान्वनवान् श्रीमाङ्गायते नात्र संशयः ॥२५॥
 नारद उवाच ॥

स्तोत्र-शक्ति

स्त्रवं निशन्य पार्यस्य प्रत्यक्षोऽभूत्तुश्रेष्ठरः ॥
 दत्तवा राजे वरं कामं शनिद्वान्तर्वंष्टे तदा ॥
 इति श्री भविष्यपुराणे शनिवरस्तवदाजः समाप्तः ॥

॥ राहु स्तोत्रम् ॥

श्री गणेशाय नमः ॥
 राहुवानवमन्त्री च सिहिकाचित्तनन्दनः ॥
 अधिकायः सदा क्रोधी चन्द्रादिव्य विमवनः ॥१॥
 रौद्रो रुद्रप्रियो देत्यः स्वभर्तुभर्तुभीतिवः ॥
 प्रहराजः सुधायायी राकातिव्य भिलाषुकः ॥२॥
 कालदण्डिः कालरूपः श्री कण्ठहृदयाव्ययः ॥
 विष्णुतुदः संहिकेये घोररूपो महाबलः ॥३॥
 प्रहृष्टिहाकरो दृष्टो रत्ननेत्रो महोदरः ॥
 पञ्चविशति नामानि स्मृत्वा राहु सदानन्दः ॥४॥
 यः पठन्नमहती पीडा तस्य नशयति केवलम् ॥
 आरोग्यं पुत्रमतुलां श्रियं वान्यं पशुस्तस्या ॥५॥
 ददाति राहुस्तस्मै यः पठते स्तोत्रं मुत्तमम् ॥
 सततं पठते यस्तु जीवेद्वयंशतं नरः ॥६॥
 इति श्री स्कन्दपुराणे राहुस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ केतुपञ्चविशति नाम स्तोत्रम् ॥

श्री गणेशाय नमः ॥
 केतुः कालः कलपिता धूम्र केतुविवरणः ॥
 लोक केतुमंहाकेतुः सर्वकेतुमंयप्रदः ॥१॥
 रौद्रो रुद्रप्रियो रुद्रः कूर कर्मसुगन्धघृकः ॥
 पलाल धूम संकाशशिवज्ञायो पवीतघृकः ॥२॥

स्तोत्र-शक्ति

१४३

तारागण विमर्दी च जंसिनेयो यहाधिपः ॥
 पञ्चविशतिनामानि केतोर्यः सततं पठेत् ॥३॥
 तस्य नशयन्ति बाधाद्वच सर्वाः केतु प्रसादतः ॥
 धन धन्य पश्चानां च भवेद्गद्धिन संशयः ॥४॥
 श्री स्कन्दपुराणे केतोः पञ्चविशतिनाम स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ गोपालहृदयस्तोत्रम् ॥

श्री गणेशाय नमः ॥ ऊं अस्य श्री गोपालहृदय स्तोत्र मन्त्रस्य ॥
 श्री भगवान्सङ्कुर्णं छृष्टिः ॥ गायत्री छन्दः ॥
 ऊं बीजम् ॥
 लक्ष्मीः शक्तिः ॥ गोपालः परमात्मा देवता ॥ प्रद्युम्न कीलकम् ॥
 मनो वाक्कायाजित सर्वपाप क्षयार्थं श्री गोपाल प्रीत्यर्थं गोपाल
 हृदयस्तोत्रजपे विनियोगः ॥
 श्री सङ्कुर्णं उचाच ॥
 ऊं ममाधतः सदा विष्णुः पूष्ठतश्चापि केशबः ॥ गोविन्दो
 इक्षिणे पात्रे वामे च मधूसूदनः ॥
 उपरिठात् वंकुष्ठो वाराहः पूर्विकीतले ॥
 अवान्तरदिगः पातु तासु सर्वासु माघवः ॥२॥
 गच्छतस्तिष्ठतो वापि जाप्रतः स्वपतोऽपि वा ॥
 नरसिंह कृताद् गुप्तिर्बासुदेवमयो हृदम् ॥३॥
 अव्यक्तं चंचास्य योनि वदन्ति व्यक्तं देहं दीघंमायुर्गतिश्च ॥
 चहिंवंक्रं चंद्रं सूर्यो च नेत्रे दिशः थोते द्राणमायुश्च वायुम् ॥४॥
 वाच वेदा हृदय वै नभद्रच पृथ्वी पादी तारका रोम कूपाः ॥
 अङ्गान्यपांङ्गान्यविवेषता च विद्या दुपस्थं हि तथा समृद्धम् ॥५॥
 तं वेव देवं शरणं प्रजानां पञ्चात्मकं सर्वं लोकं प्रतिष्ठम् ॥
 अं चरेण्यवरदं वरिष्ठं बहुमाणमीशं पुरुषं नमस्ते ॥६॥
 जाति पुरुषमीशानं पुरुहतं पुरुषकृतम् ॥
 चृतमेकाक्षरं बहुम व्यक्ता व्यक्तं सनातनम् ॥७॥
 महोभारत मास्थानं कुरुक्षेत्रं सरस्वतीम् ॥
 केशवं गां च गङ्गा च कौतूं यम्मा प्रसीदति ॥८॥

स्तोत्र-शक्तिः

ऊं भूः पुरुषाय पुरुषलक्ष्मय वासुदेवाय नमो नमः ॥ ऊं भूव्युत्तम् ॥
 ऊं स्वः पु० ॥ ऊं महः पु० ॥ ऊं जनः पु० ॥ ऊं तपः पु० ॥ ऊं स्त्र्यं
 पु० ॥ ऊं भूम्बवः स्वः पु० ॥ ऊं वासुदेवाय पु० ॥ ऊं संज्ञुर्णाय
 पु० ॥ ऊं प्रवृत्त्याय पु० ॥ ऊं अनिरुद्धाय पु० ॥ ऊं हयप्रीवाय पु० ॥
 ऊं भवोद्भवाय पु० ॥ ऊं केशवाय पु० ॥ ऊं नाराधाय पु० ॥
 ऊं माधवाय पु० ॥ ऊं गोविदाय पु० ॥ ऊं विष्णवे पु० ॥ ऊं भू-
 सूदनाय पु० ॥ ऊं वैकुण्ठाय पु० ॥ ऊं अच्युताय पु० ॥ ऊं त्रिविज-
 माय पु० ॥ ऊं वासनाय पु० ॥ ऊं श्री वराय पु० ॥ ऊं हृषीकेशाय
 पु० ॥ ऊं पश्यनामाय पु० ॥ ऊं मुकुन्दाय पु० ॥ ऊं दामोदराय पु० ॥
 ऊं सत्याय पु० ॥ ऊं ईशानाय पु० ॥ ऊं तत्पुरुषाय पु० ॥ ऊं पुरु-
 षोतमाय पु० ॥ ऊं श्री रामचंद्राय पु० ॥ ऊं श्री नस्तिहाय पु० ॥
 ऊं अनंताय पु० ॥ ऊं विश्वरूपाय पु० ॥ ऊं प्रणवेन्द्रुवंहन्तरविसहस्र-
 नेत्राय पु० ॥

य इदं गोपालहृदयमधीते स बहुमहत्याः पूतोभवति ॥
 मुरापानात् स्वर्णस्तेयात् बृह लीगभनात् पतिसंभवणात् असत्या-
 त् अगम्यागमनात् अपेयापानात् अभक्ष्यभक्षणाच्च पूतो भवति ॥
 अष्टाहमचारी बहुमत्त्वारी भवति ॥ भगवान्महाविष्णुरित्याह ॥
 इति श्री गोपालहृदयस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

मृतसङ्ख्योदयन कवचम्

श्री गणेशाय नमः ॥

एवमाराध्य गीरीजां देवं मृत्युञ्जयेऽवरम् ॥
 मृत सञ्जीवनं नाम कवचं प्रजपेत्सदा ॥१॥
 सारात्सारतरं पुण्यं गृह्णादग्न्यातरं शुभम् ॥
 महोदेवस्य कवचं मृत सञ्जीवनामकम् ॥२॥
 समाहितमना भूत्वा शृणुर्व कवचं शुभम् ॥
 श्रुत्वंतर्हित्य कवचं रहस्यं कृह सर्वदा ॥३॥
 वराभयकरो यज्ञा सर्वदेवनियेतिः ॥
 मृत्युञ्जयो महादेवः प्राच्यां मां पातु सर्वदा ॥४॥
 दधानः शशितमभयो त्रिमुखः यदभजः प्रभः ॥
 सदाशिवोऽग्निलयो मामानेष्यो पातु सर्वदा ॥५॥

स्तोत्र-शक्तिः

१०

१४५

अट्टाप्रजभुजोपेते दण्डाभयकरो विभृः ॥
 यमरूपी महादेवो दक्षिणस्यां सदाऽवतु ॥६॥
 खडगाभयकरो धीरो रक्षोगणनिवेदितः ॥
 रक्षोदपो महेशो मां नवर्त्त्या सर्वंदाऽवतु ॥७॥
 पाण्डाभयभुजः सर्वंरत्नाकर निवेदितः ॥
 वरुणास्त्वा महादेवः पश्चिमे मां सदाऽवतु ॥८॥
 मदाभयकरः प्राणनाशकः सर्वदा नति ॥
 वायव्या मारुतात्मा मां शंकरः पातु सर्वदा ॥९॥
 खडगाभयकरस्यो मां नाथकः परमश्वरः ॥
 सर्वात्मात्मर दिग्भागे पातु मां शंकरः प्रभुः ॥१०॥
 शालाभयकरः सर्वदिवानामचिनायकः ॥
 ईशानात्मा तथेशान्या पातु मां परमेश्वरः ॥११॥
 उद्धर्वनामे द्वाहुलपो विद्वात्माऽधः सदाऽवतु ॥
 शिरे मे शंकरः पातु ललाट चंद्रशेखरः ॥१२॥
 धूमध्यं सर्वलोकेशालिनंश्रो लोचनेऽवतु ॥
 धूमध्यं गिरिशः पातु कणों पातु महेश्वरः ॥१३॥
 नातिकरो मे महादेव जोष्ठोपातु वृषभवः ॥
 गिरिश मे दक्षिणमूर्तिदन्तामे गिरिशोऽवतु ॥१४॥
 मृत्युञ्जयो मुखं पातु कणं मे नागभयमः ॥
 फिनाकी मलकरी पातु त्रिशूली हृदयं नमः ॥१५॥
 पञ्चवक्त्रः स्तनौ पातु उदरं जगदीश्वरः ॥
 नाभि पातु विश्वाकः पाश्वौ ने पार्वतिपतिः ॥१६॥
 कटिद्वयं गिरिशो मे पृथं से प्रथमाधिपः ॥
 गृह्यं महेश्वरः पातु ममोर पातु भेरवः ॥१७॥
 जानुनो मे जगडत्त जघे मे जगदम्बिका ॥
 पादो ने सततं पातु लोक बन्दः सदाशिवः ॥१८॥
 गिरिशः पातु मे भार्या भवः पातु सुतान्मम ॥
 मृत्युञ्जयो ममाध्यं चित्तं ने गणनायकः ॥१९॥
 सर्वाङ्गे ने सदापातु काल कालः सदाशिवः ॥
 एतते कवचं पुर्णं देवतानां च दुर्लभम् ॥२०॥
 मृतसञ्जीवनं नामा महादेवेन कोत्तितम् ॥
 सहस्रा वर्तनं चास्य पुरुद्वरणमीरितम् ॥२१॥

स्तोत्र-शिति

यः पठेत्वा गुप्तान्नित्यं श्रावयेत्सु-सप्ताहितः ॥
 स काल मृत्यु निर्जित्य सदायुधं समझनुते ॥२२॥
 हस्तेन या पदा स्पृष्ट्या मृते सञ्जीवयत्यसी ॥
 आश्वयो व्याघ्रयस्तस्य न भवन्ति कवाचन ॥२३॥
 काल मृत्यु मनि पाप्तमसी जयति सर्वदा ॥
 अग्निमादि गणेश्वर्यं लभते मानवोत्तमः ॥२४॥
 युद्धारम्भे पौष्टिवेदमष्टाविशितावार कम ॥
 युद्धं मध्ये स्तितः शत्रुः शृद्धः सर्वसन्दयते ॥२५॥
 न वृहादीनि चात्माणिं क्षयं कुर्वन्ति तस्य वे ॥
 विजयं लभते देव युद्धमध्यर्यपिसर्वदा ॥२६॥
 प्रातरकृत्याय सततं य पठेत्वर्वाचं शुभम् ॥
 वज्राय लभते सौरयमिह लोक परत्र च ॥२७॥
 सर्वद्याधि विनिर्मद्यतः सर्वरोग विद्यन्ति ॥
 वज्रामरणो भव्या सदा शोङ्कावार्षिकः ॥२८॥
 विचरत्याखिलाल्लोकान्प्राप्य भोगांश्च लंभान् ॥
 वस्ताविदं महापाण्यं कवचं समुदाहृतम् ॥२९॥
 मृतसञ्जीवनं नामा देवतंरपि दुर्लभम् ॥ ॥२०॥
 इति ओ वसिष्ठप्रणीतं मृतसञ्जीवनस्तात्रं सम्पूर्णम्

बजरंग वाण

दोहा—निश्चय प्रेम प्रतीति ते विनय करे सनमान ।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करे हनुमान ॥

चौपाई

जैय हनुमं संतहितकारी, मुनि लोजं प्रभु अरज हमारी ।
 जन के काज विलङ्घ न होजे, आतुर दीर महामुख दीजे ।
 जैसे कूदि सिन्धु वहि पारा, सुरसा बदन पंठि बिस्तारा ।
 आगे जाह लकिनो रोका, मारेहृ लात गई सुर लोका ।
 जाय दिनीदण को सुखदीन्हा, सोता निरादि परमपद लोन्हा ।
 दाग उजारि सिन्धु मह बोरा, जति आतुर यमकातर तोचा ।
 अस्य कुमार को मारि संहारा, लूम लपेट लंक को जारा ।
 लाह समान लंक जरि गई, जय जय धूति सुरपुर महं गई ।

स्तोत्र-शिति

१४७

अब विलंब केहि कारन स्वामी, कृपा करहु उर अन्तरयामी ।
 जय जय लक्ष्मण प्राण के दाता, आत्मर होइ दुख करहु निपाता ।
 जय गिरधर जय जय सुख सागर, सुर समूह समरथ भट्टनागर ।
 ऊँ हनु हनु हनु हनु मंत हठोले, बैरिहि मारू बज्र की काले ।
 गदा बज्र लै बैरिहि मारो, महाराज प्रभु दास उबारो ।
 उंकार हुंकार बहावीर धावो, बज्रगदा हन विलम्ब न लावो ।
 ऊँ हों हों हों हों हनु मंत कपीशा, ऊँ हुं हुं हुं हनु अरि लीशा ।
 सत्य होहु हरि शपथ पायके, रामदूत घरू मारू जायके ।
 जय जय जय हनुमन्त अगाधा, दुख पावत जन केहि अपराधा ।
 पूजा जप तप नेम अचारा, नहि जानत हों दास तुम्हारा ।
 बन उपवन मग गिरिगृह माहों, तुम्हरे बल हम डरपत नाहों ।
 पाँय परों कर जोरि मनावौं, यहि अवसर अब केहि गोहरावौं ।
 जय अंजनि कुमार बलवन्ता, शंकर सुवन बीर हनुमंता ।
 बदन कराल काल कुल घालक, राम सहाय दास प्रतिपालक ।
 भूत प्रेत पिशाच निसाचर, अग्नि बैताल काम मारीमर ।
 इन्हे मारू तोहि शपथ राम की, राखु नाथ मर जाद नाम की ।
 जनक मुता हरिदास कहावो, ताकि शपथ विलंब न लावो ।
 जय जय जय धुन होत अकाशा, सुमिरत होत दुसह दुखनाशा ।
 शरण शरण कर जोरि मनावौं, यहि अवसर अब केहि गोहरावौं ।
 उठु उठु तोहि राम दोहाई, पाँय परों कर जोरि मनाई ।
 ऊँ चं चं चं चं चं चपल चलंता, ऊँ हनु हनु हनु हनु हनुमन्ता ।
 ओं हं हं हांक देत कपि चंचल, ओं सं सं सहनि पराने खलदल ।
 अपने जन को तुरत उबारो, सुमिरत होय आनन्द हमारो ।
 यहि बजरंग बाण जेहि मारे, ताहि कहो फिरि कौन उबारे ।
 पाठ करै बजरंग-बाण की, हनुमत रक्षा करै प्राण की ।
 यहि बजरंग बाण जो जापै, तेहिते भूत-प्रेत सब कापै ।
 घूप देय अह जपै हमेशा, ताके तन नहि रहे कलेशा ।

दोहा

प्रेम प्रतीति धरि कपि भज, सदा धरे उर ध्यान ।
 तेहिके कारज सकल शुभ, सिद्ध करै हनुमान ॥

समाप्त



COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By

Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server

स्तोत्र-शक्ति

लेखक—डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली

ग्रंक-विद्या, हस्त-ऐवा, सामुद्रिक विद्या तथा ज्योतिष के सम्पूर्ण क्षेत्र में भारतीय विद्वान् डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली का नाम जितने गर्व से लिया जाता है, उतने ही गर्व से तंत्र-मंत्र और स्तोत्र शक्तियों में भी उन्हें महारत हासिल है।

डॉ० श्रीमाली ने ज्योतिष के विभिन्न विषयों पर अब तक लगभग चालीस पुस्तकों की रचना की है और सभी पुस्तकों पाठकों में काफी चर्चा का विषय रही हैं।

स्तोत्र-शक्ति उनकी अत्यन्त नवीन पुस्तक है जिसे पाठकों को सौंपते हुये हमें गर्व का अनुभव हो रहा है।